تذکرۃ الابرار



مصنف

حضرت مولانا حاجی سید شاہ محمد ظفر سجّاد ابوالعلائی ، داناپوری رحمۃ اللہ علیہ
سجادہ نشین: خانقاہ سجادیہ ابولعلائیہ، شاہ ٹولی، داناپور، پٹنہ

तज़किरत–उल–अबरार



लेखक

हज़रत मौलाना हाजी सय्यद शाह मो० जफ़र सज्जाद अबुल ओलाई, दानापुरी र०ह०
सज्जादा नशीन : ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुल ओलाईया, शाह टोली, दानापुर, पटना



समा ख़ाना, ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुलउलाईया



ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुलउलाइया, शाह टोली, दानापुर



दरगाह हज़रत मख़दूम शाह सज्जाद दानापुरी र०ह०
(पुरानी इमारत), शाहटोली, दानापुर



दरगाह हज़रत मख़दूम शाह सज्जाद दानापुरी र०ह०
(जदीद तामीर), शाह टोली, दानापुर

अल्लाहो अकबर

"रौशनी के मीनार"

यह किताब "तज़किरत-उल-अबरार" 76 साल पहले मेरे वालिद माजिद पीर व मुर्शिद हज़रत मौलाना सय्यद शाह जफ़र सज्जाद अबुल उलाई दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत शाह इदरीस चिश्ती रह० के मुरीद व ख़लीफ़ा हाजी शेख़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार रह० साकिन कुम्हिया इसलाम नगर, डाकख़ाना जोकी हाट, हाल ज़िला अररिया की फ़रमाइश पर 1359 हिजरी मुताबिक़ 1938 इस्वी में लिखी थी जो उसी साल में सलीमी बरक़ी प्रेस, इलाहाबाद से छप कर शाया हुई थी। हज़रत शाह इदरीस चिश्ती रह० मेरे छड़ दादा हज़रत मख़दूम शाह सज्जाद दानापुरी रह० के मुरीद व ख़लीफ़ा थे और उनका मज़ार मुबारक उसी बस्ती कुम्हिया इसलाम नगर में वाका है। उनके शानदार कारनामे और ख़िदमते दीन के हालात इस किताब को पढ़ने के बाद मालूम किया जा सकता है। यह भी ज़ाहिर होगा के उनको अपने पीर रौशन ज़मीर से कितना गहरा इश्क़ था और कैसी सच्ची और पक्की निस्बत थी जो एक मिसाल है।

इस किताब "तज़किरत-उल-अबरार" को लिखे और छपे हुए 76 साल का तवील ज़माना गुज़र गया है। मुरीदीन मुतवस्सलीन और अक़ीदत मन्दो की तरफ़ से बार-बार उसका हिन्दी में तरजुमा करके शाया करने के लिये ख़ान्काह सज्जादिया अबुल उलाइया, दानापुर से गुज़ारिश की जा रही थी इसलिये अल्लाह के करम से बुजुरगाने दीन के अज़ीम कारनामों और ख़िदमते ख़ल्क़ के जज़बे को ख़ास तौर से नइ नसल के लिये इस ख़ैर काम का आग़ाज़ कर दिया गया ! बुज़ुरगाने दीन के किरदार व अमल और उनकी रौशन ज़िन्दगी ख़ासकर नई नसल के लिए रौशनी के मीनार की हैसियत रखते है।

मेरे मंझले भतीजे डाक्टर सय्यद शाह मुहम्मद अबुताहिर अबुल उलाई दानापुरी ने अपनी मेहनत और लगन के साथ इस ख़ैर काम को अन्जाम देते हुए इस किताब का हिन्दी में तरजुमा किया और अब यह छपने के मरहले में हो रही है! इसके लिये यह बेहद मुबारक बाद के लायक़ है।

मेरे पीर व मुर्शिद वालिद माजिद जिस जमाना में इस किताब को लिख रहे थे उनका क़्याम हज़रत शाह इदरीस चिश्ती की ख़ान्काह चिश्तिया कुम्हिया बस्ती हाल जिला आररिया में था जहाँ उन्होंने कई ख़ाब देखा था और मुझसे तज़किरा फ़रमाया करते थे। उन्में कुछ मुझे आज भी याद है। इस मुबारक यादगार को मैं लिखना चाहता हूँ। उन्होंने हज़रत मालिक दीनार रह० का दीदार किया था। ख़ातून जन्नत हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रजि० की ज़ियारत से फ़ैजयाब हुए थे। वह तशरीफ़ लाई हैं और वालिद माजिद ने सलाम अर्ज किया और जवाब नसीब हुआ उसके बाद वालिद माजिद अर्ज़ कर रहे हैं कि "अपने बाबा जान से मेरी शफाअत करादिजिये" तीसरा ख़ाब यह था के वोह हज के लिये तशरीफ ले गये है और हज के तमाम अरकान अदा करने के बाद मदीना मनव्वरा रौज़ये रसूल पर हाज़िर है! अल्लाह के फ़ज़्ल से जब 1963 इसवी में वालिद माजिद हज के लिये तशरीफ़ ले गये तो वापसी के बाद ब्यान फ़रमाते थे कि "मेरे सामने ख़ाब का पूरा माजरा उसी तरह पेश आया!" इस नाचीज ख़ालिद इमाम की वालिदा मरहूमा बिन्त मीर सय्यद इरादत हुसैन रह० सय्यदह बीबी मैमूना ख़ातून महल्लाह, सय्यदाना फ़लवारी शरीफ़ ज़िला पटना की क़दीमी बाशिन्दा थीं जो पीराने पीर दस्तगीर हज़रत शेख़ महबूब सुबहानी अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हों की औलाद में थीं वोह मेरे पीर व मुर्शिद वालिद माजिद के दस्त मुबारक पर सिलसिला क़ादरीया में बैयत थीं यह भी अल्लाह का ही करम है। मेरा मासूम छोटा भाई

महकुमुल्लाह का विसाल भी उसी कुम्हिया बस्ती में हुआ और हज़रत शाह इदरीस चिश्ती रह० के मकबरा के सिरहाने उसकी मज़ार है।

मेरी छड़ दादी सय्यदह बीबी बसीरुन निसा ज़ौजह हज़रत मख़दूम शाह सज्जाद दानापुरी रह० हज़रत मीर अशरफ़ अली क़ादरी रह० की औलाद में थीं जो क़स्बा रहुइ के सज्जादह नशीन थे और उनका सिलसिला नसब हज़रत सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि० अ० से मिलता है जैसा कि जज़बात अकबर मतबुआ 1333 हिजरी के सफ़ह 4 पर तहरीर है।

मेरे छड़ दादा के बड़े भाई हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद क़ासिम अबुल उलाई दानापुरी रह० का विसाल 1281 हिजरी में ईद की 17 तारीख़ को हुआ और वसियत के मुताबिक़ मज़ार मनेर शरीफ़ में मख़दूम यहया मनेरी के पायताने में है।

मेरी पर दादी सय्यदह बीबी नईमा जो हज़रत मौलाना सय्यद शाह विलायत हुसैन दिलावरी, अज़ीमाबाद पटना की साहबज़ादी और हज़रत शाह अकबर दानापुरी रह० की अहलिया थीं। मेरे वालिद माजिद रह० फरमाते थे के वोह रमज़ान के रोज़ो के इलावा 27 रजब को पाबन्दी से रोज़ा रखा करती थीं। उनका विसाल भी ज़िन्दगी के आख़िरी उम्र की एक मुबारक यादगार है। एक रात इसी रोज़ा की नीयत किया। ख़ाब मे देखा के ख़ातून जन्नत हज़रत बीबी फ़ातिमा रजि० तशरीफ़ लाई और फ़रमा रहिं है कि "बेटी मैं तुम्को लेने आई हूँ।" सुबह में रात का ख़ाब ब्यान किया। रजब की 27 तारीख़ । कुछ ही देर बाद हालत बिगड़ने लगी और असर मग़्रिब के दरमयान उनका विसाल हो गया। रोजा खोल देने का कहा गया लेकिन सिर्फ़ यही जवाब फ़रमाया "रोज़ा वहाँ अफ्तार करूँगी।"

मेरे पर दादा हज़रत शाह अकबर दानापुरी का विसाल 14 रजब 1327 हिजरी मुताबिक़ 1909 इस्वी में हुआ। सभी बुज़ुरगों के हालात इस किताब "तजकिरत-उल-अबरार" से मालूम होंगे लेकिन मैं यहाँ पर एक मुबारक वाक़या नई नसल के इल्मी और अदबी मालुमात के लिये लिखना चाहता हूँ जिसका रिश्ता मुहब्बत, अक़ीदत और रुहानी निस्बत व अज़मत से जुड़ा हुआ है। सूबा बिहार की मशहूर हस्ती सय्यद हाफ़िज़ फ़ज़ल हक़ आजाद अज़ीमाबादी का विसाल 1361 हिजरी मुताबिक 1942 इस्वी है। यह हाफ़िज़ कुरान और हाजी के साथ-साथ मशहूर शायर व अदीब भी थे। यह बुर्ज़ुग हज़रत अल्लामा शाह अकबर दानापुरी के हम ज़माना थे! उन्हें हज़रत अल्लामा सय्यद शाह अकबर दानापुरी रह० अ० से रुहानी, क़ल्बी मुहब्बत और अक़ीदत थी! 1327 हिजरी मुताबिक़ 1909 ईस्वी में हज़रत अल्लामा शाह अकबर दानापुरी का विसाल हुआ और उसी साल में हाफ़िज़ फ़ज़ल हक़ आजाद अज़ीमाबादी रह० ने एक मरसीया "रख़्ते विसाल" के नाम से लिखकर हज़रत अल्लामा सय्यद शाह अकबर दानापुरी रह० की यादगार में छपवाया जो तारीखी नाम से 1327 हिजरी आता है। मैं चाहता हूँ के उनके लिखे और छपे हुए उस पूरे मज़मून और मरसीया अश्आर को हू-बहू यादगार के तौर पर नई नसल की मालुमात के लिये लिखुँ-ध्यान से पढ़ये और मुहब्बत, निस्बत और अक़ीदत के रिश्तो पर निगाह डालें।

"फ़ज़लहक आजाद और मरसीया रख़्ते विसाल"

"हज़रत आज़ाद का यह रख़्ते विसाल दर असल मशहूर सूफ़ी बुर्ज़ुग हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद अकबर अबुल उलाई दानापुरी का मरसीया है जिसकी इशाअत उसी साल हुई है जिस साल उन्होंने वफ़ात पाई।"

लिखते हैं :–

रंग गुलज़ार जहाँ ख़ुद सफ़री है गोया,
ज़िन्दगी मौत की एक बद ख़बरी है गोया,
रहमतुल्लाह अलैह की सदा क्या उट्ठी,
बरकत क्या कोई दुनिया से ख़ुदाया उट्ठी।
एक तरफ़ नामए आमाल का ढ़ड़का दिलको,
एक तरफ़ अफ़ु इलाही का भरोसा दिल को।

लिखते हैं कि मौत, मोमिन के लिये राहते जान है और रब से मिलने की वजह ।

हज़रत अल्लामा शाह अकबर दानापुरी मेहमाने हरम हैं :–

अर्श पर धूम है सज्जादह नशीन आता है,
गुल है फ़िरदौस में फ़िरदौस मकीन आता है।
मेहमान हरम ख़ालिक़ अकबर, अकबर,
बुल उला की ज़बाँ पर अकबर अकबर
अकबरआबाद से ता खान्क़ाहे दानापुर,
ख़ाक उड़ती है मगर ख़ाक से छन्ते हैं नून।

मरसीया के 11वीं और 12वीं बन्द में फ़ज़्ल हक़ आज़ाद रह० ने बुज़ुरगों की तासीर सुहबत और उनसे हाजत पूरी के अक़ीदा का इज़्हार किया है के उनके आस्ताना पर सलातीन के सर झुक्ते है जिनकी नज़रों में लाल व मोती हेच हैं । यह बीमार दिल की शिफ़ा, दर्द दिल की दवा और बाग़ आलम में सूरते सबा है और उनकी फ़ना की सूरत में बक़ा हैं।

"ज़ामिने ख़ल्क़ है मिफ़ताह मुहिम्मात है यह,
हक़ के प्यारे है बर आरन्दए हाजात है यह।
तलख़ियाँ मौत की शीरीं है इन्हे दमे मर्ग,
इनको जीने की ख़ुशियाँ है अस्ला ना ग़ामे मर्ग।"

हज़रत अल्लामा शाह अकबर दानापुर सालिके मिन्हाज तरीक़त, शमा, शबिस्ताने हिदायत, मुर्शिद बरहक़, कशाफ़ हक़ीक़त और साक़ी खुम ख़ानए वहदत है। मरसीया के शेर फ़िर लिखते है–

हैफ़ सद हैफ़ के ख़ाली हुई सुहबत तुझसे,
अकबरआवाद था एक क़ितए जन्न्त तुझसे।
क्यों ना तारीक हो दुनिया के वोह रहबर ना रहा,
जौहरी जिसके शनासा थे वोह गौहर ना रहा।
क़दर दान सुख़न उस्ताद सुख़न्वर ना रहा,
जिस्के मुश्ताक़ थे सब अस्ग़रो अकबर ना रहा।
ना रहा मुनिमे जाँ आह वोह ग़मख़ार अफ़सोस,
क़ाफ़ला छोड़ गया क़ाफ़ला सालार अफ्सोस।
दोस्त से दोस्त बिरादर से बिरादर छूटे,
इन्तहा यह के सहाबा से पयम्बर छूटे।

नई नसल के लिये यह मालूमात भी हासिल करना ज़रूरी मालूम होता है कि हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० की किताब "इदराक" जो 126 साल पहले 1309 हिजरी में शौकत शाहजहानी प्रेस आगरा में छप कर शाया हुई थी उसके सफ़ह 4 पर एक अहम तारीख़ी वाक़या लिखा हुआ है जो यह है–

"मेरे अजदाद के एक बुर्ज़ुग मौलाना शाह अमीनुल्लाह के जद्देआला आलमगीर बादशाह के पीर थे। जब ख़ान्दान तैमूरिया से यहाँ का सूबा बिगड़ा तो उसके एक सरदार बनाम शम्शेर ख़ाँ ने हज़रत को इस जुर्म में शहीद किया के उनके दादा आलमगीर बादशाह के पीर थे। आप जानमाज़ पर शहीद हुए। आपका मज़ार मुबारक नौआबाद ख़ुर्द ज़िला पटना में है।"

मेरा दिल चाहता है के अल्लाह के फ़ज़्ल व करम और बुज़ुरगाने दीन के फ़ैज़ान से इस नाचीज़ को जो ख़ैरात अता हुआ है उसका हिस्सा नई नसल की दीनी, अदबी, इल्मी और तीरीख़ी मालूमात के लिये तक़्सीम किया जाय।

अल्लाह इसे मक्बूल व मंज़ूर फ़रमाये–

इलाहाबाद कोर्ट में एक जज समीउल्लह ख़ाँ बहादुर थे जो बहुत मुत्तकी परहेज़गार और दीनदार आदमी थे वोह मेरे छड़दादा और पर दादा से बहुत मुहब्बत और अक़ीदत रखते थे। उन्होंने 1893 इस्वी में अपने बेटे हमीदुल्लाह की शादी देहली में अन्जाम दिया था जिसमें मुल्क भर से बड़ी-बड़ी नामवर हस्तियाँ शरीक थी। उन्होंने हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० को भी दावत नामा भेजा था। लेहाज़ा 2 रजब 1311 हिजरी मुताबिक 1893 इस्वी को दानापुर से वोह देहली के लिये रवाना हुए थे । जज साहब ने बहुत अक़ीदत से शान्दार इस्तेक़्बाल किया और एक बड़ी कोठी में ठहराया और दो ख़ादिम 24 घन्टा उनकी ख़िदमत में रख दिया। 22 दिन हज़रत शाह अकबर दानापुरी रह० का क़्याम देहली में रहा। उसी दौरान देहली में तमाम तारीख़ी और मज़हबी मक़ामात की ज़ियारत किया और अपना सफ़र नामा लिखते रहे जो पढ़ने के लायक़ है। 22 दिन के बाद हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० आगरा चले आये थे।

इस सफ़र नामा को उनके एक आशिक़ मुरीद ने छपवा दिया और उसका नाम "सैर-ए-देहली" रखा। इस अन्मोल किताब को छपे हुए 124 साल का ज़माना गुज़रा। अब यह किताब नायाब है। किसे पता था के 124 साल बाद इस दरवेश कामिल की किताब फिर छपेगी।

हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० की यह किताब "सैर-ए-देहली" 2011 इस्वी में देहली यूनीवरसिटी ने दोबारा छपवाकर शाया किया। इसी किताब के सफ़हा 7 से 8 पर देहली यूनिवरसिटी, देहली के उर्दू शोबा के सदर जनाब प्रोफ़ेसर इरतज़ा करीम ने अपने जिन नेक ख्यालात का इजहार किया है मैं उसी को नई नसल की मालुमात के लिये लिख रहा हूँ–

शोबए उर्दू देहली यूनीवरसिटी, देहली के क़ायम हुए 50 साल पूरा हुआ। इसकी गोलडेन जुबली मनाने का शान्दार एहतमाम किया गया। यह 27 अप्रील से 29 अप्रील 2010 की मनाई गई तक़रीबात का मुख़्तसर ज़िक्र है। पेशे नज़र किताब "सैर-ए-देहली" की इशाअत भी उसी सिलसिले की एक सुनहरी कड़ी है ! इसके मुसन्निफ़ हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद अकबर नक़्शबन्दी अबुलउलाई दानापुरी एक सूफ़ी साफ़ी बुर्ज़ुग अदीब व शायर हैं जिन्होंने 1311 हिजरी मुताबिक़ 1893 इस्वी में दिल्ली की एक अहम तक़रीब शादी में शिरकत फ़रमाई और 22 दिन यहाँ मुक़ीम रहकर शहर देहली को घूम फ़िरकर बहर ज़ावियए नज़र देखा। शाह साहब ने अपने मुशाहदात व तजरेबात देहली को "सैर-ए-देहली" के नाम से किताबी शकल देदी। उनके एक मुतक़िद मुहम्मद एनायत ख़ाँ, मालिक छपाख़ाना रियाज़ुल हिन्द, आगरा ने उसी साल 1311 हिजरी में उसे छापा और शाया किया। सवा सौ साल का ज़माना गुज़र गया और अब यह किताब गोया ना पैद है। ख़ुदा का शुक्र है के शोबए उर्दू देहली यूनीवरसिटी के किताबों के ख़ज़ाना में उसकी एक जिल्द

महफ़ूज़ थी और इस गोलडेन जुबली के मुबारक मौक़ा पर उसकी छपाई और दूसरी इशाअत मेरे हिस्सए सआदत में आई। मुझे उम्मीद ही नहीं यक़ीन है के इल्मी व अदबी हल्क़ों में "सैर-ए-देहली" की नई इशाअत तारीख़ी नज़रों से देखी जायगी। पहले की गुज़री हुई देहली को जानने और समझने में यह किताब नादिर व बेदाग़ मालुमात पेश करती है।"

हज़रत हाजी शाह अबदुल्लाह अकबरी रहमत उल्लाह अलैह हमारे पर दादा हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी रहमत उल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। हमारे पर दादा ने इनको इलाहबाद में गद्दि पर बैठाया! 1327 हिजरी में हमारे पर दादा हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी क़ुदुस सिंरहू का विसाल हुआ। उनके विसाल के बाद हज़रत हाजी शाह अबदुल्लाह अकबरी रहमत उल्लाह अलैह (इलाहाबाद) ने अपने पीर कि निस्बत से इस का नाम "ख़ानक़ाह अकबरी" रखा। वह वहाँ के पहले सज्जादह नशीन थे। उनके विसाल के बाद हमारे दादा हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानापुरी क़ुदुस सिंरहू ने अपने वालिद के मुरीद हज़रत सय्यद शाह अबदुल हलीम अकबरी हिलसवी को ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुल उलाइया दानापुर में तलब फ़रमाया और ख़िलाफत अता करके ख़ानक़ाह अकबरी इलाहाबाद में जाँनशीन मुक़र्रर कर दिया। जिन्होंने वहाँ की ख़ानक़ाही रिवायात को बहुत तरक़्क़ि अता किया। इसका ज़िक्र मेरे वालिद पीर व मुर्शिद ने अपनी किताब तज़किरत-उल-अबरार में किया है।

मेरे पीर व मुर्शिद वालिद माजिद रह० ने "तज़किरत-उल-अबरार" के इलावा 45 साल पहले इमामिया मिशन, लख़नउ की फ़रमाईश पर एक किताब आईनए अली और तीन रिसाले बनाम पाक नसल, आलेअतहार और हुकूमत बनु उमैया की सफ्फाकियाँ भी

लिखा था जिन्हें इमामिया मिशन, लख़नउ ने छपवाकर शाया किया था। इस नाचीज़ के मुरीद होने का वाक़या भी अजीब है। 1957 इस्वी में जो ख़ान्क़ाह चिश्तिया उन्होंने क़ायम किया था वहाँ 1960 इस्वी में हज़रत ख़ाजा अजमेरी रह० का चौथा उर्स मुबारक हुआ था उसी मौक़ा पर उनके हुक्म पर सिलसिला नक्श्बन्दिया अबुल उलाइया में उनके दस्त मुबारक पर हुआ था और वालिद रह० ने मुझे तमाम सिलसिलों की इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी मुशर्रफ फ़रमाया था। बिशनपुर, थाना बहादुर गंज, जिला किशन गंज में जो ख़ान्काह मेरे वालिद रह० ने कायम किया था! जिसके लिये मेरे वालिद रह० के मुरीद ख़ास शेख इलताफ़ हुसैन मरहूम महादीबदिघी ने ज़मीन वक़्फ किया था। अब उसके मौजूदा सज्जादानशीन व मुतवल्ली मेरे छोटे भतीजे अज़ीज़म हाजी सय्यद शाह सैफुलाह अबुल उलाई है जिन्होंने मदरसा फ़ैजाने ज़फ़र का क़याम भी अमल में ला दिया है। इन रूहानी रिवायात को हुस्न ख़ूबी से चला रहे है। अल्लाह उनको इस्तक़ामत और सेहत व सलामती अता करे। हज़रत ख़ाजा ग़रीब नवाज़ रह० का सालाना उर्स धूम धाम से 57 साल से हो रहा है। उस ख़ान्क़ाह की सरप्रस्ती का फ़रीज़ा यह नाचीज़ अन्जाम दे रहा है। अल्लाह मक़बूल व मंज़ूर फ़रमाए। हज़रत शाह इदरीस चिश्ती रह० के विसाल के बाद मेरे वालिद रह० के तबलीग़ दीन और ख़िदमते ख़ल्क़ की ता हयात रौशन ज़िन्दगी का नमूना है।

मैने अपने दादा हज़रत हाजी शाह मुहम्मद मुहसिन अबुल उलाई दानापुरी रह० अ०, अपने वालिद माजिद रह०, अपने बड़े भाई हज़रत सूफ़ी सय्यद शाद मुहम्मद महफ़ूजुल्लाह अबुल उलाई दानापुरी रह० और बड़े भतीजे सय्यद शाह अबुमुहम्मद अबुल उलाई दानापुरी रह० सज्जादह नशीन ख़ान्काह सज्जादियह अबुल उलाईयह, दानापुर की रौशन ज़िन्दगी और ख़िदमात के बारे में अपनी किताब

"तारीख़ी पसेमन्ज़र" में लिखा था जो रजब 1425 हिजरी मुताबिक 2004 में छपकर शाया हुई थी इसलिए यहाँ पर उनका तज़किरा नहीं कर रहा हूँ।

अब आख़िर में "तज़किरत-उल-अबरार" किताब जिसका हिन्दी अनुवाद आप हज़रात पढ़ कर दानापुर की इस ख़ान्काह और मोड़ातालाब बिहार शरीफ़ की क़दीमी निस्बत का ख़्याल करेंगे मगर उसका भी जवाब उसी किताब के पढ़ने से मिल सकता है। इस कड़ी को जोड़ते हुए सबसे पहले मैं अपने पर दादा हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० का तारीख़ी शेर लिखता हूँ जो उनके दीवान जज़्बात अकबर मतबुआ 1333 हिजरी में लिखा हुआ है। शेर पढ़िये और क़दीमी निस्बत ख़ान्क़ाह की ग़ौर कीजिये–

"जो दानापुर एक बस्ती है मशहूर
वो हो ईमान के अनवार से पुरनूर
यहीं है ख़ान्क़ाहे बुल उलाई
बड़ी दौलत है इस बस्ती ने पाई।"

हज़रत शरफ़ुद्दीन बु अली क़लन्दर रह० पानी पत करनाल, देहली क़लन्दरिया चिश्तिया सिलसिला के मशहूर मजज़ूब गुज़रे हैं जिन्का ज़माना 652 से 724 हिजरी का है और मख़्दुमुल मुल्क हज़रत शरफ़ुद्दीन बिहारी रह० का ज़माना 661 से 782 हिजरी का है। इस तरह क़रीब 700 साल का ज़माना गुज़र चुका है और उसी दौर में एक दरवेश कामिल हस्ती अरब मुल्क के मश्हद शहर से मुल्तान होते हुए अपने रुहानी क़ाफ़ले के साथ पानी पत करनाल देहली बुअली क़लन्दर की ख़िदमत में पहुँचे जिनका नाम हज़रत लतीफ़ुद्दीन बन्दगी रह० अ० था। वही बुर्ज़ुग हज़रत बुअली क़लन्दर से सिलसिला क़लन्दरिया चिश्चिया में मुरीद होकर ख़लीफ़ा व मजाज़

हुए और बाद में मख़्दूम लतीफ़ुद्दीन के नाम से मशहूर हुए और इजाज़त के बाद हज़रत मख़्दूमुल मुल्क की ख़िदमत में बिहार शरीफ़ तशरीफ़ लाए और कुछ अरसा ख़िदमत में रहे फ़िर उनके हुक्म पर उत्तर जानिब मुक़ीम हुए जो मोड़ा तालाब के नाम से मशहूर है। वहाँ ख़ान्काह और मस्जिद वग़ैरह का क़्याम अमल में आया। उस बस्ती में कई औलिया अल्लाह के मज़ारात हैं 4-5 सौ साल के बाद वहाँ की इमारत शिकस्ता होती गई और आख़िरी यादगार बुर्ज़ुग हज़रत शाह तुराबुल हक़ मोड़वी की शादी दानापुर हज़रत सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन दानापुर रह० की साहबज़ादी बीबी हफीज़ुन निसा रह० से हो गयी और हज़रत शाह तुराबुल हक़ रह० मोड़ातालाब, बिहार शरीफ़ से मुस्तक़िल शाहटोली, दानापुर सुकूनज पज़ीर हो गये। उनका विसाल 19 मुहर्रम 1272 हिजरी में हो गया। मज़ार मुबारक शाह टोली, दानापुर में है। इस तरह दानापुर की ख़ान्काह सज्जादियह अबुल उलाईयह को क़रीब 700 साल की क़दीमी ख़ान्काह का शरफ़ हासिल हुआ और तमाम क़दीमी रिवायात जारी व सारी होते चले आ रहे हैं। बुज़ुगाने दीन के फ़ैजान जारी हैं। अल्लाह तमाम मुरीदीन, मुतवस्सलीन, अक़ीदतमन्दो और ज़ायरीनों को आबाद व शादाब और दोनो जहान में कामियाब रखे आमीन।

इस कदीमी ख़ान्काह के मौजूदह 23वे सज्जादह नशीन अज़ीज़ुल क़दर हाजी सय्यद शाह सैफ़ुल्लाह अबुल उलाई हैं जो इसे चार चाँद लगाने में मसरुफकार हैं।

तारीख़ :	तालिबे दुआ
20 रबीउल आख़िर	**ख़ालिद इमाम अबुल उलाई दानापुरी**
1435 हिजरी	सरप्रस्त
मुताबिक़	ख़ान्काह सज्जादियह अबुल उलाईयह
21 फ़रवरी 2014 ईस्वी	शाह टोली, दानापुर, पटना (बिहार)

तज़किरत–उल–अबरार

लेखक :
हज़रत मौलाना हाजी सय्यद शाह मुहम्मद ज़फ़र सज्जाद अबुल उलाई दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह! सज्जादह नशीन ख़ान्काह सज्जादिया अबुल उलाईया शाह टोली, दानापुर, पटना, बिहार

छपने का साल : 1359 हिजरी
1938 इस्वी

हिन्दी अनुवाद : 1435 हिजरी
2014 इस्वी

छपने का साल : 1359 हिजरी
1938 इस्वी

लेखक :
हज़रत मौलाना हाजी सय्यद शाह मुहम्मद ज़फ़र सज्जाद अबुल उलाई दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह! सज्जादह नशीन ख़ान्काह सज्जादिया अबुल उलाईया शाह टोली, दानापुर, पटना, बिहार

टाइप सेटिंग एवं मुद्रक :
ऐप्पल सॉफ्ट
सुभाष मार्केट, लंगरटोली, पटना-800004

मूल्य : ₹ 50/-

मिलने का पता :

1. **ख़ान्क़ाह चिश्तिया ज़फ़रिया :** बिशनपूर, किशनगंज, बिहार
2. **बरकाती बुक डिपो :** A/35 इस्लामिया मार्केट, नौमेहला, बरेली शरीफ़, उत्तर प्रदेश
3. **जीलानी बुक डिपो :** 523 मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
4. **ऍंगिल प्रिन्टर्स :** मोहल्ला चक, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
5. **बुक इम्पोरियम :** उर्दू बाज़ार, सब्ज़ीबाग़, पटना-4 (बिहार)

सरप्रस्त

पीर तरीक़त हज़रत हाजी सय्यद शाह ख़ालिद इमाम अबुल उलाई, दानापुरी मदज़िललहु नूरानी, ख़ान्क़ाह सज्जादिया अबुल उलाईया।

सज्जादह नशीन

पीर तरीक़त हज़रत हाजी सय्यद शाह सैफुल्लाह अबुल उलाई, दानापुरी ख़ान्क़ाह सज्जादिया अबुल उलाईया, शाह टोली, दानापुर, पटना

हिन्दी अनुवादकर्ता

डाक्टर सय्यद शाह अबुताहिर अबुल उलाई, दानापुरी ख़ान्क़ाह सज्जादिया अबुल उलाईया ।

सहायक

सय्यद शाह मीज़ाब अबुल उलाई दानापुरी ।

सय्यद शाह फ़रहान ख़ालिद अबुल उलाई दानापुरी ।

सय्यद शाह ज़ीशान ख़ालिद अबुल उलाई दानापुरी ।

सय्यद शाह नासिर अबुल उलाई दानापुरी ।

सय्यद शाह तय्याब उल्लाह अबुल उलाई दानापुरी ।

तरतीब व पेशकश

सय्यद शाह रय्यान चिश्ती अबुल उलाई, ख़ान्काह सज्जादिया अबुल उलाइया, तन्ज़ीम अकबरी, शोबए नश्र एशाअत, शाह टोली, दानापुर, पटना (बिहार) ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

हम्द लतीफ़ और नात शरीफ़

लाएक़े हम्द है ख़ुदाए करीम
नात है तोहफ़ए रसूले रहीम

वह ख़ुदाए करीम सब का कफ़ील
यह रसूले रहीम सब का वकील

कारसाज़ी ख़ुदा के हाथ मे है
इलतेजा मुस्तफ़ा के हाथ मे है

मेहरबाँ अपने बन्दो पर है ख़ुदा
यह भी अपनी उम्मत का ग़मगुसार रहा

है ख़ुदा ख़ालिक़े ज़मीनो जमाँ
उसका महबूब रहमते दो जहाँ

है ख़ुदा एक अपनी क़ुदरत मे
वह भी बे मिस्ल शाने रहमत मे

बादशाही ख़ुदा को ज़ेबा है
दिलबरी मुस्तफ़ा को ज़ेबा है

शक नही इस मे है हकीम अल्लाह
हैं नबी भी तबीब अहले गुनाह

ज़ात अल्लाह की है सब से क़दीम
नूर अहमद भी है उसी का नदीम

है ख़ुदा कि निगाह बन्दों पर
है नज़र उसकी दर्द मन्दों पर

है ख़ुदा बादशाह बा तदबीर
हैं नबी भी उसी ख़ुदा का वज़ीर

है जो अल्लाह के फ़रिश्ते चार
जानशीन इसके भी हैं चार ही यार

है अयाँ औलिया अगर हक़ कि
आल ताहिर नबी को भी है मिली

लिखने की वजह

अम्मा बादः—अज़ अफ़ुल ऐबाद सय्यद ज़फ़र सज्जाद हनफ़ी उल मज़हब अबुल उलाई मशरब रिज़वी उल नसब ईब्न शैख़ी व मौलाई हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानिशमन्द ईब्न क़िबला अरबाब मारफ़त हज़रत हाजी सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द ईब्न कुतुब–उल–इरशाद हाजी–उल–हरमैन अलशरीफैन हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द ईब्न शेख–उल–असर मुरशिद बर हक़ हज़रत सय्यद शाह तुराब उल हक़ दानिशमन्द मोड़वी ईब्न मुर्शिद हक़ आगाह आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मख़दूम सय्यद शाह तैय्यब उल्लाह नक़ाब पोश दानिशमन्द मोड़वी ईबन शेख़ुल शेख़ हज़रत मौलाना अमीन उल्लाह शहीद नौआबादी क़ुदुस अल्लाह इसरारहुम।

जुमला बिरादरान–ए–इस्लाम की ख़िदमात में उमूमन और बिरादरान व अज़ीज़ान तरीक़त की ख़िदमात में ख़ुसूसन अर्ज़ करता है के जब मैं हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस चिश्ती रह० की ख़ानक़ाह के अन्दरूनी व बेरूनी नज़्म व नुस्ख़ से फ़ारिग़ हो चुका तो बवक़्त फ़ुरसत शाह मुहम्मद इदरीस रह० साहब की तसनीफ़ात का मुताला शुरू किया। यह मशग़ला जारी था। के दफअतन मेरे दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ के हज़रत शाह साहब रह० अ० कि लिल्लाहियत

और उनकी मज़हबी सरगर्मियो का कुम्हिया के मुरीदीन व मुतवस्सिलीन बार-बार एआदा कर सकते है। या ज़िला पुर्णिया के रौशन ख़्याल हज़रात उन की रूहानियत से अपना दामने मुराद भर सकते है। मगर इंकलाब ज़माना की तरफ़ एक करवट इन सुनी सुनाई बातों को दफ़्तर पारिना बना देगी। और वह नक़्श-ओ-निगार जो उन सादा लौओं के दिलों पर जमाये गए है। उनको आन कि आन में हर्फ़ ग़लत कि तरह मिटा देगी। अन्दरीन हालात मैने उनकि स्वानेहयात क़लमबन्द करने का इरादा कर लिया और अंजाम कि दुशवारियों का ख़्याल किए बग़ैर उसका आग़ाज़ भी कर दिया। इस वादिऐ पुर बहार सैरोस्याहत ने दिल लुभाया। तो क़लम ऐजाज़ रक़म ने और एक क़दम आगे बढ़ाया। और मुझको यह सबक पढ़ाया के इस सवानेहयात को वुसअत दी जाए इस तरीक़ा से बिरादराने तरीक़त की रूहानी ख़िदमत की जाऐ। अब मेरे सामने एक मुर्ग़ज़ार था और मैं चारोना चार उस में चहलकदमी के लिए तय्यार था। यहाँ तक के इन औराक़ चन्द ने किताब की सूरत इख़्तेयार करली। मैं समझता हूँ के यह पीरान-ए-सिलसिला की इमदाद रूहानी थी। हुज़ूर सय्यदना अमीर अबुल ओला हसनी अल हुसैनी ओवैसी अली मुर्तज़ा अक्बराबादी क़ुदुस अल्लाह सिर्हू के ज़िक्र ख़ैर से इस की इबतेदा की गयी है और हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस चिशती रहम्तुल्लाह अलैह की स्वानेहयात पर इन्तेहा की गयी है। हत्तल वसा (कोशिश किया) तज़कीरा पीरान उज़्ज़ाम में भी एखतेसार से काम लिया गया है यही सब्ब है के अक्सर बुज़ुर्गो के ज़िक्र में इजमाल को पेश नज़र रखा गया है। चूँके यह सल्फ सालेहीन के ज़िक्र ख़ैर का मजमूआ है उसी मुनास्बत से इस का नाम 'तज़किरत-उल-अबरार' रखा गया है। और

हर तज़किरा का इबतेदाई उनवान लफ़्ज़ "ज़िक्र ख़ैर" को क़रार दिया गया है हर शायर और हर मुसन्निफ़ कोशिश बलीग़ करता है के उसका कलाम हश्व ज़वाएद से पाक हो और उसकी तसनीफ़ सही मायनो में आईनऐ इदराक हो। मगर बावजूद इन कोशिशों और काविशों के भूल चूक होती है और होती रहेगी। मगर आनेवाली नसलें दामने सहाफ़त के इन बदनुमा धब्बो को अपनी क़ाबिलाना तावीलों से धोती रहेंगी। मैं इस मैदान का मर्द नहीं हूँ मगर किसी रूहानी ताक़त ने मुझको इस सफ़ में लाकर खड़ा कर दिया है। मगर मेरा हाल यह है के "आँखें खुली है देख रहा हूँ ख़बर नहीं" हाँ किसी तरफ़ से मेरे कानो में यह सदा आ रही है। सच पूछिए तो यही सदाए दिलकश मेरी हिम्मत बढ़ा रही है "क़ीला इन्नल्लाह ज़ूवलादिन, क़ीला इन्नर रसूला क़द कहना, मा नजी अल्लाह वर रसूला मअन मिनल लिसानुल वरा फ़कैफ़ा अना।"

मेरी आख़री इलतेमास है के नाज़रीन कराम मेरे लिए दुआए ख़ैर फ़रमाए। भूल चूक नज़र आए तो बिला तामुल उसकी इस्लाह फ़रमाए इस मुखतसर मगर ज़रूरी तमहीद के बाद मैं इन औराक़ परिशाँ के मजमूआ को जिसका नाम मेरे क़िबला व काबा हज़रत वालिद माजिद अम फ़ैज़हुम ने 'तज़किरत-उल-अबरार' तजवीज़ फ़रमाया है। हज़रात नाज़रीन की ख़िदमत में पेश करते हुए दबी ज़ुबान से अर्ज़ करना चाहता हूँ।

यह आईना यही आइना रूए यार है
देखो तो इससे हुसने अज़ल आशकार है।

"व बिल्लाहित्तौफ़ीक व अलैहित्तकालान" तारीख़ एक जमादिल उस्सानी दिन सोमवार 1359 हिजरी। हुज़ूर नबी करीम अलैहिस्सलातो व तसलीम का इरशाद फ़ैज़ बुनियाद है के औलियाए उम्मती का अम्बियाए बनी इसराईल। यानी मेरी उम्मत के औलिया अल्लाह की मेरी उम्मत में वही हैसियत होगी जो अमबेया बनी इसराईल की हैसियत उनकी क़ौम में थी। बा अलफ़ाज़ दिगर उम्मत मरहुमा के ओलमाए कराम व औलियाए उज़्ज़ाम की क़दरो मंज़लत वही होगी जो अमब्या बनी इसराईल की उनकी क़ौम में थी। वह साहबे मोजज़ात बाहरात थे तो यह मसदरे कश्फ़ व करामात उनको ख़िलअत नबूवत अता हुआ तो इन दल्क़ पोशो को "अलाइन्ना औलिया अल्लाह ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून" का मुजदा जाँ बख़्श सुनाया। वह बहरे नबूवत के सनावर थे तो यह दरयाए विलायत व इमामत के ग़व्वास। अम्बया बनी इसराईल ने सोतों को जगाया। तो औलिया अल्लाह ने क़ौम की डूबी हुई कशती को तैराया। चुनानचे दुनियाए इस्लाम में अल्ल उमूम और हमारे हिन्दुस्तान में अल्लख़ुसूस जो मुस्लमानो की कसरत नज़र आती है वह उन्हीं अल्लाह वालों के दम क़दम की बरकत है के उन्होंने अपनी मुक़द्दस ज़िन्दगी इस्लाम और अहले इस्लाम की ख़िदमात के लिए वक़्फ़ कर दी थी। तलवार और नेज़े तो ख़ुदसरों और बे दीनो से दुनिया को पाक कर सकते है। मगर इन मर्दाने हक़ परस्त ने अपने अख़लाक़ व आदात से अपने कश्फ़ो करामात से क़ौम की क़ौम और गिरोह दर गिरोह दुशमनान इस्लाम को इस्लाम का शैदायी बना दिया। उनके मवाएज़े हसना में रूहानियत के साथ फ़ी सबीलिल्लाह की भी तालीम दी जाती थी एख़लाक़ व आदात की भी इस्लाह होती थी हर

ख़ानकाह के दोश बदोश मदरसे और लंगर ख़ाने भी जारी रहते थे। तालिबाने हक इल्म ज़ाहरी की तकमील के बाद तालीम बातनी की तरफ़ मुतवज्जह होते थे। सालहाए दराज़ के रियाज़त और मेहनत शाक़ह के बाद हर फ़रद सूफ़ी बा सफ़ा होकर निकलता था और उनकी जामियत का यह आलम होता था के मैदान कारज़ार में तो सीपहसालार सर मिम्बर वाअज़े शीरी गुफ़तार महराब मस्जिद में आबिदए अताअत गुज़ार नज़र आते थे। वाए नाकामी "ना अब वह लोग है बाक़ी ना अब वह सोहबत है।" इल्ला माशा अल्लाह। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम और सय्यदना इलयास अलैहिस्सलाम आफ़ताब व महताब की तरह इसी आलम में मौजूद है। अबदालाने शाम, अग़वास, औताद अबरार, क़ुतुब मदार, क़ुतुब इरशाद, सब इसी आलम ज़ाहरी में रौनक़ अफ़रोज़ है। एक वह ख़ैरियत का ज़माना था के आसमानी मेहरो माह के इलावा कश्फ़ व करामात के आफ़ताब व माहताब अपनी ज़िया वारियो और नूर अफ़शानीयों से हिन्दुस्तान के गोशा-गोशा को रौशन और मुनव्वर कर रहे थे। ग़ाज़ी मुहम्मद इब्न क़ासिम के कामयाब हमलो ने सबसे पहले सिंध में तौहीद की बिजलियाँ चम्काई फ़िर क़ुतुब-उल-इरशाद हज़रत सय्यद अली हजवेरी अल मुलक़्क़ब बा दाता गंज बख़्श ने पंजाब को अपनी हक़्क़ानियत और रूहानियत से माला माल फ़रमा दिया गर्दन कशाने पंजाब इस्लाम के हाशिया बरदार बने। बुतख़ाने के पुजारी मुस्लमान हुए सरदार बने। फ़िर हज़रत ख़्वाजा मोइन उद्दीन हसन सनजरी ग़रीब नवाज़ रज़ि० अ० ने मुल्क माडवार में क़दम रंजा फ़रमाया और अपने क़दम मुबारक से उस चमनिस्तान ख़ेजाँ रसीदा को गुलज़ार बेख़ेज़ाँ बना दिया। रूहानियत की बिजलियाँ चमकने लगीं। ख़ैरो बरकत की

बूंदें बरसने लगीं। ग़ुनचे मुस्कुराये दरख़्ताने ख़ुश्क फ़ल लाए। अल ग़रज़ इस्लाम का बोल बाला हुआ, ना आक़बत अन्देशों का मुँह काला हुआ। सुलतानुल हिन्द लक़ब अता हुआ। ग़रीब नवाज़ कहलाए इसी तरह सुलतानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चशम व चिराग़ क़ुतुबुल अकताब ख़्वाजा क़ुतुब उद्दीन बख़्तेयार काकी, क़ुतुबुल औलाद हज़रत बाबा फ़रीद उद्दीन गन्ज शकर, हज़रत सुल्तान निज़ामउद्दीन औलिया महबूब इलाही, शेख़ुल अस्र हज़रत ख़्वाजा नजीब उद्दीन फ़िरदौसी, हज़रत नूर क़ुतुब आलम पंडवी, हज़रत मख़दूमुल मुल्क शरफ़ुद्दीन बिहारी, हज़रत मख़दूम लतीफ उद्दीन बन्दगी दानिशमन्द मोड़वी, हज़रत मख़दूम बदर आलम ज़ाहदीद्व (मज़हरे शाने जमाल हज़रत सुलतान बदी उद्दीन मदार) हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला हसनी अल हुसैनी अक्बराबादी, हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ुदुस अल्लाह इसरारहुमा, और दिगर बुर्जुगाने सल्फ़ ने अपनी अपनी विलाएत और अपने अपने दौर में सरज़मीने हिन्द की बंजर और संगलाख वादियों में तौहीद की बेशुमार नहरें इस्लाम के आबेहयात जैसे चशमे जारी कर गए हैं और इस्लाम के गुलशने पुर बहार की आबयारी की ख़िदमतें अपने जानशीनों और खुलफ़ा के सुर्पुद फ़रमा गए है। अलहमदोलिल्लाह के वह सिलसिला जारी औश्र सारी है और वही लकीर के फ़क़ीर हत्तल मक्दूर इस्लाम की ख़िदमत कर रहे है। हिन्दुस्तान क्या दुनियाए इस्लाम में मज़हबी इबादत गाहों की कसरत है। मुबल्लेग़ीन की गर्म बाज़ारी है सूफीयों और दरवेशों का सिलसिलए रूशदो हेदायत भी जारी है। मगर न तो मुस्लमानो में अगली सी रवादारी है न अहसास बेदारी। हर मुस्लमान अमलन मज़हब से दूर होता जाता है। मज़हबी

जोश व ख़रोश दिलो से काफ़ूर होता जाता है। मदरसे भरे पड़े है ख़ानकाहे मामूर हैं मगर निगाहें ग़ौर से देखिए तो दोनो बे नूर हैं। मुस्लमानों ने मज़हब के दायरा से क़दम बाहर निकाला तो अंग्रेज़ी हुकूमत का जुबा अपने कांधो पर रखा "शामते आमाले मा सूरत नादिर गिरफ़्त" हमने मज़हब से किनारा कशी इख़्तेयार की गोया ख़ुदा से मुँह मोड़ा। वाएज़, दरवेश, सूफ़ी सब के सब इसी रंग में रंगे हुए नज़र आते है। वाएज़ मौजूदा हुकूमत के दस्त नगर। सूफ़ी उसकी बदौलत तवंगर नज़र आते है। "फ़ातबेरु या उल्लिअब्सार" और जो अल्लाह वाले शराबे मुहब्बत के मतवाले है। उन्होंने हमारी बद आमालियों से बेज़ार हो कर ख़िलवत नशीनी इख़्तेयार कर ली है। हक़ीक़त में औलिया अल्लाह हमा तन नूर है मगर हम बद नसीब है। के उनकी मजालिस मुताबररेका से दूर है। सूफ़ी संतो, अल्लाह वालों के अमन चैन और मुहब्बत के पैग़ाम को भुला दिया। इस वक़्त ज़रूरत है एक शैख कामिल की जो ख़ुद बीनी का नक़शा मिटाए और हमको ख़ुदा बीनी का सबक़ पढ़ाए जैसे दसवी सदी हिजरी के अवाएल में हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला हसनी अल हुसैनी ओवैसी अली मुर्तज़ा रज़ी अल्लाह अनहों ने मसनदे ईशाद पर जल्वागर होते ही अक्बराबाद और मुज़ाफ़ात अक्बराबाद को अपनी रूहानियत से माला माल फ़रमा दिया। मुर्दा दिलो को हकीक़ि ज़िन्दगी बख़्शी। बेदीनो को दीनदारी अता हुई। नाम के मुस्लमान काम के मुस्लमान बने सरमस्त बादये इरफान बने। ख़ुदी का नकशे बातिल मिटाया। बेखुदी का रंग जमाया। कुफ़रो नेफ़ाक़ के बादल छटने लगे दिलों के आइने ख़ुद ब ख़ुद चमकने लगे। इस मेहर आलम ताब विलायत ने बुर्ज हिदायत में जलवा गर होते ही ज़र्रों को

आफ़ताब सितारों को माहताब बनाना शुरू कर दिया। चुनांचे उन्हीं मेहरो माह की ज़्याबारीयो ने राजपूताना, मारवाड़, दकन, अवध, बिहार, बंगाल में इस्लाम की रौशनी फैलायी तौहीद की बिजली चमकाई। अबुलओलाई फ़ैज़ जारी हुआ नक़्शबन्दीयत का पल्ला भारी हुआ। सबसे पहले शैख़ अकमल रहबरे कामिल सरमस्त बादए इरफ़ान इलाही रहमतउल्लाह अलैह ने अपने पीर रौशन ज़मीर हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला एहरारी हसनी अल हुसैनी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हुकम से मुल्क मेवात में क़याम फ़रमाया। और इस एलाक़ाऐ बे आबो ग्याह को गुलज़ार बे रवेज़ाँ बनाया। निसबते अबुल ओलायीया का ज़हूर होने लगा, कश्फ़ व करामात का शोहरा दूर दूर होने लगा आप के खुलफ़ा में मज़हरे जलालो जमाल हज़रत सय्यद शाह जलाल धोमी कुदुस सिर्रहू और सूफ़ी बा सफ़ा हज़रत मियाँ नूर अली शाह रहमतउल्लाह अलैह बहुत मशहूर व मारूफ़ और क़ाबिले ज़िक्र हैं। आज भी उनकी रूहानियत अपना काम कर रही है। नादारों के दामन गुलहाऐ मुराद से भर रही है। मुल्क अवध को क़ुदवए सादात उज़्ज़ाम ज़ुबदए मशाएख़ कराम हज़रत मीर सय्यद मुहम्मद कालपी चिश्ती अबुल ओलायी क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू ने ख़ाक से पाक किया। अपने चश्मए फ़ैज़े हिदायत से हज़ारो तालिबाने हक़ को सैराब फ़रमाया। चुनांचे हज़रत मारहेरह क़ुदुस अल्लाह इसरार हुम हज़रत सय्यद पाक ही के ख़ानदान के फ़ैज़ याफता है। रहबरे शैख़ कामिल हज़रत शेख़ मुहम्मद अफ़ज़ल अबुल उलायी मुहम्मदी क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू मुरीद बा इखतेसास व ख़लीफ़ा मुमताज़ हज़रत सय्यद पाक के थे। इलाहाबाद में हज़रत शेख़ के बाकियातुस सालेहात मौजूद हैं और सिलसिला रूशदो इरशाद भी जारी है। अल्लाहुम्मा

ज़िदफ़ज़द। मुल्क दकन के गुलशने इस्लाम की आबियारी की ख़िदमत। महबूब जल्लो ओला हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला एहरारी हसनी अल हुसैनी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ख़लीफ़ा अकमल व आज़म सय्यदुल सादात रफ़िउल दरजात महबूबुलसमद हज़रत मीर सय्यद दोस्त मुहम्मद अबुल उलायी बुरहानपूरी क़ुदुस अल्लाह सिर्हू अल अज़ीज़ के सुपुर्द हुई। आप के दौर वेलाएत में बुरहानपूर में रीनी चढ़ रही थी। तालिबाने हक़ दम के दम में रंग दिए जाते थे। मेरे जद्दे अमजद हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी अबुल ओलायी क़ुदुस अल्लाह सिरर्हू हज़रत सय्यदुल सादात का ज़िक्र ख़ैर अपनी किताब "नेजाते कासिम" में इस तरह तहरीर फ़रमाते है। वा हुवा हाज़ा। "वह नेमते जो रूहानीयत से आईमा अतहार और हज़रत ख़्वाजा ख़ाजगान ख़्वाजा मोईन उद्दीन चिश्ती क़ुदुस अल्लाह सिरर्हू अल अज़ीज़ की हज़रत महबूब जल्लो अला को मिली थी वह बिल्कुल आपने हज़रत महबूब अलसमद को ईनायत फ़रमाया और बारे अमानत विलायत व ईरशाद का आप ही को तफ़वीज़ किया।"

"आस्मा बारे अमानत नतवाँ नस्त कशीद
क़ुर्रए फ़ाल बनामे मने दीवाना ज़्दन्द"

हज़रत सय्यदुल सादात ब हुक्म मुहकुम पीर रौशन ज़मीर के मुक़ाम बुरहानपूर में जलवा अफ़रोज़ मसनद फ़ैज़ व हिदायत हुऐ जो अब औरंगाबाद के नाम से मशहूर है। मुल्क दकन बा तमाम व कमाल आप के फ़ैज़ान से माला माल हो गया। आपके बड़े बड़े आली मंज़लत ख़ुलफ़ा हुए। उनमें से तीन बुर्ज़ुगवार की जात करामात

आयात से बड़ा फैज़ जारी हुआ। एक तरीक़त पनाह हज़रत दाता मुसाफिर शाह दूसरे हज़रत दाता महमूद शाह तीसरे क़ुतुबुल इरशाद हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़रहाद क़ुदुस अल्लाह इसरारहुम। हज़रत मुसाफ़िर शाह व हज़रत महमूद शाह रहमतउल्लाह अलैहमा तो मुल्क दकन में रौनक़ बख़्श मसनदे फ़ैज़ो हिदायत रहे। तमाम मुल्क उन के फ़ैज़ से मामूर हो गया और महरमे इसरार रब्बानी मेहर सहरे हेदायत व इरशाद हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़रहाद क़ुदुस अल्लाह सिरहू ब हुक्म सय्यदुल सादात शहर देहली में तशरीफ़ लाकर रौनक़ अफ़रोज़ मसनदे हिदायत व इरशाद हुए। और आपके दरयाऐ फ़ैज़ से देहली से बंगाल और ढाका तक सैराब हो गया। तारिख़ 25 जमादिस्सानी 1035 हिजरी ब मुक़ाम देहली वासिल बहक़ (इन्तक़ाल) हुऐ। मज़ार मुबारक बंगश के पुल के मुतस्सिल बाग़ छटी रसाँ मरजए ख़लाएक़ है। आपके ख़ुलफ़ा में दो बुज़ुर्ग खुसूसियत के साथ ज़्यादा मुम्ताज़ और बा कमाल गुज़रे है। एक तो इमामुल आशक़ीन क़ुतुबुल आरफीन हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदा नुमा क़ुदुस अल्लाह सिरहू, दूसरे शरीअत पनाह हक़ीक़त दस्तगाह आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मीर सय्यद असद उल्लाह क़ुदुस अल्लाह सिरहू।

ज़िक्र ख़ैर इमामुल आशक़ीन क़ुतुबुल आरफ़ीन हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदा नुमा क़ुदुस अल्लाह सिरहूल अज़ीज़

आप का ज़िक्र ख़ैर मुसन्निफ़ निगार ख़ानए फ़क्र तहरीर फ़रमाते है उस की इबारत बजिनसहू दर्ज की जाती है। "हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदा नुमा क़ुदुस सिरहू जिनका मज़ार मुबारक मौज़ा बख़्तेयार नगर इलाक़ा लखनऊ करीब मलीहाबाद वाक़े है। हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़रहाद क़ुदुस सिरहू के खुलफ़ाए आज़म से है। बड़े रफीउल हाल और साहबे तहक़ीक़ थे। हज़रत मौलाना शाह रूकुन उद्दीन इशक़ ने एक रेसाला जिस का नाम बुरहानुल इशक़ है हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदानुमा के हालात में लिखा है। आप उसमें तहरीर फ़रमाते है के आप के एक मुरीद थे। उनको किसी मजज़ूब की सोहबत हो गई। उन मजज़ूब साहब ने आलमे मुशाहदे में दोज़ख़ और जन्नत की सैर करादी अब वह बुर्ज़ुग अपने शेख की हुज़ूर से ग़ैर हाज़िर हो गए। एक रोज़ हज़रत मौलाना ने उनका हाल पूछा तो हाज़रीने मजलिस शरीफ़ ने उनकी कैफ़ियत अर्ज़ कर दी। आप यह वाक़िया सुनकर ख़ामोश रहे रात को उन बुर्ज़ुग ने आलमे रोया (ख्वाब) में यह वाक़िया देखा के हज़रत रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस मुबारक कायम है और हज़रत मोलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदा नुमा क़ुदूस सिर्हू आँ हज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुवाज्ह शरीफ़ (रौज़ा के करीब) में दस्त बदस्ता खड़े है और उस मजज़ूब का कहीं निशान भी नहीं है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मौलाना की तरफ़ तवज्जो फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया के अल्लाह तआला शानहु तुझे ऐसे मुरीद भी अता फ़रमाएगा जिन को दिदाए दिल से दुनिया ही में अल्लाह तआला की रूयत होगी। और चन्द अलकाब से सरफ़राज़ फरमाया। वह यह है "बुरहानुल असफ़ा, बुरहानुल असफिया, बुरहानुल ज़िया पस जब वह बुर्ज़ुग सुबह को बेदार हुए तो हज़रत मौलाना के हुज़ूर में हाज़िर हुए और यह वाक़िया अपना अर्ज किया तो और उन मजज़ूब साहब से क़ता तालुक़ फ़रमाया। तारिख़ वेसाल आपकी 16 ज़िलहिज्जा 1187 हिजरी है।

खोया ही था मुझको मेरी दुनिया तलबी ने
क्या ख़ूब संभाला है रसूले अरबी ने

तमाम हुई इबारत निगार ख़ाना फ़क्र की।"

शेखुल कामलीन हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन ख़ुदा नुमा क़ुदुस अल्लाह सिरर्हू के उन दो ख़ुलफा यानी शेख़ुल वासलीन इमामुल आरफ़ीन रूकुन उल मिल्लत वददीन हज़रत सय्यदना रूकुन उद्दीन इशक़ क़ुदुस सिर्हू और शेख़ुल इस्लाम व मुस्लेमीन हज़रत शाह इज़्ज़त उल्लाह क़ुदुस सिर्हू ने अपने फ़्योजात बातनिया और तबहुर उलूम जाहिरया से दुनियाए तस्ववुफ़ में नए बाब का इज़ाफ़ा फ़रमा दिया और आस्माने तरीक़त में चार चाँद लगा दिए शेखुल इस्लाम बाक़ी बिल्लाह हज़रत शाह इज़्ज़त उल्लाह अबुल उलायी बुरहानी क़ुदुस अल्लाह सिर्हू ने राजपूताना में तौहीद का डंका बजाया। ज़ुलमत

क़दा को अपने नूर करामत से रोज़ रौशन से रौशन तर बनाया। मुक़ाम बिगड़ एलाक़ा रियासत जयपूर में आप का मज़ार मुबारक ज़ियारत गाह ख़ासो आम है। हज़रत शेखुल इस्लाम के मुसतनद ख़लीफ़ा आरिफ बिल्लाह हज़रत शाह इरादत उल्लाह क़ुदुस सिरर्हू का मजार मुबारक भी बिगड़ में ही मरजा खासो आम है। आप के ख़लीफ़ा अजल क़िबला अरबाब कमाल हज़रत शाह क़मर उद्दीन क़ुदुस सिरर्हू का मज़ार फ़ैज आसार क़सबए जन जनूँ इलाक़ाह रियासत जयपुर में है। दामने कोह में बड़ी आलीशान ख़ानकाह है। बिल फ़ेल इस ख़ानक़ाह के सज्जादानशीन बेरादर तरीक़त शाह ख़ादिम हुसैन मोहसनी अबुल उलायी है। आप को बैत व इरशाद क़िबला व काबा वालिद माजिद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानिशमन्द दानापूरी, सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह दानापूर शरीफ़ (ख़ानक़ाह सज्जादीया अबुल ओलायीया) से हासिल है। साहबे सज्जादा के हक़ीक़ी चचा शाह मुहम्मद हसन साहब भी हज़रत क़िबला व क़ाबा वालिद माजिद के दस्त हक़ परस्त पर दाख़िले सिलसिला अबुलउलाइया (मुरीद) हो चुके है। अल्लाहुम्मा जिद फ़र्द। क़सबए चोरू व ज़िला बिकानेर में भी मेरे क़िबला व काबा वालिद माजिद अम फ़ैजहुम के मजाज़ मुतलक़ (ख़लीफ़ा) जनाब क़ाज़ी ग़ुलाम किबरिया साहब आला अल्लाह शानहुम बक़ैद हयात है और उनका सिलसिलाए हिदायत भी रोज़े अफ़ज़ु तरक्की पर है।

ज़िक्र ख़ैर शैख़ुल वासलीन इमामुल आरफ़ीन रूकुन उल मिल्लत वददीन हज़रत सय्यदना रूकुन उद्दीन इशक़ क़ुदुस अल्लाह सिरर्हूल अज़ीज़

मुसन्निफ़ निगार ख़ाना फ़क्र ने आप का ज़िक्र ख़ैर भी तहरीर फ़रमाया है इस लिए मैने मुनासिब समझा के इस ज़िक्र ख़ैर को भी निगार ख़ाना फ़क्र की इबारत पर ख़त्म किया जाऐ तहरीर फ़रमाते है। हज़रत मौलाना शाह रूकुन उद्दीन क़ुदुस सिरर्हू हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़रहाद क़ुदुस सिरर्हू के नवासे और हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन खुदानुमा क़ुदुस सिरर्हू के ख़ुलफ़ाए अज़िमुशशान से है। आप अपने जवानी के ज़माना में बतौर सैर देहली से पूरब की तरफ़ तशरीफ़ ले गए थे जब आप अज़ीमाबाद (पटना) पहुँचे तो वहाँ आप ने हज़रत शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ुदुस सिरर्हू से मुलाक़ात की। हज़रत शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ुदुस सिरर्हू हज़रत मी सय्यद असद उल्लाह क़ुदुस सिरर्हू के ख़लीफ़ा थे बस आप अज़ीमाबाद (पटना) में ही रह गये। हज़रत शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ुदुस सिरर्हू ने आपका बड़ा एहतेराम किया जैसा के पीर जादों का करते है। 6 महीना तक आप हज़रत शाह मुहम्मद मुनएम क़ुदुस सिरर्हू के हलक़ा में बैठे। बाद उसके हज़रत मुनएम पाक क़ुदुस सिरर्हू की इजाज़त से आप ग्वालियार आऐ। उस वक़्त हज़रत मौलाना बुरहान उद्दीन खुदा नुमा क़ुदुस सिरर्हू रौनक अफ़रोज़ ग्वालियार थे। आप ने हज़रत मौलाना क़ुदुस सिरर्हू से बैत की और बहुत रोज़ तक हाज़िर ख़िदमत रहे यहाँ तक के मौलाना ने आप को इजाज़त व ख़िलाफ़त से मुशररफ़ फ़रमा कर अज़ीमाबाद को रूख़सत फ़रमाया आप जब

अज़ीमाबाद तशरीफ़ लाए तो उस तरफ़ का तमाम मुल्क आप के फ़ैज़ान से सैराब हो गया। और बड़े-बड़े अमराए आलिशान अज़ीमाबाद के आप के हलक़ा इरशाद में दाख़िल हुए और यह हालत हो गयी जैसे उमरा के वास्ते अस्बाब दुनियावी इज़्ज़त व तफ़ाख़ुर (हैसियत) का सबब होता है उससे भी बढ़कर हज़रत इशक़ के हुज़ुर की हाज़री उलमा व उमरा अपने वास्ते समझते थे। आपका जमाल ज़ाहरी ऐसा था के जिस को देखकर आदमी मुताहईयर हो जाया करते थे आप फ़ने शेर में भी यदे तूला रखते थे। एक दीवान, और एक मसनवी, एक साक़ी नामा मेरी नज़र से गुज़रा है। आप के दीवान में बिस्मिल्लाह के नीचे यह शेर लिखा है उसके बाद ग़ज़लें शुरू हुई हैं।

"आह जाँ सोज़ को सर दफतरे दीवान किया
इशक़ ने देखते हो पहले ही तूफ़ान किया"

7 जमादिल अव्वल बरोज़ चहार शम्बा 1203 हिजरी में वासिल बहक़ हुए। मज़ार मुबारक (पटना) महल्ला मीतन घाट तकिया हज़रत इशक क़ुदुस सिरर्हू में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है। हज़रत कुतुबुल इरशाद मौलाना शाह मुहम्मद फ़रहाद क़ुदुस अल्लाह सिरर्हू के दूसरे खलीफ़ा अकमल सेराजुल मिल्लत वददीन हामी शरा मतीन आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मीर सय्यद असद उल्लाह क़ुदुस सिरर्हू थे। ज़बान में ताक़त नहीं के उनके कमालात ज़ाहरी व बातनी को बयान कर सकें। उनके कमालात सुवरी व मानवी (ज़ाहिर-बातिन) के इज़हार के लिए सिर्फ इस क़दर बता देना काफ़ी है के मुक़र्रब बारगाह सुबहानी क़ुतुब रब्बानी हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ादरी अबुल उलायी ने आप से इस्तेफादए बातनी फ़रमाया और इजाज़त ब ख़िलाफ़त से मुर्शरफ हुए यानी हज़रत सय्यदना मख़दूम मुनएम पाक बैतन क़ादरी थे। और तालीमन अबुल उलायी। दो बहरे जख़ार आपके

क़लबे शरीफ़ में मौजे मार रहे थे। कभी आफ़ताब हक़ीक़त की ज़या बारियाँ होती थी तो कभी माह दरखशाँ की नूर अफ़शानिया। ख़ुलासा यह के पटना के अतराफ़ व ज्वानिब का गोशा गोशा हज़रत के अनवारे करामात से रौशन और मामूर हो गया बल्के इस आफ़ताब हक़ीक़त की ज़्याबारियों ने पटना से बंगाल और ढाका तक को अपनी आग़ोश में ले लिया था।

हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद मुनएम पाक क़ुदुस अल्लाह सिरहू के बरगुज़ीदा ख़लीफा महरमे इसरार इलाही हज़रत सूफ़ी शाह मुहम्मद दायम ढाकवी ने अपने वारदात क़लबी का इज़हार पीर रौशन ज़मीर के हुज़ूर में बज़रिया तहरीर इन अलफाज़ में किया था। के मैं अपने आप को दरयाए मारफ़त इलाही में ग़रक़ देखता हूँ। शेख़ कामिल का जवाब मुलाहज़ा फ़माए जिससे उनके उलूवे मरतबत का पता चलता है। तहरीर फ़रमाते है "बेचारा मुनएम ना ई अस्त व न आँ अस्त आनानके ख़ुदरा दर दरियाए मारफ़त इलाही ग्रक़ दीदन्द। कलामुल मुलूक मुलूकुल कलाम। ग़ौर फ़रमायें मगर अलफ़ाज़ यही कहते है के मफ़हूम असली दूर है। आप यानी हज़रत मख़दूम मुनएम पाक तमामा उमर मुजरर्द रहे, ता हल इखतेयार न फ़रमाया। आप के ख़ुलफ़ा की तादाद बहुत थी और सबके सब रौशन ग़ीर आलिम थे। इसी तरह आपकी करामतें मशहूर हैं वह भी अज़हर मिनश शम्स। मगर इस मुख़तसर रिसाला में ख़ैरो बरकत के इन दो बाबों का इजाफ़ा मेरे लिए मुहाल नहीं। तो मुशकिल ज़रूर है। 11 रजबुल मोरज्जब 1165 हिजरी में वासिल बहक़ हुए अहाता मस्जिद मुल्ला मीतन में मज़ार फाएज़ुल अनवार ज़ियारत गाह अवाम व मरज्जा खास है।

निगार ख़ानए फ़क्र 1307 हिजरी में छपा है।

ज़िक्र ख़ैर मसदरे ख़र्क़ आदात मख़ज़न कशफ़ो करामात हज़रत सय्यद शाह ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिरहू

मुसन्निफ निगार ख़ाना फ़क्र तहरीर फ़रमाते है हर चन्द हज़रत इशक़ क़ुदुस सिरहू के बहुत ख़ुलफ़ा हुए मगर ख़लिफ़ए आज़म आप के मसदरे ख़र्क आदात मख़ज़न कशफ़ो करामात हज़रत सय्यद शाह ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिरहू है। हज़रत इशक क़ुदुस सिरहू के साहेबज़ादे हज़रत सय्यद शाह अहमद हुसैन क़ुदुस सिरहू की बैत भी जनाब हज़रत शाह अबुल बरकात क़ुदुस सिरहू के दस्त मुबारक़ पर वाक़े हुआ। जब हज़रत शाह अबुल बरकात क़ुदुस सिरहू शरफ़ इजाज़त से मुशर्रफ़ हुए और हज़रत इशक़ ने आप को ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमाया तो उसमे यह जुमला तहरीर फ़रमाया था के "बेइज़निल्लाह माज़ून शुद सुबहान अल्लाह बेहमदेही" हिकायत हज़रत पीरो मुर्शिद बरहक़ (हज़रत जद्दि अल्लामा सय्यद शाह अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिरहू) इरशाद फ़रमाते थे के हज़रत इशक़ क़ुदुस सिरहू के हलक़ा में दाख़िल हुए तो तीन बरस तक रात दिन ऐसी रियाज़ात शाक़क़ह फ़रमाई के देखने वाले घबरा गये "सालिकेह नकोस्त अज़ बहारश पैद अस्त" (सालिक फ़क़ीर से बहार पैदा होती है) अभी तक आप मुशर्रफ़ बा बैत न हुए थे के हज़रत इशक़ ने एक ख़ादिम की मारफ़त आपके पास यह पैग़ाम

भेजा के आप बैत करलें हज़रत ने सकूत फ़रमाया। बारे दिगर आप ने फ़िर एक ख़ादिम को यह पैग़ाम देकर भेजा। उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू ने इरशाद फ़रमाया के हुज़ूर की ख़ानक़ाह शरीफ़ में बहुत से तालिबे ख़ुदा जमा है। और किसी के पास यह पैग़ाम क्यों नहीं जाता मुझे क्यों इस शरफ़ से मुशरर्फ़ किया जाता है उस ख़ादिम ने ब जिनसेही यह जुमला जाकर अर्ज़ कर दिया। आपने फ़िर कहला भेजा के मेरे साहब "गाय बच्चे को बे सबब दूध नहीं पिलाती" आप को बैत करनी होगी। और आप को अपने हुज़ूर में तलब फ़रमाया और यह इरशाद फ़रमाया के मेरी ग़्रज़ आपकी बैत से हाशा व कल्ला यह नहीं है के मैं आप की शफ़ाअत कराऊँ। बलके अजब नहीं के आपकी वजह से मैं बख़्शा जाऊँ। सुबहान अल्लाह व बेहमदेही "फ़रौतनी अस्त दलील रसीदगान कमाल-के चूँ सवार ब मंज़िल रसद पियादा शवद" (रौशन दिल वाले फ़क़ीर पैदल वाले को कमाल की मंजिल तक पहुँचा देते है) उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू का यह हाल था के जोश गिरया से बेखुद थे। बाद इफ़ाक़ा फ़ौरन मुशर्रफ ब बैत हुए जब हज़रत इशक़ क़ुदुस सिंरहू ने विसाल फ़रमाया तो आप के साहब ज़ादे हज़रत शाह अहमद हुसैन क़ुदुस सिंरहू उर्फ छोटे हज़रत बहुत कम उमर थे। आप की बैत हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू के दस्त मुबारक पर वाक़े हुई। उस वक़्त "गाय बच्चे को दूध बे सबब नहीं पिलाती" इस जुमले के मानी समझ में आए। जब हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू अपने पीरो मुरशिद क़ुदुस सिंरहू के विसाल के बाद चुनार गढ़ से अज़ीमाबाद तशरीफ़

लाये और छोटे हज़रत क़ुदुस सिंरहू को मुशर्रफ़ बा बैत फ़रमाया तो आप के तालीम के ख़्याल से अज़ीमाबाद ही में रहे। अपने पीरो मुरशिद के आस्ताना पर क़याम फ़रमाया फ़िर तो तमाम अज़ीमाबाद आप के फ़ैजान से माला माल हो गया और आपके नूर मारफ़त की बिजलिया दूर दूर चमकने लगी।

चुनानचे राजा दौलत राओ सिंध्या वालिए ग्वालियार ने आप कि शोहरत सुनकर कुछ लोग बा तोहफ़ा व हदाया आप की जनाब में रवाना किये और यह दरखास्त की के इस गुलाम को भी तरिक़ा अबुल ओलाइया की निसबत से माला माल फ़रमाए आप ने वहाँ जाने से उज़्र किया लेकिन जो हज़रात हाज़िर हुए थे वह सब दाख़िल हलक़ा हुए और चन्द रोज़ रहकर आपके छोटे साहब ज़ादे हज़रत ख़्वाजा अबुल हुसैन क़ुदुस सिंरहू को बाला बाला अपने हमराह ग्वालियर ले आए यह अमर आपको इस क़दर ना गवार हुआ के बहुत अरसा तक आपने साहब ज़ादे साहब को न ख़त लिखा न उनका ख़त पढ़ा लेकिन बाद अर्ज़ व मारूज़ बिस्यार (मिन्नत समाजत करके) आपने उनसे अपनी रज़ा मनदी ज़ाहिर फ़रमाई और साहब ज़ादे साहब की अयादत की तक़रीब से ग्वालियर तशरीफ़ लाए तो तमाम अहले ग्वालियर क्या हिन्दू क्या मुस्लमान सब आपका कलमा पढ़ने लगे। महाराजा दौलत राओ कई बरस से अपने मज़हब के मवाफ़िक़ कनहइया जी के दर्शन का जोग कर रहे थे मगर कोई बात पैदा न हुई थी। इस अमर को राजा साहब ने हज़रत साहब के हुज़ुर में अर्ज़ किया आप उनकी तरफ़ मोतावज्जा हुए तो उनको

फ़ौरन ग़ैबत हो गयी उनको नज़र आया के कनहईया जी खड़े हुए बांसुरी बजा रहे है और उससे सदा "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" की आ रही है फ़ौरन राजा साहब को होश आ गया और हज़रत साहब के कदमों पर गिर पड़े और तरिक़ा आलिया अबुल उलायीया में दाख़िल हो गये। यह वाक़िया बहुत तूल है और यह रिसाला मुख़तसर है लेहाज़ा इखतेसार किया जाता है। जब आप ग्वालियर से तशरीफ़ लाए तो इलाहाबाद में क़याम फ़रमाया और यहिं सौ बरस की उमर में वेसाल फ़रमाया और जहाँ अब रेलवे स्टेशन इलाहाबाद का है यहीं दफ़न हुए। लगभग आठ महीने के बाद उमराए अज़ीमाबाद बराह दरिया इलाहाबाद पहुँचे और सब के सब हज़रत आला बरहक़ सय्यदना मुहम्मद क़ासिम दानापुरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के दौलत ख़ाना पर ठहरे और लाश मुबारक के ले जाने के बारे में आप से मशवरह किया। चूँके हज़रत ने उन लोगों को इस अमर पर निहायत दरजा आमादा पाया, लेहाज़ा एजाज़त दे दी जिस वक़्त हज़रत की मज़ार शरीफ़ वा (खुली) हुई हज़ारो आदमी हिन्दू मुस्लमान शिया सुन्नी जमा थे। जब लाश मुबारक क़बर शरीफ़ से नीकाल कर पलंग पर रखी है तो वही कैफ़ियत थी जो रोज़ अव्वल के लाश की होती है। बदन मुबारक ऐसा नरम था के दोहरा हुआ जाता था। उस वक़्त कई हज़रात असना अशर सुन्नी हो गये अल ग्रज़ बराह दरिया आप की लाश मुबारक अज़ीमाबाद गयी और हज़रत इशक़ क़ुदुस सिर्रहू के पाऐं दफ़न की गयी। 7 रमज़ान शरीफ़ 1256 हिजरी तारिख वेसाल है। आपके मुरीद ब एख़तेसास व

ख़लिफा आज़म व अकरम क़ुतुबुल असर सुलतानुल आशक़ीन हज़रत मौलाना सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन अबुल उलायी अज़ीमाबादी क़ुदुस सिर्रहू थे जिन्होंने मोहिबुल नबी हज़रत मौलाना मुहम्मद फ़ख़र उद्दीन देहलवी क़ुदुस सिर्रहू के फ़क्र का पूरा नक़शा लोगो को दिखा दिया था अभी तक आपके फ़क्र का सिक्का अज़ीमाबाद और उसके अतराफ़ व एकनाफ़ में जारी है आप की अज़िमुशशान ख़ानक़ाह पटना में मुल्ला मीतन की मस्जिद के अहाते में है बिलफेल इस ख़ानकाह के सज्जादा नशीन आप के परपोते अम्मे मोहतरम जनाब हज़रत सय्यद शाह तक़ी उद्दीन हुसैन क़िबला मुदाजिल्लहू है।

जब हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिर्रहू अज़ीमाबाद से ग्वालियार रवाना हुए तो आपने एक मजलिस तरतीब दी और उसमे जुमला अयान शहर को जमा किया और हज़रत क़ुतुबुल असर को अपना जानशीन बनाया। जुमला असाग़र व अकाबिर ने आप को तसलीम किया। करामत, एक रोज़ शहर छपरा महल्ला करीम चक हज़रत हकीम सय्यद शाह मज़हर हुसैन साहब क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू की ख़ानकाह में उर्स की मजलिस थी हज़रत क़ुतुबुल असर भी अज़ीमाबाद से तशरीफ़ लाऐ थे और जनाब ख़्वाजा सुलतान जान साहब, और जनाब ख़्वाजा मीरन जान साहब, और जनाब सय्यद शाह अली हुसैन साहब, और मोलवी जलाल उद्दीन साहब कसारवी, वग़ैरहुम सब हज़रत क़ुतुबुल असर के हमरेकाब थे। उस मजलिस मे मिया मदार बख़्श क़व्वाल ने यह ग़ज़ल शुरू की।

“तेग़ दर कफ़श दीदम खूनें मन ब जोश आमद
ख़न्दा ज़द गुले ज़ख़मम नाला दर ख़रोश आमद”

हज़रत क़ुतुबुल असर को कैफ़ियत तारी हुआ। रीश मुबारक के बाल इस तरह से ख़ड़े हो गये जैसे सोजन और बारीक बारीक फ़वारे ख़ून के हर बुने मु से उड़ने लगे जो लोग के हलक़ा में हाज़िर थे सब के कपड़े ख़ून से तर हो गये हज़रत क़ुतुबुल असर का क़मीज़ मुबारक अफ़शाँ हो गया, तमाम हाज़रीने मजलिस शरीफ़ बेख़ुद हो गये। सुबहान अल्लाह व बेहमदेही कैफ़ियत इसे कहते है। यह ख़ून आलूद क़मीज़ मुबारक और रूमाल हमारे यहाँ ख़ानकाह सज्जादिया अबुलउलाईया, मोहल्ला शाह टोली दानापूर पटना में मौजूद है। जिसकी आम ज़ियारत उर्स के मौक़ा पर 15 रजब को होती चली आ रही है।

19 शाबान 1252 हिजरी 52 बरस की उमर में विसाल फ़रमाया। लफ़्ज़ हम्द और आपकी उमर शरीफ़ दोनो के आदाद एक है। हज़रत मख़दूम मुनएम पाक के अहाता में दफन हुए। जिस वक़्त रूह मुबारक आप के जसद का तालुक़ छोड़ रही थी उस वक़्त हकीम अबुल हसन साहब आप के हुज़ूर में हाज़िर थे उन्होंने हज़रत से पूछा के हुज़ूर का मिजाज़ गिरामी कैसा है? आपने तबस्सुम फ़रमाकर यह शेर पढ़ा।

“सुलतान ख़ुबाँ मी रवद हर सू हुजूमे आशिक़ाँ
चाबुक सवाराँ यक तरफ़ मिस्की गदाया यक तरफ़”

और हकीम साहब से फ़रमाया के हकीम साहब। इस वक़्त इस

शेर के यही मानी है के सुलतान ख़ुबाँ रूह है और चाबुक स्वारान आज़ाए रईसा और मिसकीन गदायाँ दूसरे आज़ा। जुमला उमराए अज़ीमाबाद और ख़्वाजा ज़ादगान वाला शान हाज़िर थे सब को कैफ़ियत आ गयी और दरो दीवार से शोर व बुका की सदा आने लगी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेउन, आला हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस सिर्रहू ने अदमन तमाम उमर किसी की बैत न ली। अक़िदत मन्दो को हज़रत पीर रौशन ज़मीर के दस्त हक़ परस्त पर शर्फ़ बैत हासिल करने का हुक्म फ़रमाते और तालीम सिलसिला ख़ुद फ़रमाते, आला हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस सिर्रहू ने 1252 हिजरी में विसाल फ़रमाया। और आपके पीर रौशन ज़मीर ने 1256 हिजरी में विसाल फ़रमाया। यानी आला हज़रत के विसाल के कम व बेश चार साल के बाद आप के पीरो मुर्शिद ने परदा फ़रमाया। शेख़ का अदब मलहूज़ रखते हुए आप ने किसी के बैत की दरख़ास्त क़बूल न फ़रमाई। अलतौहीद कलमा अदब का यहि मफ़हूम है। आपके ख़ुलफ़ा मख़सूसीन के अस्माए गरामी दर्ज ज़ैल है।

शैख़ुल कामलीन वसीलतेना फ़िददारैन हज़रत सय्यद शाह मुबारक हुसैन क़ुदुस सिर्रहू ख़ल्फ़ुर रशीद व जानशीन आँ हज़रत क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू।

सय्यदुल तरीकत मुस्तग़रक़ बहरे मारफत व हकीक़त हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी क़मरीउल बरकाती क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू।

यादगार इमाम ज़ैनुल इबाद शैख़ुल इरशाद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी क़मरी उल बरकाती क़ुदुस अल्लाह सिंरहू।

सय्यदुल कामलीन सिराजुससालकीन हज़रत सय्यद शाह अता हुसैन क़मरी अबुल उलाई क़ुदुस अल्लाह सिंरहू।

फ़ख़रुल कामलीन सय्यदुल सालकीन हज़रत मीर ग़ुलाम हुसैन क़ुदुस अल्लाह सिंरहू।

अमीरुल सालकीन मिस्बाहुल मुक़ररेबीन हज़रत ख़्वाजा वजह उल्लाह क़ुदुस अल्लाह सिंरहू।

इमामुल वासलीन फ़ख़रुल कामलीन हज़रत मौलवी जलाल उद्दीन क़मरी अबुल उलायी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू।[1]

---

1. 17 रबि अव्वल 1275 हिजरी में आप का विसाल हुआ। आप के बाद बड़े साहब ज़ादे मौलाना हाजी शाह करीम उद्दीन साहब रह० अ० आपके जानशीन हुए। 1300 हिजरी में विसाल फ़रमाया। हाजी साहब के चन्द ख़ुलफा हुए है। मिनजुमला उनके हज़रत मौलवी शाह लियाक़त हुसैन साहब सबल पूरी मुतस्सिल पटना और मौलवी वसि उद्दीन साहब नगरनह है। हज़रत शाह लियाक़त हुसैन साहब अक्सर ज़िला पुर्णिया में क़याम फ़रमाते थे वहीं विसाल हुआ, मज़ार आप का मौज़ा हट गाँव मुतस्सिल कुम्हीया शरीफ़ में है। 7 रमज़ान को उर्स होता है। आपके ख़ुलफा में मुनशि शेख अन्ज़ार अली साहब कुम्हीयावी और मुनशी इस्माइल साहब कुम्हीयावी बक़ैद हयात है!

ज़िक्र ख़ैर सनादुल उरफ़ा मुस्तनादुल फ़ोक़रा इमाम तौहीद साहबे तजरीद व तफ़रीद जद्दे आला हज़रत मौलाना सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम अबुल ओलाई दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू

आप हज़रत मख़दूम सय्यद शाह तुराबुल हक़ दानिशमन्द मोड़वी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू के बड़े बेटा और आला हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस अल्लाह सिंरहू के भानजे है!

तालीम व इरशाद ख़िलाफ़त आप को अपने ख़ाल अकदस हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस सिंरहू से और बैत व इरशाद ख़िलाफ़त हज़रत सय्यद शाह ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू से है। आप ज़ू बहरैन "दो दरिया वाले" थे! आपके चचा अक़दस मुरशिद बर हक़ हज़रत सय्यद शाह बहाउल हक़ दानिशमन्द मोडवी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू ने वासिल बर हक़ (इन्तक़ाल) होने से कुछ दिन पहले ख़ानदानी इजाज़त व ख़िलाफ़त से आप को मुशर्रफ फ़रमा कर अपने छोटे भाई हज़रत सय्यद शाह तुराबुल हक़ क़ुदुस सिंरहू से इरशाद फ़रमाया था के नूर चशम मुहम्मद क़ासिम जिस वक़्त आगरा से यहाँ आवें तो मेरे सफ़ायन (यादगार) और मेरा सज्जादा (जानमाज़) और तबर्रुकात ख़ानदानी उनको अता कर देना के मेरे बाद मेरे जानशीन वही होंगे। चुनानचे आगरा से वापसी के बाद रौनक़ अफ़रोज़ सज्जादए ख़ानदानी हुए! कम व बेश चालीस

साल तक महबूब जल्लो अला हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला अकबराबादी (आगरा) क़ुदुस सिंरहू के मज़ार फ़ाएज़े अनवार पर हाज़िर रहे है! आप के हमअसर मशाएख़ कराम इस बात पर मुततफ़िक़ थे के इस ज़माना में महबूब जल्लो अला हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला क़ुदुस सिंरहू का फ़ैज़ आप से बढ़कर किसी को नहीं हुआ। आप को हज़रत सय्यदना रहमतउल्लाह अलैह से जो रूहानी तालुक़ था उसकी शाहिद आप की किताब "निजाते कासिम" है और इस दयार में जो तरीक़ा अबुल ओलायीया जा बजा जारी है वह सब आप ही का फ़ैज़ान बातनी है। दयार मग़रिब में भी इस तरीक़ा अबुल ओलाइया का शेवा हुज़ूर ही के फ़यूजात बातनिया से हुआ।

आप के पीर रौशन ज़मीर हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू ने एजाज़त व ख़िलाफ़त के साथ ख़िरक़ा विलायत व करामत अता फ़रमाया। और मुरशिद कामिल हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस सिंरहू ने ख़िलाफ़त नाम के दोश बदोश बारे अमानत तफवीज़ फरमाया इस निसबत नामा का ज़हूर कुछ अरसा के बाद हुआ के आपके मुरशिद ज़ादे बरहक़ शम्सुल कौनैन हज़रत सय्यद शाह मुबारक हुसैन क़ुदुस सिंरहू के ख़लफ़ल रशीद किबला कौनैन हज़रत सय्यद शाह मुनिर उद्दीन हुसैन सज्जादा नशीन आस्ताना क़मरिया और फ़रज़न्द औसत हज़रत सय्यद शाह शरफ उद्दीन हुसैन क़ुदुस अल्लाह सिंरहू हुमा ने हज़रत सय्यदुल तरीक़त जद्दे आला सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू से शरफ बैत हासिल किया और मुशर्रफ़ ब ख़िलाफ़त हुए "कैफियतुल

आरफीन, हज़रत जद्दी हाजी सय्यद शाह अता हुसैन क़ुदुस सिंरहू गया।"

ख़ुलासा यह के जिस तरह महबूब जल्लो अला हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला हसनी अलहुसैनी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू ने बारे अमानत व विलायत महबूबुल समद सय्यदुल सादात हज़रत मीर सय्यद दोस्त मुहम्मद बुरहानपूरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू को तफ़वीज़ फ़रमाया था उसी तरह मुरशिद कामिल हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन क़ुदुस सिंरहू ने ख़लीफ़ा आज़म सय्यदुल तरीक़त हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी क़ुदुस सिंरहू को उन नेमात बातनिया से सरफ़राज़ फ़रमाया जो आप को अपने पीर रौशन ज़मीर और आरिफ़ बिल्लाह हज़रत हकीम शाह फ़रहत उल्लाह हसन दोस्त करीम चकि क़ुदुस अल्लाह इसरारहुमा से बतौर रूहानियत अता हुई थी। महबूब जल्लो अला हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला अहरारी क़ुदुस सिंरहू के मज़ार फ़ाएज़ुल अनवार की हाज़िर बाशी और ग़ैर मामूली चिल्ला कशयों ने इस आईना तौहीद में और चार चाँद लगा दिये के देखने वालों को दोश बदोश ज़ात व सिफ़ात की बिजलिया चमकती हुई नज़र आने लगीं। "उसी आईना रौशन से शरमिन्दा क़मर भी था, उसी में जलवा गर अक्स रुख़े खैरुल बशर भी था।"

आपके ख़ुलफ़ की तादाद इस क़दर है के हम बिलइजमाल ही उनका ज़िक्र ख़ैर करने से मजबूर है इस लि उससे एराज़ करके असल मतलब की तरफ़ मुतावज्जह होते है विलादत बा सआदत आपकी 17 शव्वाल 1218 हिजरी बरोज़ पंज शम्बा मुक़ाम शाह टोली दानापुर में हुई। किबला अरबाब मारफ़त हज़रत जद्दी हाजी

सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू ततिम्मा "निजात कासिम" में तहरीर फ़रमाते है। जब आप इलाहाबाद से दानापुर आकर ख़ाना नशीन हुए तो दो या तीन बरस के बाद मीज़ाज मुबारक में आसार अलालत ज़ाहिर हुए रफता-रफता उस मरज़ को तरक़्क़ि हुई इबतेदा में तो बुख़ार था फिर इसहाल कबदी शुरू हो गये कभी आप ने किसी किसम की शिकायत न फ़रमायी जब कभी किसी ने मीज़ाज की कैफ़ियत पूछी तो यह शेर पढ़ दिया।

"दर दम अज़ यारस्त व दरमा नीज़हम
दिल फ़िदाए ऊ शुद व जाँ नीज़हम"

एक रोज़ 3 श्व्वाल 1281 हिजरी को आपकी हालत मरज़ में बहुत तरक़्क़ि हो गयी इन्तेज़ाम नबज़ बिगड़ गया तमाम घर में कोहराम मच गया फ़क़ीर के निकाह की तारीख़ 27 श्व्वाल थी तमाम औरात को इनतेशार हुआ के अब इस साल अनजाम शादी का मुमकिन नहीं। आपको ब नूर क़लब यह अमर दरयाफ़्त हुआ। आप ने मेरी फ़ूफ़ी साहिबा जिन की दुख़तर से मेरा निकाह मुक़र्रर हुआ था बुलाया और फ़रमाया के यह शादी नूर चशम मुहम्मद अकबर मद उमरहु की मेरे पसन्द से हुई है उसकी वालदह को यहाँ मनज़ूर न था मालूम नहीं मेरे बाद क्या वाक़्या पेश आए लेहाज़ा मेरा जी चाहता है के अकबर मद उमरहु की शादी देख लूँ कुछ रोज़ कम कर दो। चुनानचे आपने ख़ुद 27 तारीख़ को 17 तारीख़ से बदल दिया। चुनानचे यहाँ से 16 श्व्वाल को बारात रवाना हुई और 17 तारीख़ को वापस आयी। जब बारात वापस आ चुकि तो आप से अर्ज़ की के हुज़ूर बारात नूर चशम मद उमरहु की वापस आइ आप ने फ़रमाया के

बहुत ख़ूब हम भी तैयार है। और फ़ौरन कैफ़ियत नज़ह शुरू हो गयी। उस वक़्त अजीब हालत थी। बराबर यह शेर विर्द ज़ुबाँ था।

"दरदम अज़ यारास्त व दरमाँ नीज़हम
दिल फ़िदाए ऊ शुद व जाँ नीज़हम"

थोड़ी देर के बाद आप ने बा आवाज़ बलन्द इरशाद फ़रमाया के देख़ो 5 शम्में रौशन है और तमाम ख़ानकाह में एक ऐसी ख़ुशबू फ़ैल गयी के हर शख़्स का दिमाग़ मोअत्तर हो गया। चन्द मिनट आप को सुकूत रहा बाद उसके आपने यह रूकु पढ़ा "अल्लाहो नूरुस्समावाते वल अर्ज़" जब रूकु तमाम हुआ ख़ुद ब ख़ुद तमाम हाज़रीन की ज़बान पर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेउन जारी हो गया। और रूह मुबारक ज्वार रहमत परवर दिगार तआला शानहु में आसूदा हुई मज़ार अक़दस आप का हस्ब वसियत आप के मनेर शरीफ़ में हज़रत मख़दूम यहया मनेरी क़ुदुस सिर्रहू के पाएंती में है। तारीख़ विसाल इस शेरसे ब तमाम व कमाल निकलती है।

"तारीख़ व रोज़ो साल व माह इन्तेकाल ऊ
योमुल ख़म्स अज़ मह श्व्वाल हफ़दह अस्त"

जब आपका जनाज़ा मुबारक दानापुर से रवाना होकर मनेर शरीफ़ पहुँचा तो हनोज़ क़बर शरीफ ना मुरत्तब थी लेहाज़ा ताबूत मुबारक सेहन दरगाह हज़रत सय्यदना अहमद यहया मनेरी क़ुदुस सिर्रहू में रख दिया गया के दफअतन एक आवाज़ नेहायत खुशअलहान दर्दनाक किसी तरफ़ से आने लगी के सब आदमियो के कान उसी आवाज़ की तरफ़ लग गये। एक फ़तीला रौशन करके हर

दरख़्त के क़रीब जाते थे मगर उस आवाज़ की कैफ़ियत मालूम ना होती थी और हज़रत वालिद माजिद क़ुदुस सिर्रहू यानी (शेख तरीक़त हाजीउल हरमैन शरीफ़ैन हज़रत मौलाना सय्यद शाह सज्जाद दानिशमंद) जनाज़ा मुबारक के सामने मुशकिब बैठे थे। जब आपने मुराक़बा से सर उठाया और आँखे खोली वह सदा मौक़ुफ हो गयी उस वक़्त आपने इरशाद फ़रमाया के मैने यह बात दरयाफ़्त की थी के देखूँ अब हज़रत भाई साहब का क़लब शरीफ़ किस रविश से जारी है यह उसका जवाब था। "उनके क़्लबे अनवर से हनोज़ अल्लाहु" की सदा (आवाज) जारी थी क्या बयान हो के उस वक़्त लोगों की क्या हालत हुई है अल्ल ख़ुसूस वह लोग जो आप से क़सद बैत का रखते थे और ब वजह मेनलवजुह महरूम रह गये थे मगर क्या कर सकते थे गया वक़्त फ़िर हाथ आता नहीं। फ़िल हक़ीक़त औलिया अल्लाह का इनतेक़ाल नक़ल मकान है। उनकी अरवाह इस जहाँ से उस जहाँ में पैदा होती है।

आपके बारे में हज़रत मुफ़्ती सदरुद्दीन साहब फ़रमाते थे के एक रोज़ हज़रत महबूब-ए-इलाही निजामुद्दीन औलिया के उर्स में जनाब हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी रह० अ० को कैफ़ियत आई और बादशाह बहादुर शाह जफ़र भी उस मजलिस में मौजूद थे। उसमें कुछ ऐसे लोग भी खड़े थे जो इस कैफ व हाल से बेगाना थे और ब नज़र इन्कार आपकी कैफ़ियत को देखकर तअज्जुब कर रहे थे आपने उनकी तरफ़ देखते हुए एक नारा फ़रमाया। वो कोई 8-10 आदमी थे सब बेहोश होकर गिर पड़े और फ़िर तो मजलिस का यह रंग हुआ के शायद ही कोई शख़्स गिरया व बुका यानी रोने से खाली

हो। यह हाल देखकर बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र को हज़रत अल्लामा सय्यद शाह क़ासिम दानापुरी की मुलाक़ात का शौक हुआ। मुझे यानी "हज़रत मुफ्ती सदरुद्दीन" को आपकी जनाब में दावत का पैग़ाम लेकर भेजा लेकिन ख़ुश दिली से हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी रह० अ० ने महल में जाने से इनकार कर दिया। उस वक़्त आपकी बे रयाई और मक़ामात व दरजात की हक़ीक़त मालूम हुई।

हज़रत मुफ़्ती सद्रुद्दीन रह० अ० फ़रमाते थे के जिसने सहाब-ए-किराम की ज़यारत न की हो वह हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू को देखे। "अज़ हवाला तज़किरातुल किराम, पेज नं०-705, 708, लेखक मौलवी सय्यद शाह मुहम्मद कबीर अबुल उलाई, 1924 इस्वी।"

तसनिफ़ात में नेजात क़ासिम, एजाज़ ग़ौसिया, फायज़ुल बरकात, अनवारे क़मरिया, इनशाए फ़रमान अलीम, क़ाबिल ज़िक्र है। फ़ाएजुल बरकात और अनवार क़मरिया के क़लमी नुसख़े ख़ानकाह सज्जादिया अबुलउलाईया के कुतुब ख़ाना मे महफ़ूज है। दूरबीन निगाहें तसानीफ़ के मुताला ही से तबहुर इलमी का सुराग़ लगा सकती है।

ज़िक्र ख़ैर क़ुतुबुल इरशाद यादगार इमाम ज़ैनुल एबाद जद्दे अमजद हाजी हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द अबुल ओलाई दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू

आप हज़रत मख़दूम मौलाना सय्यद शाह तुराबुल हक़ मोड़वी "सुम्मा दानापुरी" दानिशमन्द क़ुदुस सिंरहू के छोटे बेटे है। विलादत बा सआदत आप की 2 शमबा के रोज़ सुबह सादिक़ के वक़्त 21रजब 1231 हिजरी को मुक़ाम दानापुर में हुई तारीख़ विलादत मज़हर अजाएब 1231 है।

अपने बड़े भाई हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद कासिम दानापुरी क़ुदुस सिंरहू के आग़ोश शफ़क़त में परवरिश पाई। 16 बरस की उमर में मसदर कशफ़ व करामात हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात क़ुदुस सिंरहू से शरफ़ बैत हासिल फ़रमाया। इनतेसाब तालीम बातनी अज़ इबतेदा ता इनतेहा सय्यदुल सक़लैन आला हज़रत सय्यद शाह कमरउद्दीन क़ुदुस सिंरहू से फ़रमाया।

अपने बड़े भाई सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू से एकतेसाब सिलसिला आबाई का फ़रमाया और मजाज़ मुतलक़ हुए। और हज़रत अक़दस के विसाल के बाद सदर नशीन मसनद आबाई हुए। पीर रौशन ज़मीर हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात और मुर्शिद हक़ आगाह हज़रत सय्यद शाह क़मर उद्दीन हुसैन क़ुदुस अल्लाह सिंरहुमा ने भी इजाज़त व ख़िलाफ़त नामा से सरफ़राज़ फ़रमाया सूफी साफ़ि हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद यहया क़ुदुस सिंरहू फरमाते है :-

"बरकाते के अज़ अबुल बरकात
याफ्त बेरुँ बूदज़े शरह व बयान
क़मर उद्दीन हुसैन मुर्शिद पाक
क़द ऊरा अमीने राज़ निहाँ"

आँ हज़रत के क़ता तारीख़ विसाल के यह दो शेर है। शेर पढ़िए और उन रूहानी ताल्लुक़ात के तासुरात मुलाहज़ा फ़रमाइए के पीर व मुरीद और मुर्शिद व मुस्तरशद के ज़बान फ़ैज़ तरजुमान पर यह मिसरा जारी है।

"उदरमन व मन दरवे चूँ बू ब गुलाब अन्दर"

यह उनही रूहानी तालुक़ात के तासुरात थे के मुर्शिद ज़ादए कौनैन हज़रत सय्यद शाह अज़ीज़ उद्दीन हुसैन व हज़रत सय्यद शाह रज़ि उद्दीन हुसैन क़ुदुस अल्लाह सिरहुमा सज्जादा नशीनान ख़ानकाह क़मरिया मीतन घाट पटना सिटी की बैत हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द अबुल उलाई दानापुरी अक़दस रहमतुल्लाह अलैह के दस्त हक़ परस्त पर वाक़ा हुई और दोनो हज़रात मुरीद होकर और ख़िलाफ़त लेकर यके बाद दिगरे ख़ानकाह कमरिया, मीतन घाट, पटना सिटी में रौनक़ अफ़रोज़ सज्जादा नशीन आबायी हुए।

एक तरफ हज़रत सय्यदना अमीर अबुलउला हसनी अल हुसैनी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू के फ़योज़ात बातनिया का ज़हुर हो रहा था तो दूसरी तरफ़ अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना मौला अली मुरतज़ा शेरे ख़ुदा करम अल्लाह तआला वजहु के इश्क़ व मुहब्बत से सीना बे कीना मामूर हो रहा था। हज़रत सय्यदना रहमतुल्लाह अलैह के उर्स शरीफ़ के अनजाम व इनसराम के लिए आगरा तशरीफ़ ले जाया

करते थे। और हज़रत मौलाए कायनात कर्म अल्लाह तआला वजहु का उर्स मुबारक ख़ानकाह दानापुर में बसद ज़ौक़ व शौक़ फ़रमाया करते थे और उन्हीं दोनों उर्सो के लिए मुरीदान ब एख़्तेसास पुर ताकीद मजीद फ़रमाया करते थे।

एक दफ़ा हज़रत मौलाए कायनात के उर्स शरीफ़ की मजलिस में आलमे वजद व कैफ़ में नारा के साथ यह मिसरा सुना गया अज़ इबतेदा ता इनतेहा यही मिसरा विर्द ज़ुबान रहा।

"फ़नाए ज़ाते अली रजि० हूँ अजब मुक़ाम में हूँ"

उस मजलिस में अक्सर उमराए अज़िमाबाद (पटना) भी शरीक थे। मजलिस के बाद दूसरा मिसरा इरशाद फ़रमा कर उसको मतला बना दिया! अब इसका लुतफ मुलाहज़ा फ़रमाइए।

"मैं मुक़तदी भी हूँ मैं ही सफ़े इमाम मे हूँ
फ़नाए जाते अली हूँ अजब मुक़ाम मे हूँ"

यह मतला उस मजलिस की कैफ़ियत बातनी की हक़िक़ी तस्वीर पेश कर रहा है।

सय्यदुल तरीक़त हज़रत जद्दे अमजद अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू के उर्स का इनतेज़ाम शमसुलकौनैन जद्दे अमजद हज़रत सय्यद शाह अता हुसैन क़ुदुस सिंरहू (सज्जादा नशीन ख़ानकाह मुनएमिया अबुलओलाइया, गया) ने अपने जिम्में ले लिया था। इसमें एक राज़ था जिसका मतलब अरसा दराज़ के बाद समझ में आया। यानि हज़रत जद्दी हाजि सय्यद शाह अता हुसैन क़ुदुस सिंरहू ने भी उसी महीने और उसी

तारीख़ में विसाल फ़रमाया। अब तक यह उर्स शरीफ़ ख़ानकाह मुनएमिया अबुल ओलाइया गया में ब कमाल शान शौकत से होता है औ मुतावस्सिलिन ख़ानकाह मुनएमिया अबुलओलाइया के लिए यह रूही इत्तेहाद होता है। ख़ानकाह मुनएमिया अबुलओलाइया, गया के सज्जादा नशीन अख़ि मोहतरम सय्यद शाह हस्साम उद्दीन अहमद साहब है। माशा अल्लाह ख़ानकाह की रौनक़ बढ़ा रहे है। बुज़ुर्गो का नाम रौशन कर रहे है। अल्लाहहुम्मा ज़िद फ़र्द। मैं अपने इस ग़ैर मोकम्मल बयान को ततिम्मा निजाते क़ासिम के एकतेबासात से मुकम्मल करके इस में चार चाँद लगा देना चाहता हूँ और इस आईना हक़ नुमा से मुतवस्सिलिन को फ़िर एक दफ़ा रूशनास कराना चाहता हूँ।

"दर पसे आईना तुतीये सिफतम दाशता अन्द
आँचे उस्ताद अज़ल गुफ़्त हुमा मी गोयम"

मेरे क़िबला व काबा जद मोहतरम हज़रत अल्लामा शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू हुज़ूर की स्वानेहयात क़लमबन्द फ़रमाते हुए ततिम्मा निजात क़ासिम में तहरीर फ़रमाते है।

शुरू ही से आप को तसव्वुफ़ की तरफ़ तवज्जा पैदा हुई और ज़माना तफ़ुलियत में भी लहब लहीब की तरफ़ जैसा के कम उम्र का मामूल है इत्तेफ़ाक़ ना होता था। ख़ुश पोशाकी व फ़न सिपहगरि की तरफ़ भी तबियत मुबारक बहुत माएल थी और क़ुवत जिस्मानी में आप अपने वक़्त के लोगों में क़ाबिल-ए-मिसाल थे। हुस्न सूरत में युसुफ सानी इख़लाक़ निहायत पाकिज़ा आप के बाज़ हम उमर बयान

करते है के एक रोज़ हम लोगों में यह मशवरह हुआ के हर शख़्स जिस को जो चीज़ निहायत मरग़ूब हो वो अल्लाह के वासते छोड़ दे। आप को पान बहुत मरग़ूब था आपने पान छोड़ दिया चुनानचे ता उमर आपने फ़िर कभी पान न ख़ाया और हम लोगों में से कोई भी उस अहद पर क़ायम ना रहा। आपके उमर शरीफ़ का बहुत बड़ा हिस्सा हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद कासिम दानापुरी रज़ि अल्लाह तआला अन्हों के साथ अकबरा बाद शरीफ़ (आगरा) में हज़रत सय्यदना रज़ि अल्लाहो तआला अन्हों के मज़ार मुबारक की मुजावरत में बसर हुआ। आप को भी मिस्ल अपने बेरादर बुर्ज़ुग के हज़रत सय्यदना रज़ि अल्लाह तआला अन्हों से रूही फ़ैज़ था। और आप का पहला सफर हरमैन अल शरिफैन का 1275 हि में वाक़ा हुआ। और जब पहली बार दौलत हज से मुशरर्फ़ होकर मदीना तय्यबा हाज़िर हुए और आठ महिना तक हाज़िर रहे। इसी दरमियान आपने आलमे मुराग़बा में देखा के ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाहो अन्हा ने अपना दस्ते शफ़क़त आपके सरे मुबारक पर फ़ेरा और फ़रमाया के हज-ए-मबरूर तुमको मुबारक हो। उसका असर भी ज़ाहिर हुआ के रोज़-ब-रोज़ आपके तक़वा और रियाज़त में तरक्क़ी होती गयी। (तजकिरहतुल केराम, पेज नं० 711, 1924 ई०, लेखक मौलवी सय्यद शाह मुहम्मद कबीर अबुल उलाई दानापुरी)।

हुज़ुर-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व अलेहि वसल्लम कि बारगाहे अक़दस (रौज़ा मुबारक)। पर हाज़िर रहे तो रुखसत के वक़्त आप को हुज़ुर रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से हुक्म हुआ के तुम अजमेर जाओ। और दो हज करके

वापस आए। चुनानचे आप हस्बुल हुक्म अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुए और ज़माना दराज़ तक हाज़िर रहे फ़िर हज़रत ख़्वाजा मोईन उद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़िअल्लाह तआला अन्हो के इजाज़त के बाद दानापुर ख़ानकाह वापस आकर ख़िलवत नशीन हो गए।

बैत किसी की बग़ैर इसरार बलीग़ के नहीं लेते थे और यही वज़ह थी के अक्सर मोतक़िदीन आपके शरफ़ बैत से महरूम रहे। यानी वफ़ात आपकी दफअतन हुई।

फ़िर तीसरा हज 1289 हिजरी में किया और 1290 हिजरी में हज करके वापस आए। इसी हज के दौरान का यह वाक़्या बहुत मशहूर है के एक दिन एक सय्यद साहब ने आपकी दावत की। उस रात आप मामूल के मुताबिक़ रौज़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मे हाज़िर न हो सके। आपने रात में ख़ाब में देखा के आक़ा-ए-नामदार सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम फ़रमा रहें है के अए फ़रज़न्द तुम यहाँ गोश्त खाने आए हो या हमारे पास आए हो। आपको बेहद सदमा हुआ। उसी रोज़ अहद किया और फिर पूरी ज़िन्दगी गोश्त नहीं खाया। (अहसनुस्सेयर, मारूफ़ ब तारीख़ ख़्वाजा अजमेर पेज नं० 173, लेख़क मुनशी मुहम्मद अकबर जहाँ, रियासत धोलपुर, आगरा)।

हज की तारीख जनाब शाह मुम्मद यहया साहब अज़िमाबादी

जनाब सय्यद सज्जाद हक़ बीन	के दर तौहीद चूँ मनसूर आमद
दोबारह दर मदिना रफ़्त अज़ सर	ज़े दिदार नबि पुर शोर आमद
चूँ मंदाने हज बैतउल्लाह फ़रमूद	ज़े सद नूर व सफ़ा मामूर आमद
जमाल शाहिद बे कैफ़ दर कैफ़	तमाशा कर्द व बस मसरूर आमद
दिलम दर फ़िक्र तारीख़ रुजु अश	बर्तज़ नाज़ व नौ दस्तूर आमद
क़लम बंगाशता वे दर वतन बाज़	ज़े नूरे मुस्तफ़ा पुर नूर आमद

रहमत उल्लाह अलैह ने नज़म की है! क़ता:–

चौथा हज 1294 हिजरी में आपने कमाल जज़्ब व शौक़ में निहायत बे सरो सामानी से सफ़र हज फ़रमाया मगर यह ख़बर आम हो गयी। अक्सर उमरा व अराकिन शहर दानापुर के रेलवे स्टेशन तक साथ में गये उनमें अख़ि मुकर्रम व मुअज्जम जनाब हाफ़िज़ सय्यद अहमद रज़ा ख़ाँ साहब भी थे। सब लोगों का जो अज़िमाबाद (पटना) से तशरीफ़ लाए थे यह क़सद हुआ के डाक गाड़ी रेल पर सवार होकर आप रवाना हो जाऐं क्यों के पहले दानापुर से डाक गाड़ी पूरब जाने वाली खुल जाती है तब पसिंजर गाड़ी पश्चिम जाने वाली खुलती है। हाफ़िज़ साहब ने आकर हुज़ूर में अर्ज़ किया के हम सब हुज़ूर को रुखसत करने को हाज़िर हुए थे मगर मामला बर अक्स हो गया अब डाक गाड़ी आने वाली है पहले डाक गाड़ी यहाँ से रवाना हो जाएगी उसके बाद हुज़ूर की गाड़ी खुलेगी। आप ने तबस्सुम होकर फ़रमाया के फ़िर क्या इरादा है पहले हमही जाऐं। हाफ़िज़ साहब ने अर्ज़ किया के दिल तो यही चाहता है के हुज़ूर को सवार करके हम सब रवाना हों। फ़िर इरशाद हुआ बहुत अच्छा अल्लाह तआला शानहु क़ादिर है। चन्द मिनट के बाद हाफ़िज़ साहब जो चहल क़दमि करते हुए स्टेशन में गये तो मालूम हुआ के डाक गाड़ी बिहटा स्टेशन में पहुँच कर बिगड़ गयी। अब पहले पसिंजर गाड़ी रवाना हो जाएगी तब डाक गाड़ी दानापुर आएगी। इस ख़बर के सुनते ही लोगों की एक अजीब हालत हो गयी उसी वक़्त नूर चशम ख़ैर उद्दीन सल्लमहु ने स्टेशन के सबज़ा ज़ार में बैत की।

"औलिया रा हस्त क़ुदरत अज़ एलाह
तीर जस्ता बाज़ गरदानद ज़े राह"

बस अस्र की नमाज़ पढ़कर आप रवाना मक्का मोअज़्ज़मह हुए। और 4 महिना बाद रौनक़ अफ़रोज़ वतन हुए।

पाँचवा हज फ़िर 1296 हिजरी में आपने इरादा मदीना तय्यबा फ़रमाया इस बार आपके साथ ख़्वाजा वहीद जान थे। और इस बार आपकी दौलत हमरिकाबि से जनाब सय्यद शाह अज़ीज़ उद्दीन हुसैन साहब मुशर्रफ़ थे और यह पाचवाँवा हज आख़री हज था। जनाब शाह मुहम्मद यहया साहब रहमतउल्लाह अलैह अज़िमाबादी ने इस सफ़र हेजाज़ के इरादा की चन्द तारीख़ें फ़रमाई थी। मुझे एक ही तारीख़ याद रह गयी क्या ख़ूब तारीख़ है।

"जनाब किबला मन काबा मन हज़रत सज्जाद
के हक़ करदा तमाशा दर जमाल काबा बे परदा
माअल ख़ैर आम्दा सुए वतन तारीख़ आँ गुफ़तम
के बासद एहतेराम व नूर आमद क़िबला अज़ काबा 1296 हिजरी"

आप अक्सर फ़रमाते थे के बीमारी तवील होकर मरना पसन्द नहीं आता। दो एक रोज़ की बीमारी में अल्लाह उठाले चुनानचे यहि हुआ। आप अपने जद हज़रत मख़दूम अख़वन्द शेख़ रहमत उल्लाह अलैह के उर्स में नोआबादा तशरीफ़ ले गये। उर्स में जाने से एक रोज़ क़बल 20 रुपया दिया के ख़र्च तजहीज़ व तकफ़ीन इसी रुपया से हो। जब नोआवादा पहुँचे और आप मजलिस उर्स में शरीक भी हुए। उस वक़्त तक कुछ आसार बिमारी के ज़ाहिर न हुए। अचानक आप मजलिस से उठकर अपने ख़िलवत ख़ाना में ख़िलाफ़ मामूल तशरीफ़ फ़रमा हुए। फ़रमाया के लरज़ा के साथ बुख़ार आया है। और आप

की मरज़ी हुई के बहुत जल्द दानापुर ख़ानकाह ले चलो। चुनानचे सुबह होते ही सब लोग आपके साथ दानापुर वापस आए। लेकिन दानापुर पहुँच कर तीसरे रोज़ आप का विसाल 14 ज़िकादह 1298 हिजरी में हुआ। आपका मज़ार शरीफ़ शाह टोली, दानापुर में ज़ियारतगाह ख़ास व आम है। (तज़किरहतुल केराम, पेज नं० 712, 1924 ई०, लेख़क मौलवी सय्यद शाह मुहम्मद कबीर अबुल उलाई)।

मैं मज़मून ज़ेर क़लम का मस्वदा मुरत्तब कर चुका था के सय्यद हामिद अली साहब अकबराबादी (आगरा) पेनशनर सब डिपटि कलक्टर रियासत भरतपुर का एक अहम मकतूब में एक मज़मून मौसूल हुआ। इस मकतूब का निचोड़ सिर्फ यह था के यह मज़मून मुनसलिका मेरे क़िबला व काबा मुर्शिद व मौलाई हज़रत हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू के स्वानेहयात के साथ तज़किरा में जरूर बिल जरूर शाया कर दिया जाए। उनकी दरख़ास्त नज़र अन्दाज़ नहीं की जा सकती थी। इस लिए वह मज़मून जिसको इस सिलसिले की एक कड़ी कहा जा सकता है नाजरीन की मालुमात के लिए पेश करता हूँ। सय्यद हामिद अली साहब की उमर इस वक़्त 80 बरस से ज़्यादह है और यह उस ख़ानदान के चशमो चिराग़ है जिसकी वज़ाहत ज़ाहरी व बातनि आगरा में मिसाल वाली है। उनके नाना आगरा के क़ाज़ी थे वह और उनका तमाम ख़ानदान हज़रत अक़दस रहमत उल्लाह अलैह (शैख़ तरीक़त हज़रत सय्यद शाह सज्जाद दानापुरी रह० अ०) का दस्त गिरफ़ता (मुरीद) और हलक़ा बगोश था।

नक़्ल मजमून सय्यद हामिद अली साहब–

मेरे नाना जनाब हक़ीम सय्यद मुहम्मद निज़ाम अली ख़ाँ साहब मरहूम व मगफ़ूर जिला मुरादाबाद में मुनसिफ थे। एक रोज़ कचहरी से मकान पर तशरीफ़ ला रहे थे रास्ता में एक 5 साल का लड़का ख़ड़ा हुआ रो रहा था। दरयाफ्त किया तो मालूम हुआ के वह लड़का यतीम और लावरिस है और उसका नाम बाक़ि है। लड़के को मकान पर ले आए और वह परवरिश पाने लगा। जब वह लड़का 9-10 बरस का हुआ और समझ आनी शुरू हुई तो उसको समझ बहुत ख़राब आयी और उसकी उमर जियो-जियो बढ़ती गयी ख़यालात भी ख़राब होते गये। हर चन्द हिदायत की जाती थी मगर उसकी बद किरदारिया तरक़्क़ि करती जाती थी और बदमाशों की सोहबत में रहा करता था। जब वह 17-18 साल का हो गया और तालीम व तादीब कुछ असर पज़ीर न हुआ तो उसको घर से निकाल दिया गया। उस लड़के बाक़ी को निकाले हुए 22-23 साल का ज़माना हो चुका था इस अरसा में मेरे नाना साहब का भी इनतेक़ाल हो गया।

एक रोज़ मेरे मामू हक़ीम सय्यद मुहम्मद वाजिद अली ख़ाँ साहब मरहूम बाद नमाज़ ज़ोहर अपने दिवान ख़ाना में तशरीफ़ रखते थे के एक शाह साहब आए और मामू साहब के पाँव उन्होंने पकड़ लिए। मामू साहब घबरा कर खड़े हो गये और उनसे मुसाफ़ा करके अपने बराबर उनको बिठा लिया और दरयाफ़्त किया के जनाब कहाँ से तशरीफ़ लाए है? अगर कोई ख़िदमत मेरे लाएक़ हो तो इरशाद फ़रमाऐं। शाह साहब ने कहा के आप मुझको भूल गये। मैं आपके टुकड़ो का पला हुआ वही बाक़ि हूँ। अब मेरा नाम मेराज शाह है।

यहाँ आगरा में आऐ हुए मुझे दो रोज़ हुए। जनाब मुनसिफ़ साहब के इनतेक़ाल का हाल भी मुझे मालूम हो गया आज मैं पूछता हुआ आपके पास आया हूँ। अब मैं जाता हूँ। इस वक़्त ठहर नहीं सकता मगर जब तक आगरा रहूँगा एक मरतबा रोज़ आपके पास आया करूँगा। मामू साहब ने कहा के मुद्दत दराज़ के बाद तो आप आए और अब जाते है मेरी तो यह ख़ुशी थी के आप जब तक आगरा में क़याम करें मेरे ही पास रहें। शाह साहब ने कहा के आप से तो किसी हालत में मुझ को तकलीफ़ हो ही नहीं सकती है मगर इस वक़्त आप मुझे इजाज़त दे दें। एक बार रोज़ मैं आप के पास आया करूँगा और अव्वल से आख़िर तक अपनी दास्तान सुनाऊँगा। यह कह कर शाह साहब मेराज शाह चले गए। तीसरे दिन शाह साहब आए मामू साहब के साथ वह बिल्कुल बे तकल्लुफ़ थे। मामू साहब ने कहा के मेराज शाह तुम को हमारे यहाँ से गए हुए 22-23 साल से ज़्यादा का अरसा हुआ आख़िर उस मुद्दत में तुम ने क्या किया? और कहाँ कहाँ रहे? मेराज शाह ने कहा मेरे हालात बहुत तूल व तवील है और तन्हायी की ज़रूरत है और इस वक़्त आपको फ़ुरसत नहीं है इनशा अल्लाह कल मैं अपनी दास्तान बयान करूँगा! चुनानचे दूसरे रोज़ मेराज शाह हस्ब वायदा आए उस वक़्त बिल्कुल तनहायी थी अपनी कहानी इस बयान करनी शुरू की।

जब मैं आपके यहाँ से निकाल दिया तो मैं अपने उन्हीं बदमाशों के गिरोह में जिन की सोहबत में रहता था दाख़िल हो गया। चन्द रोज़ में जो कुछ मेरे पास था वह ख़र्च हो गया। तो उन लोगों ने भी मुझसे बे एतनाइ व बेरूख़ी शुरू कर दी। रफ़ता-रफ़ता किनारा कर

गए। जब मेरी हालत फ़ाक़ा कशि की पहुँची तो मैंने नौकरी तलाश की और चन्द जगह मुलाज़मते भी की। मगर अपनी बद अफ़आलि की वजह से निकाल दिया जाता था बिल आख़िर मजबूर हो कर फ़क़ीरी इख़्तेयार करली। वह ज़माना अजमेर शरीफ़ के उर्स का था और अजमेर तक रेल जारी नहीं हुई थी जाने वालों के काफ़ले जाया करते थे मैं भी फ़कीरों के एक क़ाफला के साथ अजमेर रवाना हुआ। इस काफ़ला में एक दरवेश थे उनकी सूरत देखकर मेरे दिल में बे एख़्तेयार उनकी कशिश पैदा हो गयी और उन्हीं के साथ हो लिया। राह में चन्द बार मुझे उन्होंने कहा के हमारा तेरा साथ नहीं हो सकता तुम अपना ठिकाना कहीं और तलाश कर। मैने उनके क़दम पकड़ लिए और कहा के आपके कदमों के सिवा मेरा ठिकाना दीन व दुनिया में कहीं नहीं है मैं आपका क़दम नहीं छोडुँगा वह ख़ामोश हो गए मै उनकी ख़िदमत करता हुआ अजमेर पहुँचा और बाद एखतेताम उर्स जब वह वहाँ से रवाना हुए तो मैं भी उन्हीं के साथ हो लिया। 15-16 रोज़ बाद एक कोहिस्तानी (पहाड़ी इलाक़ा) मुकाम पर पहुँचे एक छोटी सी पहाड़ी थी उसके नीचे बड़े-बड़े दरख़्तों का जंगल दूर तक चला गया था उसी जंगल में एक दरख़्त बहुत बड़ा था उसका साया बहुत वसि था। और वहिं दरख़्त उन दरवेशों का क्याम गाह था इस दरख़्त से 25-30 क़दम के फ़ासला पर एक शिकस्ता सी झोपड़ी थी उसमें एक दरवेश कम्बल ओढ़े पड़े हुए थे। जो दरवेश मुझे अपने साथ लाए थे एक मरतबा रोज़ उस झोपड़े में जाया करते थे। मगर मुझे वहाँ जाने का हुक्म नहीं था चन्द रोज़ के बाद उन दरवेश ने मुझे कुछ शग़ल तालीम किये और मुझसे रयाज़त करानी शुरू की कम व बेश 11 साल मुझसे रयाज़त कराई। बादहु

एक रोज़ वह दरवेश आधी रात के बाद मुझे अपने साथ झोपड़े वाले दरवेश की ख़िदमत में ले गए और दस्ता ब दस्ता उन दरवेश से कहा की या शहनशाह। अब हुज़ूर की एनायत व मेहरबानी का मोहताज है। उन दरवेश ने गर्दन उठाकर मुझको देखा और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने सीना से लगाकर अपनी ज़बान मेरे मुँह में दे दी। उस वक़्त जो मेरी हालत हो गयी उसके बयान को ज़बान साथ नहीं देती। मेरे सुन्ने समझने बोलने यक क़लम रूक गये। 2 साल इसी आलम में मुबतला रहा उन्हीं दरवेश ने जिनके साथ में रहता था मेरा इलाज किया। मेरी तबियत इस्लाह पर आगयी मगर कुछ-कुछ असर बाक़ी था उन दरवेश ने मुझ से कहा के तुम अब सेहराए दकन जाओ वहाँ एक छोटी सी पहाड़ी मिलेगी वहाँ एक दरवेश बुर्ज़ुग रहते है जो बाबा कोहिस्तानी कहलाते है उनकी ख़िदमत करना। चूँके मुझ में अभी कुछ-कुछ वहशत बाक़ि थी मैंने कहा के बाबा कोहिस्तानी को मैं कैसे पहचानूँगा और वहाँ तक कैसे पहुचूँगा न वहाँ का रास्ता जानता हूँ और न बाबा कोहिस्तानी की सूरत से आशना हूँ। कहा के अच्छा हम तुझे बताए देते है यह कहकर उन दरवेश ने मेरी गर्दन अपने बग़ल में दबा ली और कहा देख यह हि जगह है और बाबा कोहिस्तानी भी सामने खड़े है ख़ूब देख ले और पहचान ले इसी वक़्त रवाना हो जा। चुनानचे मैं उसी वक़्त सेहराए दकन को रवाना हो गया। मगर मेरे वहाँ पहुँचने से चन्द रोज़ पहले बाबा कोहिस्तानी का इन्तेकाल हो चुका था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो यह देखा एक छोटी सी पहाड़ी है और उस पर एक ताज़ा क़बर बनी हुई है और बाबा कोहिस्तानी जारूब कशि (मज़ार की ख़िदमत गुजारी) कर रहे है। मैंने उनके पास पहुँच कर और उनके क़दम पकड़कर कहा के बाबा

मुझे ख़ुदा को दिखा दो। उन्होंने मुझे अपने सीना से लगा कर ज़ोर से दबाया और कहा के देख यही ख़ुदा है। मुझे यह मालुम हुआ के एक हरे रंग की चादर निहायत चमकदार नूरानी जिस पर नज़र नहीं ठहर सकती आसमान से जमीन तक पड़ी हुई है और चादर के नीचे एक नूर का फ़ानूस रौशन है और उस में परवाने गिर रहे है। इसी आलम में बाबा कोहिस्तानी की यह आवाज़ के "अब तो तूने ख़ुदा को देख लिया" मेरे कान में आयी और मेरी हालत फ़िर दिगर गूँ हो गयी और पहले से ज़्यादा बदहवास हो गया और बाबा कोहिस्तानी ग़ायब हो गए। इसी हालत जज़्ब में बाबा कोहिस्तानी को तलाश करता हुआ एक सिम्त रवाना हुआ ब हालत रफ़तशि गशत करता फ़िरता था एक दरवेश मिले मैंने उनसे कहा के बाबा कोहिस्तानी कहाँ है? मुझे बता दो। उन्होंने कहा के अच्छा हमारे साथ चलो हम बता देगें। मैं उनके हमराह हो लिया वह मुझे पहाड़ के निचे एक झोपड़ी में जहाँ वह रहते थे ले आए और मुझे अपने पास रख़ा उनकी तवज्जह से मेरी हालत दुरूस्त होने लगी। जब मेरे मिजाज़ में कुछ सलाहियत पैदा हो गयी तो उन्होंने कुछ शग़ल बताए और कुछ रियाज़ता (ज़िक्र और वज़ीफ़ा) भी कराया।

2 साल से ज़्यादा मैं उनकी ख़िदमत में रहा बादहु उन्होंने मुझे रूख़स्त कर दिया और कहा के अब तुम जाओ यहाँ रहने का हुक्म नहीं है। चुनानचे अब मैं सहराये दकन से आगरा में आया हूँ। मामु साहब ने कहा के मेराज शाह दरवेशाँ कामिल इलम किमया, रीमिया, सिमया के भी माहिर होते है आप भी अगर जानते है तो हमे भी कुछ दिखाएं। मेराज शाह ने कहा के ख़ुदाए तआला इमतेहान्न सालिक के सीना में यह बाते डाल देता है अगर उसपर दुनिया ग़ालिब आ गयी

तो फ़िर दीन व दुनिया कहीं ठिकाना नहीं लगता और उसकी तमाम रियाज़त नीस्त व नाबूत हो जाती है। अगर आप देखना चाहते है तो मेरे साथ जंगल में चले। चुनानचे मेरे मामु हकीम सय्यद मुहम्मद वाजिद अली ख़ाँ साहब मरहूम और मेरे चचा मुहम्मद ख़ादिम हुसैन ख़ाँ साहब मरहुम और मुहम्मद आरिफ़ अली ख़ाँ साहब मरहूम मेराज शाह को अपने साथ क़िला आगरा के पिछे रूमि ख़ाँ के टीलो के जंगल में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर मेराज शाह ने कहा के आप जो कुछ देखना चाहते है बतलाएं। मामु साहब ने कहा के पहले तो आप हमे सोना बनाकर दिखावें। मेराज शाह ने कहा के जो चीज़ आप कहें वहीं सोना हो जाए। मामु साहब ने चारों तरफ़ देखा तो 10-12 क़दम के फ़ासले पर बैल का एक सींघ पड़ा हुआ था कहा के यह सोना हो जाए। मेराज शाह ने उसी सींघ की जानिब देखा और कहा के यह तो सोना ही है उठा लाओ अच्छी तरह देख लो और ब ख़ुबी उसका इमतेहान करो। मामु साहब वह सोना उठा लाए। सब ने ख़ूब देखा और जाँचा तो खालिस सोना था। मेराज शाह ने कहा के आप इसको लेजाएं और अपने काम में लाएं मामु साहब ने कहा के ख़ुदा के फ़ज़ल व करम से हमे जरूरत नहीं है। सिर्फ़ आप की आज़माइश मंज़ूर थी और सोना वहीं फ़ेक दिया। और मेराज शाह से कहा के एक बात और हमे दिखा दिजिए और वह बात यह है के अपनी रूह किसी मुर्दा जानवर में ले जाकर दिखाईये। मेराज शाह ने कहा के अच्छा कोई मुर्दा जानवर हो तो यह भी मैं दिखा दूँ मगर बा वजूद तलाश व कोशिश कोई मुर्दा जानवर जंगल में दस्तयाब नहीं हुआ यहाँ तक के रात की तारिकी बढ़ने लगी तो मेराज शाह के साथ सब वहाँ से चले आए।

उन्हीं दिनो में हज़रत किबला व काबा जनाब मौलाना व मुर्शिदना हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और मेरे नाना साहब मरहूम के मकान पर क़याम फ़रमाया। एक रोज़ ऐसा इत्तेफ़ाक़ हुआ के मेराज शाह मेरे मामु साहब के पास बैठे हुए थे के हज़रत क़िबला व काबा मौलाना व मुर्शिदना सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस सिंरहू अपने कमरे से जरूरतन बाहर तशरीफ़ लाऐ और ख़िदमत गार से कुछ फ़रमाकर कमरे में तशरीफ़ ले गए। मेराज शाह ने भी देखा और मामु साहब से पूछा के आप कौन बुर्जुग है?

मामु साहब ने हज़रत किबला व काबा (हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी रह० अ०) के महामिद व फ़ज़ाएल बयान किए। मेराज शाह ने कहा के मुझे तो ढ़कोस्ला मालूम होता है। मामु साहब ने गुस्सा होकर फ़रमाया के तुमको बसीरत नहीं है और न हक़ व बातिल की तमीज़ कर सकते हो। मेराज शाह ने कहा आप नाराज़ न हों मैं कल आपको बता दूँगा और उसी वक़्त चले गए।

पाँचवी रोज़ जब मेराज शाह आए तो उनकी हालत निहायत ख़राब थी जैसे कोई बरसों का बिमार है चेहरा ज़र्द और बशरे से ज़ोफ़ व ना तवानायी के आसार नुमायाँ थे। मामु साहब ने मेराज शाह की यह हालत देखकर दरयाफ़्त किया के यह क्या हालत हो गयी? मेराज शाह ने कहा मैं अपनी मुसिबत तो फ़िर बयान करूँगा पहले आप मुझे उन बुर्जुग की ख़िदमत में ले चलें और मुझे वहाँ पहुँचाकर आप वहाँ न ठहरें फ़ौरन चले आएं। चुनानचे मामु साहब मेराज शाह को हज़रत क़िबला व काबा (हाजि सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद

दानापुरी रह० अ०) के हज़ुर में पहुँचाकर चले आए। थोड़ी देर में मेराज शाह वहाँ से आए तो मामु साहब ने कहा दफअतन आपकी हालत ख़राब क्यों हो गयी। मेराज शाह ने कहा के मैं अपने शामते आमाल से एक बहुत गुस्ताख़ि का मुजरिम हुआ उसी की पादाश में मुबतला हूँ। मामु साहब ने कहा के मेरी समझ में तो तुम्हारा यह मोअम्मा नहीं आया। मेराज शाह ने कहा के जिस रोज़ में आप से कह कर गया था के मुझे तो ढ़कोस्ला मालूम होता है कल सहि तौर से बताऊँगा। उसी रोज़ रात को मैंने उन (हज़रत किबला व काबा व मुर्शिदना हाजि सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस र्सिरहू) पर "सैफ़ दकन" (जादु) मारे। उन्होंने फ़ौरन मुझ पर लौटा दिए अगर मैं ज़रा भी ग़ाफ़िल होता तो मेरे दो टुकड़े हो जाते और किसी तरह भी सलामत नहीं रहता चार रोज़ में बड़ी मुशकिल से इस क़दर तबियत संभलि है के आज पाँचवे रोज़ यहाँ तक आया और जनाब शाह साहब (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी रह० अ०) से अपना क़ुसूर माफ़ करा लिया। अब मुझ को इतमिनाने कामिल हो गया। दो रोज़ में बिल्कुल तन्दुरूस्त हो जाऊँगा अभी मुझ में ताक़त नहीं आई है जाता हूँ दो रोज़ बाद आऊँगा।

मामू साहब ने जनाब क़िबला व काबा मौलाना व मुर्शिदना हाजि सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस र्सिरहू की ख़िदमत में जुमला हालात मज़कूरा बाला बयान किए तो हुज़ुर ने फ़रमाया के ताज्जुब है मेराज शाह राज़ की बातें भी कह दिया करते है। मामु साहब ने अर्ज़ किया के मेराज शाह का मुक़ाम क्या है? हुज़ुर ने फ़रमाया के उसकी मिसाल यह है के एक शख़्स को रेल में बिठा

कर गाड़ी के सब दरवाज़े बन्द कर दे और कलकत्ता पहुँचकर उस शख़्स को उतार दिया उसने कलकत्ता की सैर की और वहाँ के मुक़ामात भी देखे लेकिन दरमियानी मनाज़िल के हालात से वह बिलकुल ना वाक़िफ़ रहेगा। जो सालिक मंजिल ब मंजिल तरक़्कि कर के मुक़ाम मक़सूद में नहीं पहुँचता उसकी कैफ़ियत ऐसे ही होती है। तालिब का फ़र्ज़ यह है के अपनी ज़ात को मुर्शिद के हाथ में दे दें और मुर्शिद जो इरशाद फ़रमाए उसी तरीक़ा और उसी तरतीब से मनाज़िल तय करे जरूर कामियाब होगा।

फ़क़त

राक़िम सय्यद मुहम्मद हामिद अलि ख़ाँ साहब, पेनशन याफ़ता नाएब तहसिलदार रियासत भरतपुर, ख़ल्फ़ सय्यद मुहम्मद असग़र अलि ख़ाँ साहब।

पंच सरदार राज मिम्बर कौनसिल व डिप्टि कलेक्टर रियासत भरतपुर।

ज़िक्र ख़ैर हज़रत क़िबला अरबाब मारफ़त मुस्तग़रक़ बहरे हक़ीक़त हाजिअुल हरमैनुल शरिफैन हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू

हज़रत मोलवि सय्यद निसार अलि अकबरी अकबराबादी (आगरा) रहमत उल्लाह अलैह ने किबला अरबाब मारफ़त शैख़ुल तरिक़त हज़रत जद्दी हाजि सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहूल अज़ीज़ की स्वानेहयात ऐसे प्यारे और दिलकश अलफ़ाज़ में तहरीर फ़रमाई है के बे एख़्तेयार जी चाहता है के वही ख़ाका नाज़रीन के सामने पेश कर दूँ। और अपने ख़्यालात और इबारत आरायियो से किनारा कशि एख़्तेयार करूँ। मुलाहज़ा फ़ुरमाऐं। "एखतेसार में जामियत की बहार है और जामियत के पर्दा में जलवागर एखतेसार है।

हर मुसन्निफ़ और हर शायर फ़ितरत से कोई ख़ास मज़ाक और ख़ास रंग लेकर आता है जिससे वह किसी हालत में जुदा नहीं हो सका और जो उसके हर तर्ज़ अदा से हर मौक़ा पर नुमाँया होता है। हमारे हज़रत जहाँ हमारा ख़्याल है तस्ववुफ़ का ख़ास और निखरा हुआ रंग लेकर आए थे। शायरि कभि-कभि आपको शायरों के सफ़ में ले आती है। मगर तस्ववुफ़ असलि मरकज़ से हटना नहीं चाहता। तसबीह व सज्जादा हाज़िर हो जाता है। नहीं मैने गलति की सज्जादा व मुसल्ला तो कही अपने वक़्त पर याद आते हैं। वह सोज़ व गुदाज़

जो एक सच्चे तालिबे हक़ का ज़ादराह होता है न वह ग़ज़ल में हाथ से जाता है न मसनवि व साक़ि नामा में हज़रत के कैफो हाल से आगाही के लिए ज़रूरत है। एक मुख़तसर सी स्वानेउमरि के। हम इस मुख़तसर से ख़ाका को आपके पेश नज़र करते है और यह के इस चौख़टे में कैसी तस्वीर होगी आपके ख़्याल पर छोड़ते है।"

नसब व विलादत

इस्म-मुबारक सय्यद शाह मुहम्मद अकबर, इब्न सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद, इब्न सय्यद शाह मुहम्मद तुराबुल हक़, इब्न क़ुतुबुल वक़्त सय्यद शाह तय्यब उल्लाह नक़ाब पोश मोड़वी, इब्न हज़रत सय्यद शाह अमीन उल्लाह शहीद नौआबादी, इब्न हज़रत सय्यद शाह मुनव्वर उल्लाह, इब्न हज़रत दिवान ताज उद्दीन मुहम्मद, इब्न हज़रत शैख़ तैम उल्लाह, इब्न मख़दूम अख़वन्द शैख़, इब्न मख़दूम अहमद चिशति नौआबादी, इब्न हज़रत अबदुल वह्हाब, इब्न हज़रत मौलाना अबदुल ग़नि, इब्न हज़रत अबदुल मलिक, इब्न मख़दूम ताज उद्दीन, इब्न मख़दूम अता उल्लाह काकवि, इब्न मख़दूम सुलेमान लंगर ज़मीन, इब्न मख़दूम अबदुल अज़ीज़, इब्न हज़रत इमाम ताज फ़कीह मक्कि क़ुदुस अल्लाह इसरारहुमा।

यह बुर्ज़ुग हज़रत इमाम ताज फक़ीह मक्कि जिनका सिलसिलाए नसब हज़रत ज़ुबैर इब्नुल अवाम रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो तक पहुँचता है। हज़रत मख़दूम शरफ़ुद्दीन बिहारी रहमत उल्लाह अलैह के भी जद थे। हज़रत ईमाम ताज फ़क़ीह शहाब उद्दीन ग़ौरी के ज़माना में चन्द मुजाहिदिन को साथ लेकर मक्का मोअज़्ज़मह

से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए उस वक़्त मनेर का राजा जो सुबा बिहार का हुकमराँ था मुसलमानो से बरसरे जंग हुआ! हज़रत इमाम ताज फ़कीह मक्कि क़ुदुस अल्लाह इसरारहुमा ने उस जानिब रुख़ फ़रमाया उस जंग में राजा मारा गया। जंग के ख़ात्मा के कुछ अरसा बाद आप मनेर में जो दानापुर से 10 मील के फ़ासला पर है क़्याम फ़रमा कर मक्का मोअज़्ज़मह तशरीफ़ ले गए और तीन साहब ज़ादों हज़रत मुहम्मद इस्माईल, हज़रत मुहम्मद इसराईल, हज़रत मुहम्मद अबदुल अज़ीज़ रहमत उल्लाह अलैहिम को क़स्बए मनेर में ही छोड़ गए।

हमारे हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी रह० का सिलसिलए नसब हज़रत मख़्दूम अबदुल अज़ीज़ क़ुदुस सिर्रहू से है। इस लेहाज़ से हमारे हज़रत क़ुरैशी है। मगर हज़रत की वालदह माजदा हज़रत मीर अशरफ़ अलि क़ादरी रहमत उल्लाह अलैह की औलाद में हैं। यह बुर्ज़ुग क़सबए रहोई "मुतस्सिल बिहार शरीफ़" के सज्जादा नशीन थे। आप का सिलसिलए नसब सही तरीक़ा से हज़रत सय्यदना अबदुल क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो तक पहुँचता है।

हमारे हज़रत की विलादत बा सआदत 27 शाबानुल मुअज़्ज़म 1260 हिजरी दिन बुध ब वक़्त इशराक़ महल्ला नई बस्ति शहर आगरा में वाक़ा हुई। हज़रत के चचा अक़दस व पीर तरीक़त जनाब हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू ने तारीख़ विलादत नज़्म फ़रमाई, शेर पढ़िए और उस ताल्लुक़ क़लबी को मुलाहज़ा फ़रमायें जो हज़रत पीर तरीक़त को हमारे हज़रत के साथ शुरू ही से था।

नज़्म

सर्व रानाए मा अख़ि सज्जाद यादगार इमाम ज़ैन एबाद
नूर सादात अज़ रुख़श तावाँ रौशन अजवे तजल्लि-ए-इरफ़ान
मुक़्तबस शुद ज़ेनुरे फ़िकरश फ़क़्र हस्त दर अहल ज़िक्र ज़िकरश फ़क़्र
दिले पाकश ख़ज़ीनए असरार सिररे उ महवे जलवए दीदार
ब शबिस्तान आँ अख़ि ब वजूह आमद अज़ ग़ैब यक हसीन मौलूद
फ़क्र रौशन नसीब इँ बादा ऐ ख़ुदा वन्द मा चुनि बादा
या ख़ुदा बाशद ई पेसर चूँ जुनैद अज़ रेया दूरो पाक-व-साफ अज़क़ैद
ऐ ज़े शबान बिस्त-व-हफतुम बूद रोज़ अज़ रोज़ हा चहारम बूद
साअते नह ज़े रोज़ आम्दा बूद काँ महे दिलफ़रोज़ आम्दा बूद
शुद बाशशाश ब फ़िक्र चूँ क़ासिम गुफ़्त दर गोश वे चुनि मुलहिम

चूँ ब दहर इँ मुल्क ख़ेसाल आमद
दुररे मकनुँ फ़ैज़ साल आमद

आप देखते है नक़्शबन्दिया किस मज़े के जलवे दिखा रही है वह दिल जिस में जोश हो रहा है तहनियत के मौका पर भी अपना रंग नहीं छोड़ता वह अपने प्यारे बेरादर ज़ादह के लिए दुनिया की नेमतों में से कोई नेमत नहीं चाहता। चाहता है तो यह के "फ़क़्रे रौशन नसीब इँ बादा" और फ़िर इस जोश के फ़व्वारों को देखिए। ख़ुदावन्द माचुनि बादा। तो क्या उस कि यह सदा या ख़ुदा इँ पेसर चूँ जुनैद ख़ाली जाएगी? हमारा ख़्याल तो यह है के सख़ि दाता से नहीं मालूम क्या-क्या मिला होगा लेकिन रहा यह भेद छुपा हि हुआ। और क्यों न हो दुररेमकनून (क़ीमती मोती) को होना भी ऐसा ही चाहिए था। आप को ताज्जुब होगा के हमारे हज़रत (अल्लामह शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू) तमाम उमर अपने आप को

दानापुरी तहरीर फ़रमाते रहे। सिलसिला नसब में भी सब के अस्माँ गिरामी के साथ मोड़वी है या नोआबादी या दानापुरी यह आगरा की पैदाईश कैसी? यह किस्सा ज़रा तफसील तलब है। दर असल वतन तो दानापुर हि है। मगर अब से तक़रीबन 70-80 साल क़बल एक ऐसी तक़रीब हो गयी जिस से हज़रत के वालिद माजिद (जद्दे अमजद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू) आगरा तशरीफ़ लाए। उस ज़माना में तमाम मुक़ददमात का अपील कलकत्ता में होता था। इस नवाह के लोगों को बड़ी ज़हमत होती थी न रेल के ऐसे दौर दौरह थे न इस क़दर सफ़र के वसाएल आसान थे। सरकार ने इस ज़हमत के दूर करने के ख़्याल से एक अदालत आलिया आगरा में क़ायम करना चाहि और इस अदालत आलिया का हाकिम आला अज़ीमाबाद के अफसरों में से एक अफसर मुकर्रर किया गया उस ज़माना में हज़रत के चचा अक़दस व पीर तरीक़त (जद्दे आला हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम अबुलओलाई दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू) जवान थे और इल्म जाहिरी से फ़ारिग़ होकर मदारिज तसव्वुफ़ के तै करने में मसरूफ थे। आप को जब यह वाक़िया मालूम हुआ तो शौक़ ज़ियारत मज़ारपुर अनवार हज़रत सय्यदना अमीर अबुलओला रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने बेताब करके उस हाकिम के पास तक पहुँचा दिया। हाकिम निहायत एजाज़ से पेश आया। और ख़ानदानी वजाहत का ख़्याल करके उसने बरजस्ता यही कहा के क्या हज़रत आपके वालिद माजिद अंग्रेजी मुलाज़मत की इजाज़त देगें? आप ने फ़रमाया के यह मुलाज़मत वहाँ तक पहुँचने का एक जरिया है मक़्सूद असलि उस आस्ताना (हज़रत सय्यदना अमीर अबुलउला रज़ि अल्लाहो तआला

अनहों) की मज़ार की ख़िदमत है। उसने फ़ौरन ओहदा-ए-मिस्ल खानी पर 50 रुपया मुशाहरा पर इस माज़रत के साथ मुक़र्रर कर दिया के यह कम तन्ख़ाह आपकी हैसियत और क़ाबिलियत के मुनासिब नहीं। मगर मैं मजबूर हूँ के मंजूर शुदा तन्ख़ाह ही यह है। अल ग़र्ज़ इस सिलसिला में आप उसके हमराह इलाहाबाद तशरीफ़ लाए और जब तक आगरा में अदालत आलिया के क़याम के सारे मरातिब ना तै हुए इलाहाबाद ही में क़याम रहा। फ़िर आगरा तशरीफ़ ले आए और आप के साथ आप के छोटे भाई हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू भी आगरा तशरीफ़ लाकर क़याम पज़ीर हो गए। यह ज़रिया हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी रहमतउल्लाह अलैह की पैदाईश आगरा का था।

सिन रुशदो तमीज़ तालीम व बैत

जब हमारे हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू 40 रोज़ के हुए तो आपकी वालदा माजदा आप को मज़ार पुर अनवार हज़रत सय्यदना अमीर अबुलओला क़ुदुस सिर्रहू पर लेकर हाज़िर हुई और कुछ रोज़ तक वहीं क़याम फ़रमाया। पाँचवीं साल बिस्मिल्लाह हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी रहमतउल्लाह अलैह ने अदा फ़रमाई और ख़ुद ही तालीम फ़रमाना शुरू किया। आप की तालीम ज़ाहिरी जो कुछ भी हुई वह इसी ज़ात बरकात से जिस से तालीम बातनि हुई। वह निगाह जिसके असर का ज़हूर आगे चलकर अशकारा हुआ इबतेदा ही से अपना काम किये जाती थी। हमारे हज़रत (अल्लामा सय्यद शाह मुहम्मद अकबर

दानिशमन्द दानापुरी) की इब्तेदाई उमर उस बे परवायी और दुनिया से क़ता तालुक़ की इस तरह गुज़रि के हम उसको तसव्वुफ़ की इसतेलाह में ज़ज़्ब सरशार से ताबीर कर सकते हैं।

अलग़रज़ जब तहसील इल्म ज़ाहिरी से कुछ यकसूई हुइ तो वह वक़्त आया के जिसका मुद्दत से इनतेज़ार था। आपने अपने चचा अक़दस हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी अलैह रहमा से सिलसिला अबुल ओलाइया में बैत हासिल की। और अब वह रंग नमुदार हो चला जो मुद्दत से पर्दो में छुपा हुआ था। यह रंग जब गहरा हो चला और जल्वा फ़रोशी के लिए तालिबाने दीदार का हुजूम होने लगा तो 27 रमज़ानुल मुबारक 1281 हिजरी वक़्त नमाज़े सुबह आपके चचा अक़दस हज़रत अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम अलैहिर रहमा ने इजाज़त नामा तहरीरी अता फ़रमाकर तशना लबाने मारफ़त को सैराबी का एक ऐसा मौक़ा दिया जो एक मुद्दत तक याद रहेगा।

मौलाना सय्यद निसार अली रहमतुल्लाह अलैह की तहरीर दिलपज़ीर के ज़रूरी एक़्तेबासात के बाद अहम वाक़्यात पर रौशनी डालना चाहता हूँ और इस इजमालि पर्दा को उठाना चाहता हूँ।

इजाज़त-व-ख़िलाफत

यह तो आप ने मुलाहज़ा फ़रमा लिया के सय्यदुल तरीक़त हज़रत जद्दे अमजद अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद क़ासिम दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस ने अपने भतीजे सुवरि व मानवि को इजाज़त व ख़िलाफ़त से मुर्शरफ फ़रमाया। फ़िर हुज़ुर के वालिद माजिद जद्दे अमजद क़ुतुबुल इरशाद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद

सज्जाद दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू ने भी तहरीरि इजाज़त नामा अता फ़रमाया। इसी तरह यके बाद दिगरे सय्यदुल कौनैन हज़रत हाजी सय्यद शाह अता हुसैन, सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह मुनेमिया अबुल ओलाइया, गया ने इजाज़त व ख़िलाफ़त से मुर्शरफ फ़रमाया। हज़रत जद्दी हाजी सय्यद शाह अता हुसैन रहमतउल्लाह अलेह अपनी किताब "कनजुल अनसाब" में हुज़ुर (अल्लामह सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी रह० अ०) के मुताल्लिक़ तहरीर फ़रमाते है के जुमला अम्माम की तरफ से भी मजाज़ है। यानि ख़िलाफ़त से सरफ़राज है। फ़िर हज़रत क़िबला व काबा हज़रत वालिद माजिद अम फैज़हुम के नाना मजमउल बहरैन हज़रत सुफ़ी सय्यद शाह विलायत हुसैन दिलावरि दाएमि रहमत उल्लाह अलैह ने हुज़ुर अक़दस को इजाज़त व ख़िलाफ़त के साथ "हज़रत सय्यदना ख़्वाज़ा बहाउद्दीन नक़्शबन्द मुशकिल कुशा रज़ि अल्लाहो तआला अनहों की तसबीह और कुलाह (टोपी) भी अता फ़रमाई"।

अलहमदुल्लिाह के यह अनमोल नेमत हुज़ुर की बदौलत मेरी ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुल उलाईया, शाह टोली, दानापुर में आयी जिसकी आम ज़ियारत मेरे दादा हज़रत अल्लाम सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द अबुल उलायी दानापुरी रह० अ० के सालाना उर्स मुबारक के मौक़ह पर 15 रजब को हर साल होती चली आ रही है।

वाक़ियात यके बाद दिगरे पज़ीर होते रहे। यहाँ तक के 1298 हिजरी 1 ज़िक़ादह को वासिल बहक़ (हक़ से मिलने) होने से 14 रोज़ पहले हज़रत जद्दी हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू ने हज़रत जद्दि अल्लामा हाजी सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिंरहू को तलब फ़रमाकर

एक और ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमाया। जिसने इस ख़िलाफत नामा का बदिदए ग़ौर मुताला किया। बिल-आख़िर इस नतिजा पर पहुँचा के यह जानशिनी की मुस्तहकम सनद है। दोनो ऐजाज़त नामों का यहि मफहूम बिला रद्दोकद (बगैर बहस) है। इसके बाद सक़ाफिल हुब का सातुल वेसाली (बखुशी ख़ुद से मिलना) के दिलकश मनाज़िरह मुलाहज़ा फ़रमाएँ या कैफ़-व-हाल के दरयाए नापैद किनार में ग़ोता लगाए।

कैफ़-व-हाल

बुज़ुर्गो का कैफ-व-हाल उनकी पाक ज़िनदगी के हर शोबा पर असर अन्दाज़ होता है दुनियावि माशरत। मज़हबि रेवायात गर्ज़ के हर चीज़ में फ़ना व बक़ा की बिजलियाँ चमकति हुइ दिखाई देती है। ज़ाहिर बातिन से ज़्यादा नुमायाँ और बातिन ज़ाहिर से ज़्यादा दरखशाँ मालूम होता है। अल्लाह वालों के कैफ़-व-हाल और अबरारों के जमालो जलाल का मुशाहदा हंगाम सफ़र आख़रत में ब ख़ुबी किया जा सकता है। और चश्म ज़ाहिर बीन को अनवार बातिन का आईना बनाया जा सकता है! इस लिए रेसाला हाज़ा के उनवान विसाल के मुनदरजा जैल सफ़हात की तरफ नाज़रीन बा तमकीन की तवज्जोह मबज़ूल कराना चाहता हूँ। बे पिए मतवाला बनाना चाहता हूँ। उन सफ़हात में जमालो कमाल की विजलियाँ कोन्दति हुई नज़र आऐंगीं। या ज्याबारियाँ बिला शुबह नाज़रीन को महव हैरत बनाएगी। हुज़ूर अक़दस रहमतुल्लाह अलैह के इबतेदाये अलालत से हंगाम सफ़र आख़रत तक हालात का बगौर मुताला फ़रमाए। गुल व बुटि का निख़ार गुलदस्तए मारफत की बहार मुलाहज़ा फ़रमाए।

"हर वर्क़ है इसका यदे बैज़ा
सफ़ह सफ़ह जमाल यूसुफ़ है"

हंगाम सफ़र आख़रत में जो हालत हुज़ूर अक़दस (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह पर तारि थी वही हुज़ूर का भी कैफ-व-हाल था। और वहीं मुक़ाम अबदियत का कमाल था। के कलमह हक़ दमे आख़िर ज़बान पर जारी था। बर्क़ जमाल कून्ध रही थी। कैफ़-व-हाल तारी था। इधर तो अहले दिल हज़रात कैफ़-व-हाल की मुक़द्दस वादियो में चहल क़दमि फ़रमाऐं। इधर हम नई रौशनी वालों को पोशीदा करामत की सैर कराएं। आप दरयाफ़्त करेगें के पोशीदा करामत क्या है? वह हुज़ूर अक़दस के वारदात क़लबि का आईना है। हम इस आईना रौशन को नई रौशनी वालो के सामने पेश करते है। और यह के इस में कैसी तसवीर होगी इसको आपके ख़्याल पर छोड़ते है। मुशते नमून्ह अज़ ख़िरदार अन्द के अज़ बिस्यार (एक मुटठी राई कम है या ज़्यादह) मुलाहज़ा फ़रमाऐ।

"बरोज़ जुमा 20 रबिउलअव्वल 1323 हिजरी बा मुकाम आगरा बाद नमाज़ जुमा दर ख़्वाब ज़ियारत जमाल हज़रत उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो दरदम ब मुआनक़ाह व तवज्जह ऐनी मर्शरफ़ शुदम अलहमदो लिल्लाह अला अहसानहू" दस्तखत-मुहम्मद अकबर 20 रबीउल अव्वल 1323 हिजरी जुमा को हज़रत अल्लामह यय्यद शाह मुहम्मद अकबर अबुल उलाई दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह ने ख़्वाब में अमीर-उल-मोमिनीन सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि

अल्लाहो तआला अनहो की ज़ियारत से मुशर्रफ होते हुए आपके दस्त-ए-मुबारक के बोसा के साथ-साथ फ़ैज़ाने बातिनी भी नसीब हुआ यह अल्लाह का बड़ा एहसान व करम है।

इलहाम (ग़ैब से)

बतरीक़ मुताअद्दिद मि शवद ई हालत के मरा तारीख़ नहुम जमादिस्सानी 1298 हिजरी ब मुक़ाम गोलखपुर पटना दस्त दाद सूरतश ई अस्त के सुख़ने मिनजानिब अल्लाह बिला ख़ास्त व बे इरादा दर दिल पैदा शुद फ़ौरन हुमा साअत दिल अज़ हवाए लुतफ व एनायत इलाहि ब ख़ेलाफ़ हरकत रोजाना ख़ुद ज़ूद ज़ूद बहरकत आमद व ता दो मिन्ट इ कैफियत मान्द।

शेर– रक़ीब मुजद-ए-वसलत अगर नदाद चे शुद
मन अज़ तपीदन दिल याफतम के यार रसीद

हर चन्द के ई हालत ब बरकत अनफास मुतबर्रका हज़रत व पीर व मुरशिद बरहक़ इन्दल्लाह बा बरकत इनफासुल मुतबर्रकह क़बल अज़ि हम हासिल बूद ता तमीज़ वाक़यि इँ हालत बतारीख मरक़ुमा व ब उमर सी व हफ़्त सालगि दस्त दाद अलहमदुलिल्लाह, अलहमदुलिल्लाह, अलहमदुलिल्लाह ता हाल इँ हालत हालते बे इखतेयारेस्त दौरह मदाम मिकुनद माँ न बा इख़तेयार मन।

क़ता:– इख़तेयार आदमे ख़ाकि को है क्या ख़ाके नसीर
आप से जो यह गुनहगार उठे और बैठे
उसके कुल यूँ यद क़ुदरत में है जैसि पुतलि
सवब जुमबिशे हर तार उठे और बैठे।

दस्तख़त-फ़क़ीर मुहम्मद अकबर अबुल उलाई
दहुम जमादिससानि 1298 हिजरी गोलखपुर

उपर लिखी हुई फ़ारसी की इबारत जिसका उनवान लफ़्ज़ इलहाम से है, यह भी तहरीर फ़ारसी ज़ुबान में हज़रत शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी के दस्ते मुबारक की तहरीर है!

9 जमादिउस्सानी 1298 हिजरी को गोलखपुर पटना में उनके साथ एक ग़ैबी और रूहानी वाक़्या पेश आया और उनके सीने मुबारक से "पास अन फ़ास" का ज़िक्र बुलन्द होने लगा। उस वक़्त उनकी उम्र शरीफ 27 साल की थी, और उन्होंने अपने हक़ीक़ि चचा और पीर व मुरशिद हज़रत शाह मुहम्मद क़ासिम दानापुरी रह० अ० के ज़बाने मुबारक से इस ज़िक्र की तालीम देते सुना। "पास अनफ़ास" वो ज़िक्र बातिन है जो ज़िन्दगी और मौत दोनो हाल में किसी दरवेश बुर्ज़ुग को जारी व सारी रहता है। यह कैफियतें बातिनी अल्लाह की अता से उनके चचा और पीर व मुरशिद को हासिल थी। अपने इसी बातिनि कैफ़ियत का ज़िक्र हज़रत शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी रह० अ० ने किया है।

तरीक़त की मंज़िल में "पास अन फ़ास" वो ज़िक्र है जो बसूरते मुराक़बा ला इलाहा इल्लल्लाह के विर्द से किया जाता है और कमाल की मंजिल उस वक़्त आती है जब जागते और सोते दोनो कैफ़ियत में इस ज़िक्र का असर जारी व सारी रहता है।

शब-ए-क़द्र

अलहमदुल्लिाह अला एहसानहु वशशुक्र नेमानहु दिशब के शब

यक शम्बह शबे बिस्त व पंजुम माह मुबारक रमज़ान बूद 1306 हिजरी बाद नमाज़ ऐशाँ व तरावीह बर बाला ख़ाना ख़ुद ज़ेर आस्मान बर जानमाज़ नशिस्ता बूदम व दायिया शब बेदारी बूद क़रीब निस्फ़ शब यक सिलसिलय सितारेगान रौशन के बराबर क़ुब्बह मुतवस्सित लम्प बूद व अन्दाज़न चहल या पंजाह सितारहा दर ई ख़ाहन्द बूद अज़ मग़रिब ब सुऐ मशरिक़ मी रवन्द व हवा मुखालिफ़ ई रफ़तार बूद व बर आस्मान जा बजा अबर बूद ई सिलसिलह गाहे मख़फ़ी दर अब्र मीशवद व गाहे ज़ाहिर बर गुज़र सिलसिला अव्वल हैरत बर दिलम तारि शुद चुनानके ज़बान अज़ गुफ़तगु मोअत्तल शुद बाज़ बतवक़्क़ुफ नीम सअत सिलसिला दिगर सानि हुमाँ तौर बा नज़र आमद सितारगान ई सिलसिला अज़ अव्वल रौशन तर बूदन्द ब वक़्त मोआएनह ई सिलसिला नार हाय चन्द अज़ मने सर ज़दन्द व कैफ़ियत वजदानी दरदिल पैदा शुद व ख़्याल आमद के मुबादा ई अज़ आसार शब-ए-क़द्र बाशद फ़ौरन ख़ातिर अज़ ताल्लुक़ हा यक सू शुदम हम बरि शू नह दोसह सिलसिला दिगर गुज़श तन्द तादाद आँ बयाद नुमान्द व ब वक़्त नवाख़्त दो जरस अज़ शब या बाला अज़ दो बाशद रौशनी दरख़शीद हमचु बर्क़ के बर सुफ़ैदि उ सबज़ी ग़ालिब बूद चुनाके दर व दीवार हमचु रोज़ रौशन मुनव्वर शूदन्द ई चराग़ ख़ामोश बेखुदाना ब सजदा रफ़तम आँ वक़्त बहर तरफ़ के नज़र मी करदम ग़ैर आँ रौशनी हेच बा नज़र नमी आमद व हबा हम आँ वक़्त इस्तादा बूद आवाज़ इनसान बगोश नमि आमद अलहमदोलिल्लाह के आँ वक़्त ग़ैर महबूब हक़ीक़ी के इबारत अज़ ज़ात पाक बेचुँ व बेचुँग बाशद दर दिलम हेच नबवद व बा ख़्याल मीगुज़शत के शब-ए-क़द्र अस्त अम्मा ई हम ब ख़्याल मी आमद के

ई वक़्त तलबे दुनिया सख़्त दूँ हिम्मती अस्त अज़ ख़ुदा ख़ुदा रा तलब बायद कर्द दबाज़ बेहोश शुदम व चूँ बहोश आमदम वक़्त नमाज़ सुबह बूद अम्मा असर ख़्वाब दर चशम ख़ुद नेयाफ़्तम लेकिन एहतियातन तजदीद वुज़ू दरदम। "ज़ालिका फ़ज़लुल्लाहे यूतीहे मँइ यशाओ वल्लाहो ज़ुलफ़ज़लिल अज़ीम"।

दस्तख़त—फ़क़ीर मुहम्मद अकबर अबुल उलायी

उपर में लिखे शब-ए-क़द्र के दीदार का हिन्दी में ख़ुलासा। यह है, हज़रत पीर तरीक़त हाजी शाह मुहम्मद अकबर अबुलउलाई दानापुरी रह० अ० को अल्लाह की अता से शब-ए-क़द्र का दीदार हुआ जिसका हाल उन्होंने फ़ारसी ज़ुबान में अपने क़लमी सफ़ीना में तहरीर किया है। 1306 हिजरी में मुताबिक़ 1884 ईस्वी में रमज़ान की 25वीं रात को यह अनमोल दौलत अता हुई। दादा हुज़ूर अपने क़लमी सफ़ीना में ख़ुद ही लिखते है के इशाँ और तरावीह की नमाज़ के बाद आसमान के नीचे जानमाज़ पर बैठा हुआ था आधी रात का वक़्त था के आसमान पर सितारो का एक सिलसिला इस क़दर रौशन हुआ के एक झुन्ड दिखाई देने लगा। चालीस-पचास सितारे पश्चिम से पुरब की ओर झुन्ड में चल रहे है जब कि हवा पुरब से पश्चिम की ओर चल रही है। हमारे दिल पर एक हैरत सी तारी हो रही है और हमारी ज़बान गुफ़्तगु करने से रूक रही है। मेरे दादा हुज़ूर आगे तहरीर करते है के इस नूरानी मन्ज़र को देखकर उनके दिल में एक वजदानी कैफ़ियत पैदा हुई और ख़्याल आया के शब-ए-क़द्र शुरू हो रहा है। और बिजली की तरह रौशनी चमकने लगी और सारा आलम रौशन हो गया और बेख़ुदी में मेरे दादा हुज़ूर सजदा में चले गए। उस

वक़्त कोई इन्सानी आवाज़ कानो में सुनाई नहीं दे रही थी। मेरे दादा हुज़ूर को कभी बेहोशी सी हो जाती और कभी होश में आ जाते। सजदे से सर उठाया तो फ़ज्र का वक़्त था और आँखो में नीन्द की कोई कैफ़ियत नहीं थी। मेरे दादा हुज़ूर के साथ यह रुहानी और नूरानी मन्ज़र जागते हुए में दानापुर ख़ानक़ाह सज्जादिया अबुल उलाइया में ज़हूर हुआ एहतियातन दोबारा वजु किया।

सज्जादगि और सफर-ए-हज

जद अमजद क़ुतुबुल इरशाद हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द क़ुदुस सिर्रहू के विसाल होने के बाद 18 ज़िकादह 1298 हिजरी में मशाएख़ की एक जमाअत कसीर ने हज़रत अक़दस क़ुदुस सिर्रहू को दस्तार फ़क्र व सज्जादगि के लिए पेश करके मुबारक बाद दी। इस मौक़ा पर हज़रत शाह मुहम्मद यहया अलैहे रहमह पटना ने जो सज्जादगि की तारीख तहरीर फ़रमाई है वह दर्ज जैल है।

क़ता तारीख़

चूँ शुद हामिले सरे सज्जाद अकबर बा जमए के इजमा अहले नज़र शुद
सुपुर दन्द तसबीह सज्जाद ऊरा मफव्वज़ ब हक़दार हक सर बसर शुद
रक़म कर्द तारीख़ यहयाए मिसकिं
हुमायूँ पेसर जानशीन पेदर शुद।

रौनक़ अफ़रोज़ सज्जादह ख़ानदानी होने के बाद दफ़अतन हुज़ूर ने हज का इरादा फ़रमाया हुज़ूर अक़दस फरमाते थे के एक दिन मैं हज़रत सरवरे आलम हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ "हुज़ूर अलैहिस्सलाम

तशरीफ़ लाए और मेरी जानमाज़ लेकर उसके अगले कोने को अपने दस्त मुबारक से पकड़ कर जानमाज़ बिछा दी और बज़ुबान उर्दू इरशाद फ़रमाया बेटा जानमाज़ इस तरह बिछाते है"। इस वाक़्या के दूसरे दिन ग़ैब से कुछ ऐसा सामान हो गया के हुज़ूर ने सफ़र हज का सामान फ़रमाया यह वाक़्या 1300 हिजरी का है। मुनासिब मालूम होता है के इस बाब को हुज़ूर ही की तहरीर पर तमाम किया जाए जो हुज़ूर ने अपनी किताब अशरफ़ुत तवारीख़ में इस मुबारक सफर के मुताल्लिक़ तहरीर फ़रमाया है।

वहुवा हाज़ा। जब यह फ़क़ीर 1300 हिजरी में आस्तानए बोस बैते (हरम शरीफ़) मुर्करम हुआ। वह वक़्त शब का था। जिस वक़्त क़ाफ़ला जद्दा शरीफ़ से मक्का मोअज़्ज़मा में दाख़िल हुआ गियारह बजे रात का वक़्त था शब माह थी चाँदनी निहायत शफ़्फ़ाफ थी बैत मुकर्रम (काबा शरीफ़) का लिबास सियाह है। बैत के चारो तरफ मताफ़ (तवाफ की जगह) में संग मरमर का गोल दायरह इस पर हुज्जाज का तवाफ़ करना अजब लुत्फ दिख़ा रहा था मेरे ख़्याल में यह बात गुजरी के यह एक लैला है तमाम जहान के लिए। और यह सब तवाफ़ करने वाले हज़ारो-हज़ार मजनु है। और लैला का सुकूत (ख़ामोशी) की हालत में खड़ा रहना और अपने उश्शाक़ को आम इजाज़त तवाफ़ की दे देना कितनी शान दिलबरि की है। दिलबर का लफ़्ज़ ख़ास इसी लैला के वास्ते है मैं भी अपने मतूफ (रहनुमा) शेख़ ग़नीम साहब रहमतउल्लाह अलैह के हमराह जो सय्यद हाशिम मतूफ़ के नायब थे तवाफ़ में मसरूफ़ हुआ और बेखुदि की हालत में था के मतूफ़ साहब ने सब शूत तमाम होने पर मेरा हाथ पकड़ा और कहा के वाजिबुल तवाफ़ का दोगाना मुक़ाम पर पढ़लो। मैं वाजिबुल

तवाफ़ का दोगाना पढ़ रहा था के इसतफ़राग़ (उल्टी) की हालत पैदा हुइ मुझे मेरे मतूफ़ बाब उमरह के पास लाए मैने वहाँ उल्टी से फुर्सत की मुझे एक बुज़ुर्ग ने मुबारक बाद दी और कहा के ख़ूब जी भर कर ज़मज़म पी लो तुम्हे फ़िर उल्टी होगा चुनानचे मैने ऐसा ही किया और दूसरे तवाफ़ के बाद वाक़ई फ़िर इसतफराग़ हुआ उन्हीं बुर्ज़ुग ने बाबुल उमरह के पास लाकर इसतफ़राग़ कराया और फ़िर मुबारकबाद के जुमले अदा किए और फ़रमाया के अल्लाह तआला ने तुम्हारे दिल की शुस्त वशु आब ज़मज़म से की "मुफस्सिल हाल अशरफ़ुत तवारीख़ में तहरीर है मुलाहज़ा फ़रमाए।"

अख़लाक़-व-आदात

हुज़ूर "हज़रत अल्लामह सय्यद शाह अकबर दानिशमन्द दानापुरी रह० अ०" ने कभी किसी से क़र्ज़ नहीं लिया। हुज़ूर के विसाल के बाद यह बात मालूम हुई के आगरा में ग़रीब और बेवाओं के साथ पोशिदह सुलूक फ़रमाते थे और सब का माहाना मुकर्रर था। एक मरतबा का ज़िक्र है के हुज़ूर उर्स हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के मौके पर मस्जिद शाहजहानी अजमेर शरीफ़ में तशरीफ़ रखते थे और सदरि की जेब में धड़ा थी एक साहब ने जेब में हाँथ डाल कर घड़ी निकालनी चाही आप ने मुँह दूसरी जानिब फ़ेर लिया। और उनको इतमिनान से मौका दिया के अपना काम करें चुनानचे वह साहब बिला तामुल घड़ी निकाल कर चलते हुए। हुज़ूर के अख़लाक़ का यह हाल था के जितने हज़रात हुज़ूर के मिलने वालों में थे और जो हाज़िर बाश रात दिन के थे सब का यहि ख़्याल था के मुझ से हुज़ूर को ज़्यादा मोहब्बत है।

हुज़ूर (जनाब हज़रत अल्लामह सय्यद शाह अकबर दानिशमन्द दानापुरी रह० अ०) ने ख़िलाफ़त से सरफ़राज फ़रमाया है उनके अस्माए गिरामि दर्ज ज़ैल है। जनाब हज़रत क़िबला व काबा वालिद माजिद सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन साहब दाम जिल्लहुल आलि, जनाब हज़रत मोलवी सय्यद शाह मुहम्मद निज़ामि साहब काकवि रह०, जनाब हज़रत हकीम सय्यद शाह अबदुल अज़ीम दानापुरी रह०, जनाब मौलाना सय्यद शाह वाएज़ उद्दि हुसैन साहब मुदजिल्हु दानापुरी, शाह अहमद हुसैन साहब दानापुरी रह०, शाह मुहम्मद ज़फ़र साहब इलाहाबादि, जनाब हाजी शाह अबदुल्लाह साहब अलैह रहमा इलाहाबादि, जनाब अबदुल मजीद साहब बाजौरी, मोलवी मुहम्मद फ़साहत हुसैन साहब मरहूम तिलहाड़ा, मीर फ़रहत अलि साहब मरहुम भदौलवी।

तसनिफ़ात

हमारे हज़रत (अल्लामह सय्यद शाह अकबर दानिशमन्द दानापुरी रह० अ०) जिस तरह एक मुम्ताज़ सूफ़ी और बा कमाल शायर थे वैसे ही साहबे तालिफ़ात कसीरा (लेखक) भी थे जिसके मुताला से आप कि इस्तेदाद कामिल और पूरी इलमि का पता चलता है। सफ़र हज से वापसी के बाद हुज़ूर की तवज्जोह किताबें लिखने की तरफ़ हुई। उसकी तफ़सील दर्ज ज़ैल है :–

(1) ख़ुदा की क़ुदरत	(2) तोहफए मक़बूल
(3) मोलदे गरीब़	(4) अखबारुल इश्क़
(5) सुर्मए बिनायि	(6) शोरे क़्यामत
(7) मौलदे फ़ातमी	(8) चिराग़ काबा

(9) दिल (10) इदराक

(11) इरादह (12) मसनवि रूह

(13) रिसाला ग़रीब नवाज़ (14) रिसाला इलतेमास

(15) तारीख़े अरब (16) नज़रे महबूब

(17) अशरफ़ुल तवारीख़ हिस्सा अव्वल, "इसरार नबुवत"

(18) अशरफ़ुल तवारीख़ हिस्सा दोयम, "अहद रिसालत"

(19) अशरफ़ुल तवारीख़ हिस्सा सोयम, "अहद ख़िलाफ़त"

(20) सैर-ए-देहलि (21) अहकाम-ए-नमाज

(22) चहल हदीस (23) दिवान तजल्लियात-ए-इश्क़

(24) दीवान जज़्बात-ए-अकबर।

अलालत व विसाल

5 मोहर्रम 1327 हिजरी को आप आगरा तशरीफ़ ले गये उस वक़्त तक सहि व तनदुरुस्त थे। आख़िर सफ़र से सिलसिलए अलालत शुरू हुआ। हकीमों ने इस्तसक़ा तजवीज़ किया था मगर दर असल पूरे तौर पर मालूम ना हो सका के क्या मरज़ था। पाँचवीं रबिउस्सानी को ख़त के जरिये से हज़रत अबि व शेख़ि किबला व काबा मुदाज़िलहु (शैख़ तरीक़त हज़रत सय्यद शाह मोहसिन दानापुरी रह०) को आगरा में तलब फ़रमाया। हज़रत वालिद माजिद के इसरार से हुज़ूर अक़दस 17 रबिउस्सानी को अलालत हि कि हालत में दानापुर रवाना हो गये। वहाँ निहायत मुस्तैदि के साथ इलाज किया गया जिस से कुछ आसार सेहत ज़ाहिर होने लगे इसी हालत में ब मुक़ााम काको अपनी दादी साहिबा हज़रत बीबी कमालो साहिबा के मज़ार पुर अनवार पर हाज़री के इरादा से तशरीफ़ ले गये। वापसी के बाद फ़िर उसी हालत की शुरूआत हो गयी। इसी अलालत की हालत

में एक मरतबा जाये नमाज़ पर तशरीफ़ फ़रमा थे और जाये नमाज़ के एक गोशह की जानिब निगाह फ़रमाते और आँसु पोछते जाते थे। सबब मालुम ना था बिल आख़िर जब ग़ौर से देखा गया तो मालुम हुआ के इस्म ज़ात या अल्लाह एक पर्चे पर लिखा हुआ था उसी को देखकर यह आँसु थे।

शुरू रजब से मर्ज़ में ज़्यादति के आसार नुमाँया होते गये। और कमज़ोरी इस क़दर बढ़ गयी के बग़ैर सहारा उठना बैठना दुशवार होने लगा शब व रोज़ में कम व बेश पच्चीस तीस मरतबा पेशाब की ज़रूरत होती थी और यह ताकीद थी के बाद फ़राग़त फ़ौरन जमीन साफ़ कर दी जाए। इस शिद्दत मर्ज़ व कमजोरी की हालत में भी आँखो की ठंडक यानि नमाज़ आख़िर दम तक साथ रही। फ़राएज़ के इलावह तहज्जुद की भी आख़िर वक़्त तक वही पाबंदि रही जो इबतेदा कार से अब तक चली आती थी। इस हालत में नमाज़ के बाद यह कलमात विंद ज़ुबान रहते थे। "या अल्लाह जल्लाजलालहु व अम्मे नवालहू व तआला शानहु" बसा औक़ात एक एक घण्टा तक यही शग़ल रहता था। विसाल से कुछ पहले का वाक़्या है के मुनशि अमजद अली ख़ाँ तशरीफ लाऐ थे और हुज़ूर पलंग पर तशरीफ़ फ़रमा थे। ख़ाँ साहब से बाते हो रही थी के दफअतन आँखे बन्द हो गयी और सर मुबारक पट्टी के क़रीब आ गया था के इसी दौरान हुज़ूर को राहत मिली। मुनशी साहब ने फ़रमाया के ज़रा पिछे सरका दिजिए तो जनाब चचा हकिम सय्यद शाह अबदुल अज़ीम साहब रह० अ० ने अर्ज़ किया के हुज़ूर जरा पिछे सरक जाए। पस फ़ौरन ही आसार जलाल चेहरा अक़दस से ज़ाहिर होने लगे और फ़रमाया अज़ीम तुम मुझे पिछे हटने को कहते हो दुआ करो के ख़ुदा मुझे आगे बढ़ने वालो में कर दे। और कुछ देर तक गिरया फ्रमाते रहे। उस वक़्त हाज़रीन

की अजब हालत हो रही थी। ऐसी हालत बार बार पेश आती थी के बैठे बैठे आँखे बन्द हो जाती थी और सर मुबारक इस क़दर झुक जाता था के अगर हाथ से ना रोका जाता तो पट्टी से जा लगता। और एफ़ाक़ा के बाद कोई असर चशमाने मुबारक में ख़्वाब या ग़ुनुदगी का नहीं मालूम होता था। अगर चे सफ़र हज की वापसी के बाद से दिन का ख़ाना कम हो गया था और उमूमन नाग़ा फ़रमा दिया करते थे मगर इस अलालत में अक्सर दो दो दिन तक रात को भी कुछ ख़ाना ना खाते थे। इस अलालत की हालत में अक्सर ऐसा होता के नमाज़ ग़ैर सम्त क़िबला में अदा फ़रमाने का क़स्द फ़रमाते मगर अर्ज़ करने पर बिला ताम्मुल क़िबला की जानिब मुतावज्ज़ह हो जाते। एक मरतबा अलवत्तह यह फरमाया के सब तरफ अल्लाह है मगर फ़ौरन ही क़िबला की जानिब रुख़ फ़रमा लिया। 10वीं रजब को यक बैक आगरा का क़स्द फ़रमाया गेठरी बन्ध गयी और दूसरा दिन रवानगि के लिए मुक़र्रर किया गया मगर रात को इस क़दर ज़ोफ़ हो गया के करवट बदलना मुशकिल हो गया और 12 बजे रात तक ग़शि की हालत तारी रही। 12 बजे के बाद फ़रमाया के मेरा ख़्याल आगरा जाने का था मगर अल्लाह की मरज़ी नहीं गठरी खोल दो।

हम इस राबतह का ज़िक्र कर चुके है जो हज़रत अक़दस को जनाब सय्यदना अमीर अबुल उला अकबराबादि रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो के साथ था यही राबतह आपको हर तरफ़ से घेर कर आगरा ले आता और सफ़र हज से वापसी के बाद जो ज़्यादा तर क़याम आगरा में हुआ था उसकी असली निसबत और सच्चा सबब भी यही था। आगरा आप को दोस्त का शहर और यह मोहब्बत इस दर्जा तरक़्क़ी पज़ीर हुई के इस अलालत की हालत में भी आपके यह

जेहन नशीन हो गया के आप आगरा में तशरीफ़ फ़रमा है हालाँ के थे दानापुर में और इसी वजह से दानापुरी हज़रात अयादत के ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाते तो आप उनसे यही फ़रमाते के आप ने बड़ी तकलीफ़ फ़रमायी जो आगरा तशरीफ़ लाए।

13वीं रजब को हज़रत अबि व शेख़ि क़िबला मुदाज़िल्लहु (हज़रत मुहम्मद मोहसिन दानापुरी रह० अ०) वज़ु करा रहे थे दफ़अतन वज़ु से हाथ रोक लिए और मकान को बग़ौर चारों तरफ़ दो-तीन मिन्ट तक देखा और हज़रत अबि व शेख़ि से इरशाद फ़रमाया इस मकान को पहचानते हो। आपने अर्ज़ किया हाँ हुज़ूर ख़ानकाह है इसी तरह तीन मरतबा फ़रमाया और हर बार आपने यही अर्ज़ किया। आख़िर में फ़रमाया नहीं इस मकान को इबरत की नज़र से देखो उसी रोज़ इशाँ के वक़्त वज़ु के लिए पानी तलब फ़रमाया मगर चूँके हकीम मुहम्मद हसन साहब की ममानियत थी के पानी का इस्तेमाल ना हो इस लिए पानी लाने में देर किया गया। तो फ़रमाया के इस वक़्त वज़ु कर लेने दो फ़िर तुम को इखतेयार है। आख़िर हज़रत अबि व शेख़ि क़िबला मुदाज़िल्लहु ने वज़ु कराया और आपने इशाँ की नमाज़ अदा फ़रमायी। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के होने के बाद इस्तिनजे से फ़ारिग़ हुए उसी में इस क़दर जोफ़ हो गया के सहारा दे कर चौकि पर से पलंग पर लाऐ गये और कपड़े बदलवाए गये। उस वक़्त से 3 बजे रात तक बराबर ग़शि की कैफ़ियत रही। 3 बजे के बाद एफ़ाका हुआ तो इशारह से फ़रमाया के उठा दो। हज़रत अबि व शेख़ि मुदाज़िल्लहु पुश्त कि जानिब सहारा देकर बैठ गये और हज़रत तकिया पर तैयेमुम करके आधा घण्टा तक कुछ पढ़ते रहे मगर बा वजूद कान लगाने से भी समझ में नहीं आया के क्या पढ़ रहे है।

फ़िर इशारह से फ़रमाया के लिटा दो उस के बाद हालत में ज़्यादह तबदीली हो गयी और उस वक़्त से जो आँखे बन्द हुई फ़िर नहीं खुली। तुलु आफ़ताब के बाद से हर शखस को उनके क़ल्ब मुबारक से लाइलाहा इलल्लाहो की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी। मगर लुतफ़ यह था के जिस क़दर क़रीब होते जाते उस में कमी मालूम होती थी और पलंग के पास कुछ मालूम न होता था। लेकिन महवियत की हालत सब हाज़रीन पर तारी थी। जिस क़दर वक़्त नज़दीक आता जाता चेहरा की चमक दमक बढ़ती जाती थी। सुबह से असर तक यही आलम रहा ताज्जुब यह है के शब के 10 बजे के बाद से फ़िर इसतिनजे को तशरीफ़ नहीं ले गये हालाँ के दिन रात में 25-30 मरतबा इसतिनजे की ज़रूरत होती थी वह लिबास जो जिस्म अतहर पर था अब तक वैसा ही पाक व साफ़ रखा हुआ है। असर के वक़्त सर मुबारक को जुमबिश हुई और इलल्लाह की आवाज़ सब के कानो में आयी और चेहरा मुबारक ख़ुद ब ख़ुद सिम्त क़िबला हो गया इसके साथ ही रूह पाक ने जिस्म ख़ाकि के ताल्लुक़ को छोड़ दिया "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेअुन"।

रजब की 14वीं तारीख़ 1327 हिजरी दो शम्बा का रोज़ असर व मग़रिब के दरमियान वक़्त था यही वक़्त और यही तारीख़ हुज़ूर के वालिद माजि हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी रह० अ० के वेसाल का है। सिर्फ महिना मुखतलिफ़ है। 12 बजे शब को तदफ़ीन से फ़ुरसत हुई। मज़ार अक़दस शाह टोली दानापुर की मस्जिद के पूरब में दरगाह हज़रत मख़दूम शाह सज्जाद वाक़ा ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

मेरे दादा हुज़ूर को ग़ुसुल देने के दरमियान उनके तकिये के नीचे से एक काग़ज़ पर लिखे हुए उनके अशआर मिले। इन रूहानी अशआर से उनके मोक़ाम और दराजात का पता चलता है। वह तारीख़ी अशआर यह है:-

"ख़ुदा की हुज़ूरी में दिल जा रहा है
यह मरना है इसका मज़ा आ रहा है
तड़पने लगी आशिकों की जो रूहें
यह क्या नग़मा रूहुल अमी गा रहा है
अदम का मुसाफिर बताता नहीं कुछ
कहाँ से यह आया कहाँ जा रहा है।"

यह गुल बुटे जो इन सफ़हात को गुलज़ार रंग व बु बना रहे है। हुज़ूर अक़दस के कैफ़ो हाल की तस्वीरे है। और यह नक़शो निग़ार जो नक़्क़ाशा अज़ल के जल्वे दिखा रहे है। हुज़ूर अक़दस के वारदात क़लबि की तहरीरे है।

मेरे दादा हुज़ूर के विसाल के बाद हस्बे रेवायत बतारीख़ 17 शाबानुल मोअज़्ज़म 1327 हिजरी बाद नमाज़ ऐशाँ मशाएख उज़्जाम की मौजुदगी मे मेरे क़िबला व काबा मुरशुदि व मौलायि हज़रत (सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानापुरी) वालिद माजिद अम फैज़हुम कि ख़िदमत में सज्जादए आबायि पेश किया गया। मशाएख़ उज़्ज़ाम ने दस्तारे पेश की। मुरिदिन व मुतवस्सिलिन ने नज़रें गुज़ारी। इस मौक़ा पर आगरा, इलाहाबाद, बनारस, गया, छपरा, पटना के बेशुमार आदमियों का इजतेमा था। उस दौर के बुजुर्गो का मक़ूला है के ऐसा शानदार मजमा ना देखा ना सुना।

"हनोज़ आँ अबरे रहमत दर फिशाँ अस्त
ख़ुम व ख़मख़ाना बा मेहरो निशाँ अस्त"

हुज़ूर अक़दस के विसाल की तारीख़ मेरे क़िबला वालिद माजिद के ज़बान फ़ैज़ तरजुमान से सुनिये। ख़ुसुसियत के साथ मिसरा तारीख़ की मौज़ुनियत और मानि के दोश बदोश अलफ़ाज़ की रवानी मुलाहज़ा फ़रमाये।

क़ता तारीख़

दरीग़ा वालिदे माजिद जे फ़रक़म साया बर चीदन्द
बके ए दिल मुबाहाते कुनम अकनुँ बके नाजम

रबुद अज़ दिल क़रारो सबरो होश आँ क़िबला दीनम
हमह सामाने राख्त सोखता बा सोज़ दर साज़म

न चूँ नरगिस फ़रो बन्दद दमे इँ दिदए हैराँ
मगर दर आरज़ूए दीद चशमे मुनतज़िर बाज़म

बेंबी ऐनक के वजहे दारद अश्क चशमे ख़ूँ नीनम
ब ख़ाँ हाले किताबे दिल अज़ि दिबाचए राज़म

दो शम्बा चार दह बुदा अज़ रजब वक़्ते नमाजे असर
के सुए आशियाने क़ुदस रफ़ता बाज़ शहबाज़म

हुमा दम रफ़तमे अन्दर पेश आवर दमे बाज़श
अगर ऐ काशके बुदन्दे बालो पर परवाज़म

बदिँ मिसरा तारीख़े विसालश याफतम मोहसिन
चुँ सुबहानल लज़ी असरा बेअबदेही आमद आवाज़म

1327 हिज़री

हुज़ूर की शायरी

हम इस रंग में जो हुज़ूर अक़दस का असलि रंग था ऐसे महव हुए के शायरि के मुतालल्लिक़ गोया हमको कुछ लिखना ही ना था। शायरि की इबतेदा मौलाना वहीद साहब इलाहाबादी की सोहबत से हुई जो ख़्वाजा हैदर अली आतिश के मुमताज़ शागिर्दो में से थे। ख़्वाजा आशि का रंग भी सोज़ो गुदाज़ में मुमताज़ दर्जा रखता था। मौलाना वहीद साहब की तसव्वुफ़ आमेज़ि ने उसमे और चार चान्द लगा दिये। हमारे हुज़ूर की हालत बस यहि शायरि का रंग थी। उसको आप हुज़ूर अकदस के दोनो दीवान तजललियाते इश्क़ व जज़बाते अकबर में मुलाहज़ा फ़रमाऐं जिसका हर शेर इल्म तसव्वुफ़ का एक मसला है। और अगर इस क़दर भी तकलीफ़ गवारा ना फ़रमायें तो उपर शेरो से रंग शायरि का अन्दाज़ह कर लिजिऐ जो दमे आख़िर में फ़रमायें और बाद विसाल तकिया के निचे से निकलें।

ज़िक्र ख़ैर क़ुद वतुल आरफीन उसवातुस्सालकीन मौलवि शाह मुहम्मद इदरीस चिश्ति अबुल उलायी, मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत क़ुतुबुल इरशाद हाजिअुल हरमैन अल शरिफैन सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिररेहुमा ।

आप का वतन असलि मौज़ा कोयलावाँ है। यह मुक़ाम बख़्तियारपुर (पटना) से 10 कोस दक्ख़िन वाका है। आप के वालिद माजिद का नाम शेख़ असग़र अली था। 15 साल की उम्र में आप को रूहानियत की सच्ची तलब पैदा हुई और इस हालत में दिन ब दिन इज़ाफ़ा होने लगा। इसी हालत और इसी बेक़रारी में 2 साल की मुद्दत गुज़र गयी। वालदह माजदह जवारे रहमत इलाही में आसुदा हो चुकि थी। वालिद बुर्ज़ुगवार की फ़ितरि मोहब्बत का तकाज़ा था के इस आलमे तनहाई में उनकी ख़िदमत की जाए के यही ज़रिया हुसूले जन्नत है और यही हुकम ख़ुदा वन्द नेमत और तलब सादिक़ मजबूर करती थी के घर से बाहर निकलूँ। जो ढून्ड़ता है पाता है के रौशन मक़ूला को पेश नज़र रखो इसी उधेड़ बुन में और कुछ अरसा गुज़र गया। इनही हालात में दिल की रहबरी से बवक़्त फ़ुरसत हज़रत मख़दूम बयाबानि क़ुदुस अल्लाह सिर्रहू के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर हुआ करते फ़ातिहा पढ़ते झाडू लगाते और नौचन्दी जुमरात को मज़ार में दो ज़ानु बैठते। रफ़ता-रफ़ता दिल लगने लगा। फ़िर तो यह रोज़ का मामूल बन गया।

आप फ़रमाते थे के एक दिन ख़ाब में ऐसा मालूम हुआ के हज़रत मख़दूम बयाबानि क़ुदुस सिर्रहू के मज़ार मुबारक पर हाज़िर हूँ। अचानक एक बुर्ज़ुग सुफ़ैद पोश नूरानी शकल मज़ार से बाहर तशरीफ़ लाऐ और मुझको सीने से लगाकर मुर्शरफ़ फ़रमाया। बेदार हुआ तो दिल बेदार था। आँखें अश्कबार एक वजदानी कैफ़ियत तारी थी। मैं था और दिल की बेकरारी थी। इस वाक़िया ने एक आग सी लगा दी। अब न दिन को चैन मिलता था ना रात को आराम। यहाँ तक के ताएद ग़ैबि ने दस्त गीरि की।

मर्द अज़ ग़ैब बुरूँ आएद व कारे बकन्द (दिल ने आवाज़ दी और काम आसान हुआ) इस इजमाल की तफ़सील यह है के आपके वालिद बुर्ज़ुगवार शेख़ असग़र अलि साहब के मिलने वालों में से एक मोलवि साहब दरवेश सूरत अज़ीमाबाद के रहने वाले हुस्न इत्तेफ़ाक़ से कोयलावाँ तशरीफ़ लाए। शेख़ साहब ने अपने मेहमान अज़ीज़ का पुर तपाक ख़ैर मक़दम किया और ख़ुलूस व मोहब्बत के साथ उनकी ख़ातिर व मदारात होने लगी। शेख़ साहब तो मेजबानी का हक़ अदा कर रहे थे। और साहब ज़ादह बुलन्द इक़बाल सुफ़ी साफ़ी जनाब मोलवि मुहम्मद इदरीस साहब रात को मेहमान अज़ीज़ के पाँव दबाया करते थे आख़िरकार इस ख़ादमाना बरताव ने मेहमान अज़ीज़ के दिल में जगह कर ली। और आपसे पूछा के साहब ज़ादे क्या पढ़ते हो। आप ने अर्ज़ किया गुलिस्ताँ बोस्ता पढ़ता हूँ। यह सुनकर फ़रते मुहब्बत से इरशाद फ़रमाया। साहब ज़ादे अगर तुम को तालीम का शौक़ है और वाक़यि इल्म हासिल करना चाहते हो तो मेरे शामिल पटना चलो। वहाँ तालीम व तरबियत ब उनवान शाइस्ता होगी। यह सुनकर वह जाने को तय्यार हो गए। मगर आप के वालिद

माजिद इसके लिए तैयार न थे। मगर मेहमान अज़ीज़ की दिल आज़ारी और फ़रज़न्द दिल बन्द की बेक़रारी का ख़्याल करते हुए आप ने इजाज़त दे दी। बल्के मेहमान अज़ीज़ के हमराह साहब जादे को पहुँचाकर वापस गये। अब ख़िदमत गुज़ार शागिर्द और शफ़ीक़ उस्ताद दोनो मसरूफ़ तालीम व ताअल्लुम थे। तालीम ज़ाहरि के साथ तालीम बातनि का आग़ाज़ भी होने लगा था इस लिए के उस्ताद शफ़ीक़ सुफ़ी मशरब थे और अज़ीमाबाद की जुमला ख़ानकाहों के मजालिस में उनकी शिरकत होती थी और शागिर्द रशीद भी हमराह होते थे। होनहार शागिर्द के लिए उर्स बुर्ज़ुगान की हाज़री और मजालिस समा (क़व्वाली) और सुफ़ियो की वा रफता हाली। तालीम बातिन का संग बुनियाद साबित हुई। गोया तालीम ज़ाहरि के दोश बदोश तालीम बातनि का सिलसिला भी जारी हो चुका था मगर क़लबे मुशताक़ रहबरे कामिल की तलाश में परीशान था आगाज़ का तो शऊर था अनजाम से बे ख़बर था। मशाएख़ीन उज़्ज़ाम के हुज़ूर में हाज़िर होते थे। मगर दिल गिरफ़्ता वापस होते थे। ना कोई आँखो में समाता था ना किसी का जाहो जलाल भाता था। यहाँ तक तलब सादिक़ ने दस्तगीरी की और हुस्न इत्तेफ़ाक़ से यह सूरत पेश आई के आप को अपने शफ़ीक़ उस्ताद के साथ में बा सिलसिला तक़रीब एक गाँव में जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। क़ुतुबुल इरशाद हज़रत जद्दे अमजद हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी क़ुदुस सिर्रहू भी वहाँ रौनक अफ़रोज़ हुए। मेज़बान साहबे दिल ने हस्ब मरातिब का ख़्याल करते हुए हुज़ूर अक़दस के वास्ते मसनद निछवायि। मगर आपने हुक़्म देकर मसनद उठवा दी और यह इरशाद फ़रमाया के मुझको मेरी नज़र में दीगर ब्रादरान तरीक़त पर कोई वजह फ़ज़्ल की नहीं मालुम होती है।

फ़रौतनि अस्त दलील रसीद गुमा कमाल
के चूँ सवार बा मंज़िल रसद प्यादह शब्द

इस ख़ाकसारी और इन्केसारी की अदाऐ दिलकश ने शाह मुहम्मद इदरीस साहब का दिल मोह लिया और ऐसे वालहाना अन्दाज़ से क़दमबोस हुए के सही मायनो में फ़िर इन क़दमों से ता दम आख़िर जुदा न हुए। इस वाक़िया से पहले शाह मुहम्मद इदरीस साहब रहमत उल्लाह अलैह का दिल बेक़रार था और आँखे अश्कबार। अब मुलाहेज़ा फ़रमाऐ तो क़ल्ब मस्ते मये विसाल है और आँखो में शराबे इश्क का कैफ़ो ख़ुमार। जब तक गाँव में हुज़ूर का क़्याम रहा मोलवि साहब को बारयाबि का मौक़ा मिलता रहा। उसके बाद दानापुर ख़ानक़ाह में हाज़िर होने लगे। ख़ुदा को पाने लगे और ख़ुदि को खोने लगे। यह सिलसिला पाने और ख़ोने और पिलाने का जारि था के उस्ताद शफ़ीक़ ने दायि अजल को लब्बैक कहा यानि इन्तेक़ाल फ़रमाया। इस हादसा जाँगुज़ार के बाद दिल बरदाशता होकर पटना से अपने वतन कोईलावा चले आऐ। तालीम ज़ाहरि से एक हद तक बे न्याज़ हो चुके थे। अब तालीम बातनि का ख़्याल आया तो रख़्त सफ़र बान्धा और दानापुर ख़ानकाह की तरफ़ क़दम बढ़ाया। क़ुतुबुल औताद जद्दे अमजद हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी हुज़ूर सिर्रहू के हुज़ूर में हाज़िर हुए। और इस आईना ख़ुदा नुमा के नाज़िर हुए। निगाहें फ़ैज़ असर का ज़हूर होने लगा। ख़्याल मासवा दिल से काफ़ूर होने लगा। रफ़ता-रफ़ता ख़िदमत खास से सरफराज़ होने लगे। अपने हम चशमो में मुमताज़ होने लगे।

मुजाहदात व रियाज़ात का असर बशरे से ज़ाहिर होने लगा। दामने दिल अलाएश ज़ाहिरी से ताहिर होने लगा। इधर तो हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस साहब सुलूक की मंजिलें यत फ़रमा रहे थे उधर आपके वालिद माजिद शेख़ असग़र अलि साहब एकलौते बेटे की मुजरदाना ज़िन्दगी से घबरा रहे थे। जब ख़त व किताबत के ज़रिया से यह मामला तय होता नज़र न आया तो शेख़ असग़र अली साहब ने दानापुर का इरादह फ़रमाया हर चन्द हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस साहब अज़्दवाजी ज़िन्दगी को अपने लिए पसंद नहीं फ़रमाते थे मगर मुर्शिद बरहक़ के हुक़ुम बजालाना का ऐहतेराम करते हुए "सरे तसलीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आऐ" कहते हुए इस क़ुरबानी के लिए भी तय्यार हो गये। हासिल कलाम पेदर बुर्ज़ुगवार ने दिल का हौसला निकाला और फ़रज़न्द दिलबन्द को अज़्दवाजी सिलसिला में मुनसलिक कर दिया। इस शादी ख़ाना आबादी का ज़हूर इस तरह हुआ के एक दुख्तर नेक अख़तर पैदा हुई और अहलिया मोहतरमा ने भी कुछ अरसा के बाद इन्तेक़काल किया। फ़िर आपके वालिद माजिद ने भी इस दारफ़ानी से आलमे बक़ा की तरफ़ कूच फ़रमाया। "वही होता है जो मनज़ूरे ख़ुदा होता है" पै दरपय हादसात के बाद फ़िर शाह मुहम्मद इदरीस साहब मुर्शिद बरहक़ के हुज़ूर में हाज़िर हुए और बैत के तालिब हुए तो इरशाद हुआ के अभी वक़्त नहीं आया है। बा इ हमा तालीम बातनी का सिलसिला जारी रहा। आते-आते वह वक़्त भी आ गया जिस के लिए हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस का दिल बेक़रार था। चुनानचे हुज़ूर अक़दस ने ख़िलवत में

तलब फ़रमाकर अख़ज़ बैत के साथ मुर्शरफ बा इजाज़त व ख़िलाफ़त भी फ़रमा दिया। आप बैतन चिश्ती थे और तालिमन अबुलओलायी। इन दानो निसबतों का ज़हूर मजलिस समाँ (क़व्वाली) में कैफोहाल के वक़्त होता था। अख़ज़ बैत व सुपुर्तगि ख़िलाफत के बाद ही से मुर्शिद बरहक़ की ना साज़ी मिजाज़ का सिलसिला शुरू हो गया। यहाँ तक के 14 ज़िकादह 1298 हिजरी में वासिल बहक़ (वफ़ात) हुऐ।

मनाज़िले सुलूक

मुर्शिद बरहक़ (हज़रत हाजी शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी रह० अ०) के विसाल ने हज़रत शाह इदरीस साहब को बे इन्तेहा दिल शिक़स्ता बना दिया था और अपने मुर्शिद अदिमुल मिसाल की जुदायी से अक्सर बेताब व बेक़रार रहा करते थे अरसा दराज़ तक तो मज़ार मुबारक की ख़िदमत से दिल बहलाते रहे। एक दिन ख़ाब में हुज़ूर हज़रत सय्यद शाह सज्जाद दानापुरी रह० अ० की ज़ियारत से मुर्शरफ़ हुए हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया के "इदरीस यहाँ पड़े रहने से बेहतर है के मख़लूक को फ़ायदह पहुँचाओ जाओ अपना काम करो यह काम तुम्हारा नहीं है।" आप ने इस वाक़्या को अपने पीर के साहब ज़ादे हज़रत जद्दी हाजी सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानिशमन्द अबुलउलायी दानापुरी क़ुदुस सिंरहू की ख़िदमत में अर्ज़ किया। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया "तरीक़त ब जुज़ ख़िदम्ते ख़ल्क नीस्त" और ख़िदमते ख़ल्क का मफ़हूम यह है के रास्तये ज़लालत से निकाल कर शरिअत के साथ-साथ तरीक़त की तरफ़ उनकी रहनुमायी की

जाए। इस मक़सद को पेश नज़र रखिये और ख़ुदा का नाम लेकर क़दम आगे बढ़ाऐं। लाचार आस्ताने से जुदा हुए तो वतन आए। घर पहुँच कर ताल्लुक़ात ज़ाहरी रंग लाए। दिल की आँखें बन्द होने लगीं। दुनियावी उम्मीदें सर बलन्द होने लगीं। कभी दुनिया का ख़्याल आता था तो कभी ख़्याल आख़रत दिल को लुभाता था। अलर्गज़ इसी कशा कश में आलमे रोया (ख़ाब) में पीर रौशन ज़मीर ने इरशाद फ़रमाया के फ़कीर को अपनी असली हालत पर रहना चाहिऐ तब वह कुछ हासिल करेगा वरना इस तरीक़ा के फ़ैजान से बे नसीब रहेगा। इबराहिम अदहम के हालात देखो जब उनको तलबे फ़क़्र पैदा हुई तो बादशाही छोड़नी पड़ी। यह ख़ाब था या ताज़ियानह इबरत जिसने दिल व दिमाग़ में तास्सुरात पैदा कर दिये के दोनो ख़ाब ग़फ़लत से चौकें और अपने काम से लग गऐ शाह मुहम्मद इदरीस साहब पर इस सच्चे ख़ाब ने यह असर किया के घर बार साहब ज़ादी के सुपुर्द करके तन ब तक़दीर ख़ुदा का नाम लेकर निकल ख़ड़े हुए। चलते चलाते राजगीर पहुँचे तो यह ख़्याल कर के बिस्तर लगा दिया के अब ज़िन्दगी के बाक़ी दिन यही गुज़र जाएं तो अच्छा है। मगर चन्द महीनो के क़्याम के बाद हुक्म हुआ के आगे बढ़ो अपनी मंज़िल तलाश करो। क़हर दरवेश बजानो दरवेश बादल नाख़ास्ता रुख़्सत हुए मगर हैरान थे के कहाँ जाउँ मंजिल का पता किस तरह लगाउँ ज्येठ की चिलचिलाती धूप में ख़रामा-ख़राम रवाना हुए। वतन मालूफ़ा के पास से होकर गुज़रे मगर वतन का ख़्याल भी दिल में न आया यहाँ तक के बख़्तियारपुर पहुँच गयें। तो मालुम हुआ के पूरब जाने वाली गाड़ी आने वाली है। एक स्टेशन का नाम

याद था वही का टिकट लिया और वही उतर गए। मगर यहाँ भी वही ना खुलने वाली गिरह सामने थी के कहाँ जाऐं किधर का रुख़ करें आखिर दिल को ख़िज़्र राह बनाया और उसी के मशवरह पर ख़ुदा का नाम लेकर एक तरफ़ चल पड़े कुछ रात गये एक गाँव में पहुँचे तो एक मस्जिद नज़र आयी जिसकी साख़्त ज़बान हाल से अपनी क़दामत का इज़हार कर रही थी उसकी दिलकशि ने मजबूर किया के कुछ रोज़ यही क़्याम फ़रमायें और नाम के मुस्लमानोको काम का मुस्लमान बनायें। निढ़ाल परीशान हो चुके थे ख़ुदा का नाम लेकर ख़ुदा के घर में दाख़िल हुए। अब यह ख़ुदायी महमान थे और गाँव वाले मेज़बान। शाह साहब तो इस ख़्याल में थे के थकान सफ़र दूर होतो आगे बढ़ू और गाँव के हर फ़र्द बशर का यह ख़्याल था के उनको रोकूँ और इस मस्जिद का मुसतक़िल इमाम मुक़र्रर करूं आख़िरकार गाँव वाले के बढ़े हुए इसरार से मज़बूर होकर उनकी दरख़ास्त क़ुबूल कर ली गयी।

अब शाह साहब इमाम थे और गाँव के मुसलमान उनके मुकतदि सारे मुक़तदि ख़ादिम बे उज़्र बने हुए थे इमाम साहब की ख़ातिर व मदारात में लगे हुए थे। यह सब कुछ था मगर इमाम साहब का दिल मुतमयीन न था। मुक़तदियों के एख़लाक़ का तक़ाज़ा था के यहीं क़्याम किया जाऐ। मगर दिल का मशवरह था के क़दम आगे बढ़ाया जाए इसी कशम कश में 2 साल की तवील मुद्दत गुज़र गयी। मगर इस क़लील मुद्दत में मुक़तदियो की हालत भी सुधर गयी। जब दिल का इसरार ज़्यादह बढ़ा तो मुक़तदियों से हिला हवाला किया और उसी बे सरो सामानी के साथ क़दम आगे बढ़ाया। इसी रास्ता तय

करते हुए ठहरते ठहराते पुर्णिया ज़िला में वारिद हुए और गढ़ बनेलि के क़रीब मुक़ाम दो गच्छी से गुज़रे तो यह मुक़ाम दिल कशा पसन्द ख़ातिर हुआ "करिशमह दामने दिले मीकशद के जा इँ जास्त" जिस दिल ने ठोके दे दे के घर से निमाला था। उसी दिल ने दो गच्छी में अक़ामत का मशवरह दिया और यह मशवरह क़बूल भी कर लिया गया। वहाँ के बाशिन्दे वालेहानह अन्दाज़ से पेश आए शाह साहब ने भी ख़ल्क़ मुहम्मदी के जलवे दिखाऐ। ज़्यादह दिन नहीं गुज़रे थे के शाह साहब ने गाँव के बाहर एक मस्जिद और एक हुजरा की बुनियाद डाल दी सुबहान अल्लाह। इन नाम के मुसलमानो को काम का मुसलमान बनाने की सूरत निकाल दी अल्लाह वालों का बोल बाला हुआ। मुसलमानो के इत्तेफ़ाक़ और यकजहति का ग़ुलग़ुलह दो बाला हुआ। मस्जिद ने नमाज़ियों को आग़ोश रहमत में ले लिया हुज़रा शाह साहब की इबादत गुज़ारी से बुकऐ नूर बन गया। रफ़ता-रफ़ता आप के कश्फ़ व करामात का ग़ुलग़ुलह बलन्द हुआ। जो बारयाब हुआ वह सर बुलन्द हुआ। अल्लाह के बन्दे आते थे। मुरादें पाते थे यहाँ तक के 20 साल की तवील मुद्दत उसी हुजरह में अल्लाह अल्लाह करते गुज़ार दी। और इसके अतराफ़ व जवानिब में मुसलमानो की हालत सँवार दी। उसी ज़माना में "गढ़ बनैलि" से बारह कोस पूरब एक साहबे कैफ़ बुर्ज़ुग अज़िमाबाद के रहने वाले हज़रत शाह लियाक़त हुसैन साहब रहमत उल्लाह अलैह मौज़ा हट गाँव में मुक़ीम थे। जिनके मोतक़िदीन का सिलसिला बहुत वसी था जब उनके विसाल का वक़्त हुआ तो उन्होंने अपने एक मुरीद और ख़लीफ़ा शेख़ अनज़ार अली साहब को वसीयत की के मेरे बाद दो

गच्छि जाना वहाँ एक बुर्ज़ुग शाह मुहम्मद इदरीस चिश्चि है उनकी ख़िदमत में तालीम तरीक़त की तकमील करना वह मेरे हम सिलसिला है। चुनानचे शेख़ साहब मौसूफ़ वसीयत के मुताबिक आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुऐ। कुछ रद्दो कद के बाद उनको अपने हलक़ह इस्तर शाद में दाख़िल फ़रमा लिया। इस सिलसिलह रुशदो हिदाएत के कुछ अरसा बाद शेख़ अनज़ार अली साहब के इसरार से उस माहे कमाल साजदी ने कुम्हीया इस्लाम नगर के तारीक गोशों को मुनव्वर फ़रमाया। घर बैठे ख़ैरो बरकत का ख़ज़ाना हाथ आया। कश्फ़ो करामत की बिजलियाँ चमकने लगीं। रहमते हक़ की बुन्दे बरसने लगीं। दरयाए फ़ैज जारी हुआ। मुबतदियों पर कैफ़ो हाल तारी हुआ। 6 महीने इसी देते दिलाते में गुज़रे। तो शाह साहब फ़िर दो गच्छि की तरफ़ रवाना हुए।

दूसरे साल फ़िर शाह इदरीस साहब ने कुम्हीया वालो पर करम फ़रमाया। नशिस्तेगान बादऐ ज़लालत को ख़ुदा से मिलने का रास्ता बनाया। इसी तरह यह तबलीग़ी इदारह बहुस्न खुबी अपना काम अन्जाम देता रहा। मुरीदीन व मोतक़ेदीन का हर फ़र्द बशर ख़ुदा का नाम लेता रहा। अलर्ग़ज़ उन परस्ताराने तौहीद की तालीम बातनि और मज़हबी निगरानी का ख़्याल फ़रमाते हुऐ शाह साहब ने दो गच्छि का क़्याम तर्क फ़रमाया। और कुम्हीया वालों को नवाज़ह के उनके वतन को अपना वतन बनाया। ख़्याली दूरी दूर हो गयी न कोई हासिल हुई दूरी हमेशा के लिए काफ़ूर हो गयी। परस्ताराने तौहीद की जमाअत बढ़ने लगी। बुत परस्तों बे दीनो की ताक़त घटने लगी सब कुछ था मगर मुतावस्सिलीन के लिए एक जगह सर जोड़ कर बैठने की कमी

थी। यही फांस शाह साहब के दिल में खटक रही थी उसका सामान भी ज़िन्दगी के आख़री दौर में फ़रमालिया। यानि ख़ुदा का नाम लेकर मस्जिद का संग बुनियाद रख दिया। ख़ानकाह, ईदगाह, आलिशान गुम्बद की तामीर का सिलसिलह भी मस्जिद के दोश बदोश शुरू कर दिया गया। इस तामीरी जद्दोजेहद की तकमील के बाद अपने पीर (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद नक़शबन्दी दानापुरी रह० अ०) के उर्स की शिरकत के लिए दानापुर ख़ानकाह तशरीफ़ ले गये। चन्द मुरीदान ब एख़्तेसास भी इस सफ़र में साथ थे हज़रत अबि व शेख़ि अम फ़ैज़हुम (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानापुरी रह० अ०) से पहली मुलाक़ात में फ़रमाने लगे के या हज़रत जब मैं चिराग़ सहरी हूँ इस लिए इन लोगो को साथ लाया हूँ के सबको आपके सुपुर्द करा दूँ और पीर रौशन ज़मीर की आस्तानह बोसि अपने सामने दरा दूँ।

विसाल

इस सफ़र से वापसी के बाद सफ़र दयारे महबूब का तहयीया फ़रमा रहे थे के सफ़र आख़रत पेश आया। मौत के फ़रिशते ने मुजदहऐ विसाल इलाही सुनाया। यानी ब आरज़ऐ बुख़ार 10 जमादिस्सानी पंज शम्बा के दिन ब वक़्त एशाँ 1351 हिजरी में विसाल फ़रमाया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेउन। दूसरे दिन मुतवस्सिलीन ने आलिशान गुम्बद में जिस्म अतहर को सुपुर्द ख़ाक किया मज़ार मुबारक संग मरमर का है लौह मज़ार भी इसी नूरानी तुर्बत का नमुना है जिस पर यह ऐबारत ब ख़त जलि कन्दा है। "क़ुतुबुत अकताब हज़तर आशिक़ मौला शाह मुहम्मद इदरीस चिशति कोयलानवि अज़िमाबादी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू अज़ीज़।"

बक़ा किसि को नहीं इस जहान फ़ानि में
रहेगा हममे से क्या कोई जब नबी न रहे

आप के विसाल की ख़बर बिजली की लहर की तरह फैल गयी। अतराफ़ व जवानिब में एक ज़ल ज़ला सा पड़ गया। जिसने यह ख़बर सुनी उसका नक़शह बिगड़ गया मुरीदीन के घरों में सफ़े मातम बिछि हुई थी। मुसर्रत व शादमानी दिलो से काफ़ूर हो चुकी थी सच है किसी क़बीलह में से किसी अल्लाह वाले का उठ जाना और क़्यामत का आना। दोनो बराबर है। बलके इस सानहा इनतेक़ाल की अहमीयत आने वाली क़्यामत से बालातर है।

हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस साहब रहमत उल्लह अलैह अपने पीरो मुर्शिद ज़मीर (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानिशमन्द दानापुरी रह० अ०) के आशिक़ ज़ार थे ओर मुर्शिद हक़ नुमा के बातिनी कैफ़ियत की मोहब्बत में गिरफतार थे वह राज़ जो दिल की गहरायियों में मख़फ़ि था। जज़बात की कश मकश से ज़ुबान पर आया। ज़ुबान ने क़लम को आला कार बनाया। क़लम ने अपना ज़ोर क़लम दिखा दिया उनकी छपी हुई किताब "गंज इरफ़ान" मुलाहज़ह किजिए और उस ग़रीक़ रहमत के क़लबी मोहब्बत की दाद दिजिए। पेज नं०-159 में तहरीर फ़रमाते है-"फ़क़ीर हक़ीर मुहम्मद इदरीस अबुल उलायी साकिन मौज़ा कोयलावाँ बिहारी अजीमाबादी को इजाज़त व ख़िलाफ़त मुर्शिद व मौलायी मख़दूमी व क़ुतुब वक्त व यूसुफ़ दौराँ आरिफ़ व मारिफ़ राज़दार रमूज़ नहानि व आशिक़ जावाँज़ मस्त अलस्त यज़दानी हज़रत हाजी सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद अबुल उलायी दानापुरी नुरुल्लाह मरक़दहु से अता हुई है।

आप का विसाल हक़ 14 माह जिक़ादह बरोज़ दो शमबह वक़्त मग़रिब 1298 हिजरी में हुआ है और 14 माह ज़िक़ादह को हर साल आप का उर्स धूम धाम के साथ दानापुर ख़ानकाह में हुआ करता है और दूर दूर के लोग शरीक हुआ करते है। और जो हाजत मन्द मज़ार शरीफ़ पर आते है अल्लाह के हुक्म से हर शख़्स का मतलब बर आता है। इस दरबार से कोई महरूम नहीं जाता है जिसकी तक़दीर में मतलब बर आना नहीं है वही महरूम यहाँ से जाते होंगें। ऐसे शख़्स कम है जो हुज़ूर के दरबार से महरूम गये होगें। अल्लाह के फ़जलों करम से कसरत से लोग बामुराद जाया करते है। बाद विसाल हुज़ूर के साहब ज़ादह जागुज़िन सज्जादहनशीन इस जाए पाक के हमारे सरताज हमारे पुश्त पनाह हमारे नवाज़ने वाले शिरिं कलाम फ़सिहुलब्यान मुलकुल शोअरा मख़दूम जहाँ गशत मुर्शिदि व मौलायी सय्यद शाह मुहम्मद अकबर अबुल उलायी दानापुरी क़ुदुस अल्लाह सिंरहू थे। आप अकसर अपनी ज़िन्दगी में अकबराबाद में मज़ार पुर अनवार हज़रत सय्यदना अमीर अबुलओला अकबराबादी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हों पर रहा करते थे। अयाँ रा ब्यान हाजत निस्त। हर दयार में बद्र मुनीर की मानिन्द रौशन जहाँ थे। आप की तसनीफ़ात बहुत है जिसके मुतालह से आप की इस्तेदाद इलमी और उलुऐ कमलियत ज़ाहिर होती है आप के मुरीदीन ब कसरत है। विसाल को 6 साल गुज़रे है। मज़ार शरीफ़ आप का दानापुर दरगाह मख़दूम शाह सज्जाद रह० में है और हर साल 14, 15 रजब को उर्स हुआ करता है। अब आपके साहबज़ादे जागुज़िन व सज्जादह नशीन व हादि मतीन हज़रत मौलाना व मख़दूमना सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन साहब अबुल ओलायी दानापुरी दाम बरकातहु है। माशा अल्लाह यह

बुर्जुग भी बड़े साहबे कासिब है। दिन रात याद इलाही में मशग़ूल रहा करते हैं और साहबे नेक बख़्त व साहबे एख़लाक़ है। नूर इलाही आपके चेहरह मुबारक से जलवह गर है। आप से लोग मुरीद हुआ करते है और फ़ैज़ से आप के मामूर हो रहे है। यह फ़ुक़रायि ख़ान्दानी है। अल्लाह तआला मुर्शिद जमा को उमरो ख़िज़री व तआला सिकन्दरी उता फ़रमाए। बन्दऐ नाचीज़ आप के दर का कुत्ता है। आपकी नज़र मुझ फ़क़ीर पर ज़िन्दगी से हशर तक रहना चाहिऐ।"

गो बुरा हूँ या भला जैसा हूँ मैं
सग तेरे ही दर का कहलाता हूँ मैं
(तमाम हुई इबारत गंज इरफान की)

तसनीफात

आप की तसानीफ़ में गंज इरफ़ान, दाफ़ेउल मोहिम्मात, वजाएफ़ुल आरफ़ीन और एक दीवान (बनाम सैरदा) है। के मुतालह से आप की इल्म दोस्ती और तबहुर इल्मी का पता चलता है। मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए तो अब भी रिसाले मशअल हिदायत है। उनहीं के मुतालह से उनका दिल बहलता है। सय्यदुल सादात साहबे मुक़ामात हज़रत सय्यदना अमीर अबुल ओला हसनि अल हुसैनि अकबराबादी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो के फ़ारसी रेसाला का उर्दू में तरजुमा फ़रमाया है ग़ौर से देखिये तो कूज़े के अन्दर ज़ख़्ख़ार जोश मार रहा है। जालेका फ़ज़लुल्लाहे यूतीहे मईं यशाओ।

शानदार कारनामे

अतराफ़ व जवानिब में मज़हबी इबादतगाहो की कमी महसूस की जा रही थी। और यही कमी ग़ैरत मन्द मुस्लमानो को शरमा रही थी। चुनानचे सब से पहले जोकि हार्ट की तरफ तवज्जा मबज़ूल हुई। और ख़ुदा के फ़ज़्ल से शाह साहब की यह सअि मशकूर मक़बूल हुइ के एक पुख़्ता मस्जिद, वसी ईदगाह बनकर तय्यार हो गयी। चारो तरफ़ दीवार क़ायम हो गयी। इस ईदगाह की तौलियत के लिए शाह साहब ने अपने मुरीद व मजाज़ बेरादर तरीक़त शेख़ मुनशि नूर मुहम्मद साहब चिश्ति रईस मौज़ा हरवा को मुनतख़िब फ़रमाया और सनद तवल्लियत तहरीर फ़रमाकर मुनशि साहब मौसूफ़ को बाज़ाबतह मुतावल्लि बना दिया। मुनशि नूर मुहम्मद साहब शाह साहब के मुरीद ख़ास व ख़लीफ़ा बा एखतेसास हैं। बातिन ज़ाहिर की तरह और जाहिर बातिन की तरह दरख़्शाँ है। निसबत का नूर माशा अल्लाह चेहरा से नुमायाँ है। मुझसे मुहब्बत व ख़ुलूस से पेश आते है। अपने पीर-व-मुरशिद का इरशाद बजा लाते है। अल गर्ज़ जोकि हार्ट की मस्जिद और ईदगाह की तामीर से मुसलमान ख़ाब गफ़लत से बेदार हो गये। और अपने अपने क़सबात व करयात में मसाजिद की तामीर के लिए मुत्तहिद व तय्यार हो गये। यह सिलसिलह जिस सर गर्मि के साथ शुरू किया गया था अलहमदोलिल्लाह के उसी जोश व ख़रोश के साथ हुसने एख़तेमाम को पहुँचा। अब तमाम आस पास गाँव की मस्जिदें आबाद नज़र आती है। और अपनी ज़ाहिरी व बातनि पाकीज़गियों से मुसलमानो का दिल लुभाती है।

कश्फो करामात

औलिया अल्लाह के तौर तरीक़ा और कश्फ़ो करामात से कोई समझदार आदमी इनकार करने की जुर्रत न करेगा। मगर ख़्वाह मुख़ाह इस राह दुशवार गुज़ार में कदम भी न धरेगा। मेरे ख़्याल में शाह साहब की सब से बड़ी करामत और उनका ज़बरदस्त तसर्रुफ़ यह है के उन्होंने हैवानो को इन्सान बनाया। बुत प्रस्तो और ला मज़हबों को पक्का मुसलमान बनाया। गुनाह व झूट की ज़िन्दगियों का ख़ात्मह हुआ, कुफ़्र व तुग़यानि का ख़ातिर ख़्वाह उजाला हुआ। हम उन्हीं ग़ैर मामुली वाक़ियात को ज़िन्दह करामत समझते है और हमारी बोल चाल में उन्हें माद्दि इन्क़लाबात को ख़र्क आदत कहा जा सकता है। क़िबला अरबाब मारफ़त हज़रत जद्दि अल्लामह हाजी सय्यद शाह मुहम्मद अकबर दानापुरी दानिशमन्द क़ुदुस सिर्रहू का फ़ैसला मुलाहज़ह फरमाऐं।

है बहस किस को कशफ़ व करामाता में आप की
अकबर तुम अपने वक़्त के अबदाल ही सही
लेकिन यह बीत आप ने शायद नहीं सुनी
बेरून गोर लाफ़े करामत चे मी ज़नी

ईमान अगर बगोर बरि सद करामत अस्त

बट्टे बाज़ो के से लटके है यह सब कश्फ़ व शहूद
आदमी वह है जो हो ताबे हुकमे माबूद
ज़ोर व ज़र ज़ात से इन्साँ की नहीं है मक़सूद
शर्फ़ नफ़्स वजूद अस्त व करामत ब सजूद

हर के इं हर दो नदारद अदमश ब ज़े वजूद

किसी को हो जो ना तकलीफ़ जात से तेरी
तो एक ज़माना तुझे समझे आँख की पुतलि

वजूद जिन का है क्या चीज़ क्या है हूर व परी
गर आदमी सिफ़ाती अज़ मुल्क गिर्द बबरी

के सजदह गाहे मलक ख़ाक आदमी ज़ाद अस्त

अख़लाक़ व आदात

आप की ज़ात एख़लाक़ मुहम्मद सलल्ललाहो अलैहे वसल्लम का आइनह थी। और इसी आईनह रौशन की जलवह गरि तादम आख़ित रही। सिलसिलह की रोज़ अफ़्जु अशाअत में अख़लाक़ी पहलु सब से ज़्यादह नुमायाँ था। यारो अग़यार सब पर आप के ख़ुल्क़ व मुहब्बत का असर यकसाँ था। ख़ाकसारी व इनकसारी दाख़िल फ़ितरत थी। हुजूम से नफ़रत ख़िलवत से रग़बत थी सुलूक तो दाख़िल फितरत हो चुका था मगर रुहानी कैफ़ियत के वक़्त जज़्बि हालत का ज़हूर होता था। ख़ुलासए कलाम आप की ज़ात जामा कमालात सूरत और सीरत से ज़ाहिर थी या यूँ समझीये के इस परदह में पीर रौशन ज़मीर (हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद सज्जाद दानापुरी रह० अ०) रूहानियत की जलवा गरी थी।

इसी यकताई का है नाम वस्ल अहले मुहब्बत में
के आशिक़ देख ले माशूक़ को अपनी ही सूरत में

मुरीदीन व मुस्तर शदीन

मुरीद और तालीम लेने वालों की तादाद काफ़ि बतायी जाती है। लेकिन इस किताब में सिर्फ़ तालीम लेने वाले के हालात पर रौशनी डाली जाती है। इस लिए के एख़्तेसार मद्दे नज़र है और यह रेसालह बिल्कुल मुख़्तसर है।

शेख़ अबदुल ग़फ़्फ़ार साहब चिश्ती साकिन कुम्हीया इस्लाम नगर ज़िला पुर्णिया यह मुरीद भी हैं ख़लीफ़ा भी है। यह अपने शेख़ के मनज़ूर नज़र और सरर्गम कारकुन थे। आख़री दौर में उन्हीं के मकान में क़्याम था और विसाल भी उन्हीं के मकान में हुआ। माशा अल्लाह दस्त बकार दिल ब्यार (दिल सख़ी और ख़िदमत) के मिसाल वाले है। अशाअत सिससिलह भी हो रही है। अपने पीरो मुरशिद के सालानह उर्स में नुमायाँ हिस्सा लेते है। फ़क़ीर मुअल्लिफ से निहायत दर्जा का रब्त क़लबि है। अल्लाह तआला शानहु हमेशा इस तरीक़ा को क़ायम रखे।

मुनशि शेख़ नूर मुहम्मद साहब चिश्ती साकिन हरवा ज़िला पुर्णिया यह भी मुरीद व ख़लीफा है। जोकी हार्ट की ईदगाह के सिलसिलह में उनके हालात पर रौशनी डाली जा चुकी है। मुनशि शेख़ गौहर अली चिश्ती साहब रह० साकिन हरवा वह बे रिया बा सफ़ा दरवेश थे। मुरीद व ख़लीफ़ा भी थे! 4 रबिउस्सानि बरोज़ सोमवार 1359 हिजरी को विसाल हुआ। अब उनके जानशीन अज़ीज़ क़लबि मुनशि मुहम्मद सिद्दीक़ साहब है जो उनके दामाद भी है। फ़कीर मुअल्लिफ़ यानी (हज़रत हाजी सय्यद शाह मुहम्मद ज़फ़र

सज्जाद दानापुरी) से नक़शबनदिया अबुल उलायीया सिलसिलह में बैत कर ली है।

शेख़ अनज़ार अली साहब उनका मसकन व मोलिद कुम्हीया इस्लाम नगर है। गफ़लत से दूर हैं दिल बा ख़बर है। हज़रत शाह लियाक़त हुसैन साहब अज़ीमाबादी की बैत से सरफराज़ हुऐ और हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस चिश्ती रह० ने नवाज़ा साहिबे मजाज़ (ख़िलाफस से) हुऐ। इनके दो लड़कों अज़ीज़ान गुलाम मोहि उद्दीन व शमसुद्दीन सललमाहुम ने फ़क़ीर मोअल्लिफ़ (यानी हज़रत हाजी सय्यद शाह ज़फ़र सज्जाद दानापुरी) से बैत कर ली है। माशा अल्लाह दोनो नेक बख़्त और सआदत मन्द हैं। फ़िर यके बाद दिगरे अज़ीज़ान मुनशि फ़य्याज़ मदउमरहु साकिन कुम्हीया व शाह क़हर उद्दीन साकित डोमरिया व शाह अज़ीज़ व शेख़ मुनशि सिराज उद्दीन वग़ैरहुम भी फ़कीर मुअल्लिफ़ से मुशर्रफ़ व बैत हुए। फक़ीर सुरत फ़क़ीर सीरत शाह अब्दुल रहमान साहब साकिन शहर मुरादाबाद मोहल्ला असालत पुरह ख़ानह चौधरियान। बैत के बाद इजाज़त से मुर्शरफ़ हुए। मोतावककिलाना ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। मुरशिद के नक़श कदम पर चल रहे हैं। अशाअत सिलसिलह हो रही है।

शेख़ दिलावर अली साहब व शेख़ याक़ूब अली साहब साकनान सनगोरह डाकख़ाना जोकी हार्ट ज़िला पुर्णिया यह दोनो भी अपने पीर रौशन ज़मीर (शाह इदरीस रह०) के मुरीद व मजाज़ हैं। कैफ़याते बातनी से सरफ़राज हैं।

शेख़ वाहिद वाहिद अली व शेख़ अनज़ार अली साकनान कासी बाड़ी व शेख़ अबदुल समद ब शेख़ अबदुर रहमान तहसीलदार व शेख़ असहाब अली साहेबान साकनान मौज़ा मोहनिया डाकख़ाना

पलासी ज़िला पुर्णिया वगैरह भी इजाज़त से मुशर्रफ़ हो चुके हैं। और जो काम उनके सुपुर्द किया गया है कर रहे है। शेख़ इमाम अली साहब साकिन कुम्हीया व शेख़ क़ुतुब उद्दीन साहब मरहूम डेंगवि यह भी मुरीद व मजाज़ है। जाहरी व बातनी नेमतों से सरफ़राज़ हैं।

वाक़ियात बाद अज़ वफ़ात

हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस चिश्ती रहमत उल्लाह अलैह के विसाल के बाद ख़ानक़ाह के नज़्म व नुस्क़ के मुताल्लिक़ जो अहम वाक़ियात ज़ाहिर हुए उनको रौशनी में लाना चाहता हूँ ताके माज़ी से हाल की इस्लाहात का मवाज़ना किया जा सके। उसके दोश बदोश मुरीदीन व मुतावस्सिलिन की जानेसारियो और वफ़ा दारियों का भी मुक़ाबला किया जा सके। शाह इदरीस साहब के विसाल के बाद कम व बेश 4 साल तक इज़राये फैज़ न हो सका ख़ानकाह के दरवाज़े वारिद व सादिर के लिए खुले हुए थे फिर भी हूं का आलम था। मतवाले रुहानी रास्ते की तलाश में नाकाम फिर रहे थे। शराबे मोहब्बत के मतवाले साक़ि गुलफ़ाम की जुसतजु में अज़ खुद रफ़ता हो हो कर गिर रहे थे। बाब मैकदह अगरचे वा था मगर वहा क्या धरा था। ना बादऐ साफ़ि था ना बादए साफ़ि का पिलाने वाला। नौबत बा इँ जा रसिद तो ख़ुदा नाख़ुदा बना और इस डूबती हुयी कशती को साहिले नेजात तक पहुँचा दिया। बक़ौल शाएर “मर्दे अज़ ग़ैब बरॉं आएद व कोरे बकन्द” (एक मर्द ग़ैब से बाहर आया और काम अन्जाम दिया) शाह इदरीस साहब के मुमताज़ ख़लीफ़ा शाह अबदुल रहमान मुरादाबादी ने सब से पहले यह दर्द अपने दिल में महसूस किया और ख़ुदा का नाम लेकर दानापूर ख़ानकाह के एहराम सफ़र बान्धा क़िबला हाजात व काबए मुरादात हज़रत वालिद माजिद

(हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मोहसिन दानापुरी रहमत उल्लह अलैह) अम्मे फैजहुम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और कुम्हीया तशरीफ़ ले जाने के लिए बेहद ज़ोर दिया। बिल आख़िर शाह अबदुल रहमान साहब के हज़रत किबला व काबा (हज़रत सय्यद शाह मोहसिन दानापुरी; कुम्हीया तशरीफ़ ले गये। मुतवस्सिलीन ख़ानकाह ख़िदमत में हाज़िर होते रहे। सब लोगों ने अर्ज़ किया के हुज़ूर अब यहीं क़्याम फ़रमाऐं हम लोगों की सरपरसति करते हुए ख़ानकाह का इन्तेज़ाम फरमाऐं। इरशाद फ़रमाया के बेशक यह काम मेरा है और फ़क़ीर इस ख़िदमत के लिए तैयार है मगर सरे दस्त यहाँ मेरा मुसतक़िल क़्याम दुशवार है। दानापुर ख़ानकाह सज्जादिया अबुल ओलाइया पहुँच कर इस ख़िदमत को अनजाम दूँगा। और जिस क़दर जल्द मुमकिन होगा ख़ानकाह की ज़ाहरी व बातनी तरक़्क़ि का माक़ूल इन्तेज़ाम करूँगा।

कुम्हीया से वापसी के बाद मुझसे (हज़रत शाह ज़फ़र सज्जाद दानापुरी) इरशाद फ़रमाया के जिस तरह ख़ानकाह दानापुर की देख़ भाल का यह फ़क़ीर जिम्मेवार है। उसी तरह कुम्हीया ख़ानकाह की ज़ारो नज़ार हालत देख कर दिल बेक़रार है। अब तुम ख़ुदा का नाम लेकर कुम्हीया जाओ। और मुतवस्सिलीन ख़ानकाह को इत्तेफ़ाक़ व यकजहति का सबक़ पढ़ाओ। मुखलिसीन तो तुम्हारा ख़ैर मक़दम करेंगे अपनी आँखे बिछाएगें। मुनाफक़ीन जो हर क़ौम में होते है तुम्हारी राह में रोड़े अटकाऐंगे उस वक़्त अपने दादा क़िबला मोहतरम हज़रत अल्लामह शाह अकबर दानापुरी रह० अ० का यह शेर याद रखना।

“अकबर ना जाए हाथ से सरे रिशतऐ ख़्याल
देख अपने काम से तू लगा रह जुदा ना हो”

वह दर अन्दाज़िया करेगें। करने देना लेकिन तुम अपने काम से लगे रहना। सारे मुख़ालफ़ीन ख़ुद बा ख़ुद रफ़ता-रफ़ता तुम्हारे ग़ुलाम हो जाएगें। सुनो और गोश दिल सुनो। बाक़ि बिल्लाह हाज़ी शाह अबदुल्लाह अकबरी साहब रहमत उल्लाह अलैह जब आस्ताना से ख़ानकाह साजिदि दानापुर की ख़िदमत के लिऐ मामूर हो कर रौनक़ अफ़रोज़ इलाहाबाद हुए तो जाँ निसारों ने नारऐ मुसर्रत बलन्द किया शाद हुऐ। मुख़ालफ़ीन ने कीनऐ देरीना का इज़हार किया बरबाद हुऐ। इसी तरह यही सूरत शाह अबदुल्लाह अकबरी साहब के विसाल के बाद पेश आई यानी शैतान ने मुनाफेक़ीन को फ़ितना व फ़साद की झलक दिख़लाई। ख़ानकाह पर क़बज़ऐ मुख़ालफ़ाना के मनसूबे बाधे गये मगर आनन फ़ानन सारे मंसूबे ख़ाक में मिला दिये गये, यानी मैंने बिरादर तरीक़त शाह अबदुल हलीम अकबरी साहब अबुल उलायी को अपना ख़लीफ़ा बनाकर हाजी शाह अबदुल्लाह अकबरी साहब का जानशीन नामज़द कर दिया। उन नाम व नमूद के बन्दो की झोलियो को ख़ाक मुज़ल्लत से भी दिया ख़ुदा के फ़ज़लो करम से जुमला बिरादरान तरीक़त व अज़िज़ान क़लबि सब के सब मेरे जाँ निसार हैं। और मुरीदीन व मुतवस्सिलीन हाजी शाह अबदुल्लाह अक़बरी साहब व शाह अबदुल हलीम अकबरी साहब मेरे जाँ निसार व बहिख़ा है। इन वाक़ियात पर ध्यान रखो और ख़ुदा का नाम लेकर आगे बढ़ो। फ़ज़ल व करम ख़ुदावन्दी तुम्हारे साथ है। पीराने सिलसिला का तुम्हारे सर पर हाथ है। यह वह दरसे इबरत था जिसने दिल की आँखें ख़ोल दीं। आँखे सही माने में मशअले हिदायत बनी ख़ुदा का नाम लेकर क़दम आगे बढ़ाया। “लिया अल्लाह का नाम और लपेटा बिस्तर।” अलग़रज़ कुम्हीया पहुँचा। ख़ानकाह में दाख़िल हुआ मुख़लिसीन ने हाथो हाथ लिया। अपनी मेहमान नवाज़ियो से

मेरा दिल बढ़ाया। लेकिन मुख़ालफ़ीन को मेरा आना नागवार गुज़रा। अतराफ़ व जवानिब की ख़ाक उड़ाने लगे। मवाफ़िक़ को मुख़ालिफ़ बनाने लगे ना गहाँ इसी गुबार में उम्मीद की बिजलियाँ चमकने लगीं। मुँह बन्द कलियाँ फूल बनने के लिए चटख़ने लगीं। रफता-रफता मुख़ालफ़ीन अपने होने लगे मुनाफ़ेक़ीन ने दस्त तलब बढ़ाया वफ़ादार बने। अलहमदुलिल्लाह अब जाँ निसारों की जमाअत बरसरे इक़्तेदार है और मेरे मुख़ालेफ़ीन का गिरोह शामते आमाल में गिरफ़तार है। सच हैं।

"कलजुग नहीं करजुग है यह याँ दिन को दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे और उस हाथ ले।"

उर्स

दुनियाए फ़ानि के तग़युरात अगरचे हैरत अनग़ेज़ और इबरत ख़ेज़ है मगर बनदगाने नाम नमुद के लिए यही इनक़ेलाब वलवलह अंग़ेज है दुनिया की हुकुमत की चमक और रंगीनी पर जान देने वाले ज़िन्दगी को अज़ीज़ रखते है मगर यह ना आक़बत अन्देश मौत के नाम से डरते है।

"ज़िन्दगी मौत है उसके तो है लाखों सामाँ
मौत जीना है उसका ही नहीं कोई सामाँ"

मगर एक जमाअत अल्लाह वालों की है जिनको हम अपनी इस्तलाह में औलिया अल्लाह कहते है जो दुनियाँ को रेगिस्तान और आदमी को पानी का बुलबुला समझते है। दुनिया उनके लिये क़ैद ख़ाना सफ़रे आख़रत महबूब से मिलने का बहाना है। दुनियावी

ज़िन्दगी उनके लिए मुजसमय आफ़ात है मौत उनके लिए पैग़ामे हयात है। इस लिए औलिया अल्लाह के इन्तेक़ाल को हम अपनी इस्तलाह में विसाल कहते है और तारीखें विसाल की मुखलेसाना पेश कशों और इसाले सवाब की सरगर्मियों को लफ़्ज उर्स से ताबीर करते है। मुतावस्सिलीन व मोतक़ादीन मुरादे लेकर आते है और साहबे उर्स के वसीलह से जो ख़ुदा से मांगते है वह पाते हैं। एक अल्लाह का बन्दह साहबे मज़ार रूह मुबारक से यह समझ कर अर्ज़ मारूज़ (हाजत पेश करना) करता है के इस मुक़ामे मुताबर्रक़ में रहमते हक़ का नज़ूल है। और इस को मालूम है के "होना लका दआ ज़करिया रब्बहु" उसी जगह ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अपने रब को पुकारा। का नारा हल मिम मज़ीद (और कुछ है?) दरबार ख़ुदावन्दी में मक़बूल है। बिला शुभह यह माँगने वाला हज़रत सय्यदना ज़करिया अलैहिस्सलाम की तरह महरूम नहीं फिरा बल्के हज़रत यहिया जैसा फ़रज़न्द दिलबन्द पाकर सजदए शुक्र बजा लाता है। इसी तरह हम बुर्ज़ुगान दीन के आस्ताने पर हाज़िर होकर उनके तवस्सुल से दरबार ख़ुदावन्दी में अर्ज़ मारूज करते है और वह बन्देगान मक़बूल उसी हाजत पूरी करने वाला के हुक़्म से हमारे दामने मुराद को गौहरे मक़सूद से भरते हैं।

"मर्दाने ख़ुदा ख़ुदा नाबाशन्द
लेकिन ज़े ख़ुदा जुदा नाबाशन्द"

बिला शुभह इसी नियत और इसी अक़ीदह से हज़रत शाह मुहम्मद इदरीस चिश्ती अबुल ओलायी साजदि के आस्तानह के ख़ादिम व मुजाविर फिलहाल बिलाल शाह है यह भी हज़रत शाह साहब के मुरीद है अगरचे पढ़े लिखे नहीं हैं लेकिन साहबे हाल है।

आस्तानह पर ज़ाएरीन और हाजत मन्दो का आना जाना रहता है कभी मुक़ददरात का बोल बाला होता है कभी तक़दीर से बालातर तदबीर रहती है मुतवस्सिलीन ख़ानकाहे इदरीसियह नविशतऐ तक़दीर को मिटाने के लिए तदबीर के साथ रूहानियत का रंग जमाने के लिए 11 जमादिस्सानी को ख़ानक़ाह में मुजतमा हो कर तरह तरह से ईसाल सवाब का सामान करते हैं। ख़ुलफ़ा व मुरीदीन नेमाऐ बातनिया से फैज़याब हो कर ताज़ा अपना इमान करते है। कसरत अज़दहाम से मेला लग जाता है और सब के लिए इस ख़ादिम (हज़रत सय्यद शाह ज़फर सज्जाद दानापुरी) की तरफ़ से खाने पीने का इन्तेज़ाम काफ़ी किया जाता है। मुबारक है वह मुरीदीन जो शैख़ की रूहानियत से माला माल हो रहे है बदनसीब है वह मुतावस्सिलीन जो इस नादिर मौक़ा को खो रहे है। मैं उन लोगो का शुक्र गुज़ार हूँ जो इस कारख़ैर के अंजाम व इनसराम में मेरा हाथ बटाते है और उनका भी दुआ गो हूँ जो इस कारख़ैर के मौक़ा पर आँखे चुराते है। या अल्लाह जो मेरे दोस्त है उनको मेरा सच्चा दोस्त बना दे। और जो मुझ से दूर है उदके दिलो में मेरी हमर्ददी का जज़बा अता फ़रमा दे। आमीन या रब्बल आलमीन।

"क़ादिरा क़ुदरत तू दारी बर कमाल
अन्ता रब्बी अन्ता हस्बी ज़ुल जलाल"

(ऐ क़ादिर तु क़ुदरत रखता है, तु मेरा रब है तु मेरा निगहबान है।)

तारीख़ :– 6 जमादिउल आख़िर 1359 हिजरी
(1938 ई०)

क़ता तारीख़

अज़ नतिजए फ़िक्र जनाब सय्यद शाह अबदुल हलीम साहब अकबरी अबुल ओलाई हिलसवी अज़िमाबादी।

सह मुक़द्दस किताब है बेशक — है यह लारैब तोहफ़तुल अबरार
है जनाबे ज़फ़र की यह तसनीफ़ — है उनहि का यह गुलशने बे ख़ार
है बुर्ज़ुगों का तज़किरा इस में — यह रिसाला है मतलाअुल अनवार
है सरापा बहार यह गुलशन — सफ़ह सफ़ह है ग़ैरते गुलज़ार
तबा मौज़ुँ ने साल तबा हलीम — फ़िक्र करके लिखा यह आख़िर कार

है दुआईया मिसरए तारीख़
हो पसंद दीदह गुलशने बे ख़ार

1359 हिजरी

विषय–सूची